# भवप्रीतानन्द ओझा

रामकिशोर झा 'विभाकर'

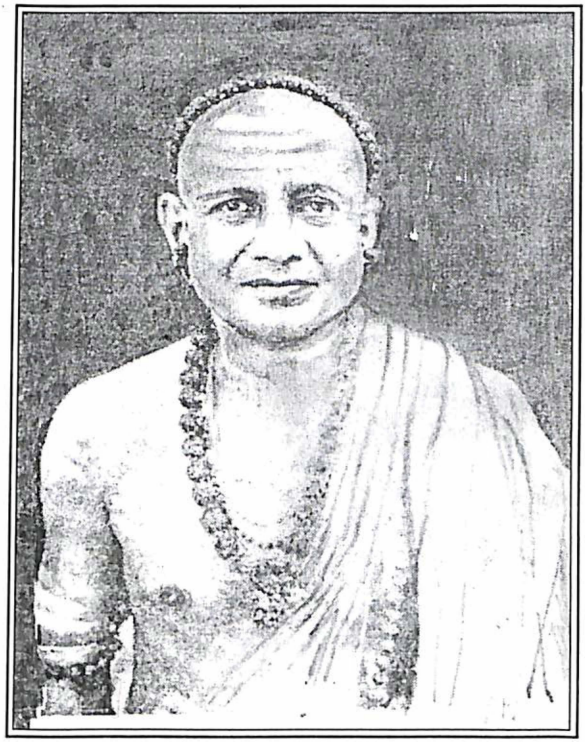

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
817.231 092
Oj 2 J

Oj 2 J

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक राजसभा ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका-लोकनिक नीचामे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपवद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

भारतीय साहित्य के निर्माता

# भवप्रीतानन्द ओझा

लेखक

रामकिशोर झा 'विभाकर'

साहित्य अकादेमी

**Bhavpritanand Ojha :** Monograph on the modern Maithili poet in Maithili by Ramkishore Jha 'Vibhakar', Sahitya Akademi, New Delhi (2002), Rs. 25.00

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 2002 ई.

Library IIAS, Shimla
MT 817.231 092 Oj 2 J
00117119

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : स्वाति, मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई 400 014
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए/44 एक्स,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
सीआईटी कैम्पस, टी.टी.आई. पोस्ट, तरामणि, चेन्नई 600113
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर मार्ग, बंगलौर-560 001

MT
817.231092
Oj 2 J

ISBN 81-260-1288-9

117119
9.12.04

मूल्य : पच्चीस टका

शब्द संयोजक एवं मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

# विषय-सूची


1. वंश-परम्परा 7
2. व्यक्तित्व 30
3. मठाधीश (सरदार पंडा) 43
4. कृतित्व 48
5. झूमर-घैरा की थिक? 57
6. भवप्रीता-पद्यावली (कृष्ण-लीला) 62
7. काव्य-समीक्षा 77
8. परिशिष्ट
   I. आवश्यक ज्ञातव्य तथ्य पुंज 89
   II. सहायक परिचय 93

# 1

# वंश-परम्परा

सदुपाध्याय स्व. भवप्रीतानन्द ओझा, वर्तमान शताव्दीक एकगोट शीर्षस्थानीय महाकवि'क रूप में प्रख्यात व्यक्ति छला। ई माननीय महाकवि, द्वादशज्योतिर्लिंगमे परिपठित श्री श्री 1008 बावा वैद्यनाथेश्वर शिवलिंग'क प्रधान पुजारी ओ मठाधीश रहथि। तएँसँ, देशक आम जनताक बीच, ई, सरदार पण्डा'क अभिधाने विश्रुत रहथि। ओनातँ, मैथिली साहित्य'क आधुनिक कालकेँ, इतिहासकार लोकनि, चन्दा झा सँ आरब्ध भेल बुझैत छथि; मुदा, उक्त महाकविक' पूर्व पुरुषा लोकनि, सेहो दक्षिणाञ्चलीय मिथिलाभाषा में अनेकानेक पद्य-रचना कऽ गेल रहथिन। हुनका सभ'क जीवनावधि जँ स्व. चन्दा झा सँ प्राक्कालिक नहिओ रहल होनु तँ सम-सामयिक जरूर रहल छलनि। यतः, दक्षिणाञ्चलीय मैथिली साहित्य-क संकलन-कार्य अद्यावधि सम्पन्न नहि भऽ सकल अछि—तएँ, तत्सम्बन्धी इतिहासालोचन-प्रसंग उत्थापित करब, ऐठाम कोनो युक्तिसंगत नहि जँचैछ। परिचेय भवप्रीतानन्द ओझा दक्षिण ओ पूर्वाञ्चलीय मैथिली साहित्य'क 'लोककवि' (अर्थात् माटि'क महाकवि) रहथि—ततबा हिनक रचना ओ ख्याति-विस्तारकेँ ध्यानमे राखि, निःसंदिग्ध भावेँ सकारल जा' सकैछ। तै भूमिखण्ड'क, ई. वृहत्तर मानव-समाज'क प्रतिनिधित्व करैत छला। उक्त सदुपाध्याय जी'क वाणी जहिना धार्मिक क्षेत्रमे शास्त्र-वाक्य-रूपमे समादृत होइत छल, तहिना हिनक विरचित रचना, आम जनतामे लोकवाणी अर्थात् सामान्यलोक'क हृदय-विनिःसृत प्रतिनिधि अभिव्यक्ति-तुल्य लोकरंजक भऽ जाइत छल। लगैत अछि जेना ई, साधारण सं साधारण मानव'क अन्तरात्मा'क कथितव्यकेँ वाणी'क जामा पहिरेबा के खातिरे कोनो भाषा'क लेखन-लेल उद्यत होइत रहथि। ई संस्कृत, बँगला, हिन्दी तथा मैथिली भाषा सभ'क अभिव्यक्ति देवामे क्षम छलाह।

श्रीमान् सदुपाध्याय जी'क प्रथम-प्रथम साक्षात्कार वर्तमान लेखककेँ, लगभग 35 वर्ष पूर्व भेल छलनि। तै समयमे, श्रीयुत सदुपाध्याय जी सम्भवतः 77 वा 78 वर्ष'क निज जीवनायु जीवि चुकल रहथि। लेखक तँ हुनक तै स्वरूपकेँ विलोकि, यैह अनुभव केने रहथि जेना स्वयं सदाशिव वैद्यनाथ नराकृति ग्रहण कऽ लेने होथि। पुरुष-पुङ्गव श्री श्री सरदार पण्डाजीकेँ, प्रथम साक्षात्कारमे, किओगोटा तद्रूपके अनुभव करैत छल; ऐ रूप'क संस्मृति, पंक्ति'क लेखकों, अनेकानेक व्यक्ति'क आत्मानुभूति'क

पृष्ठाधारमे कएल अछि। वास्तवमे, शिवमहापुराण'क विद्येश्वर-संहिता अध्याय 25 मे कहल गेल अछि—

त्रिपुण्ड्रेण च संयुक्तं रुद्राक्षाविलसाङ्गकम्।
मृत्युञ्जयं जपन्तं च दृष्ट्वा रुद्रफलं लभेत्॥60॥

तात्पर्य जिनका ललाट मे त्रिपुण्ड्र लागल होनि आओर समग्र अंग, रुद्राक्षविभूषित होनि तथा जे मृत्युञ्जय-मंत्र'क जप कऽ रहल होथि; तनिक दर्शन केलासँ साक्षात् रुद्र'क दर्शन-जन्य प्रतिफल प्राप्त हो। हमरा बुझनें, उक्त श्लोक'क साकार विग्रह, वर्तमान सरदार पण्डाजीवे, ऐ कराल कलिकालमे, अनुभूत होइत छला।

पुनः उक्त महापुराणमे, आगाँ कहल गेल अछि जे तेहन विग्रही (शरीरवान्) जे व्यक्ति होइत छथि ओ निश्चय महत्तम साधक होइत छथि—तएँ, हे यमदूतलोकनि! हुनकर पूजा अहाँलोकनि करियनि। जेना—

रुद्राक्षमेकं शिरसा विभर्त्ति
तथा त्रिपुण्ड्रं च ललाट मध्ये।
पञ्चाक्षरं ये हि जपन्ति मंत्रं
पूज्या भवद्भिः खलु ते हि साधवः॥51॥

कहबा'क अभिप्राय श्रीमान् सदुपाध्याय जी, निज शिवाराधना'क द्वारा स्वयं शिवाकार भऽ गेल छला। एतदर्थ, सामान्य लोक, हिनका श्री श्री 1008 वैद्यनाथेश्वर शिव'क जंगम्यमान साक्षात् प्रतिमूर्ति सेहो मानैत छलनि।

## स्व. चन्द्रमणि ओझा

अनुश्रुत अछि जे सदुपाध्याय जी'क प्राक्तन पुरुष किओ चन्द्रमणि ओझा मिथिलासँ स्वकीया नवोढ़ा पत्नी'क संग, कामरु-लए, बाबा वैद्यनाथधाम पहुँचल रहथिन। हुनका, बाबा वैद्यनाथ स्वप्न-देलथिन—जे तों अहीठाम सरदार पण्डा भऽकए रहऽ। कहाबत अछि जे स्वप्नमे, उक्त चन्द्रमणि ओझा बाबासँ ऐ पद-पर कार्य केनिहार'क असौविध्य निवेदन केलथिन। मुदा, बाबा वैद्यनाथ जनौलथिन—जे तोहर पत्नी गर्भवती छथुन; हुनकासँ 'रत्नपाणि' नामक पुत्ररत्न प्राप्त हेतौह—एवं ई वंश-परम्परा निरन्तर प्रवर्धमान रहतौह। केवल, ज्येष्ठ पुत्रकेँ सरदार पण्डागिरि'क अधिकार दिहऽ—ऐ क्रममे, व्यतिक्रम भेला उत्तरे, तोरा कुलमे, कोनो दोष आवि सकैत छौह—अन्यथा, सभकिछु बढ़िञे रहतौह। तहियासँ तही वंश'क ज्येष्ठ संतान, ऐ सरदार पण्डा'क आस्पदकेँ वर्तमान श्रीमान् भवप्रीतानन्द ओझा धरि सुशोभित करैत आएल छलथिन।

मिथिलासँ हिनका लोकनिकेँ, ऐ अंग देशीय क्षेत्रमे, पदार्पण-करबा'क काल, लगभग तीन शतक पूर्व अनुमित होइछ। श्रीमान् चन्द्रमणि ओझासँ लए भवप्रीतानन्द ओझा—पर्यन्त 12, गोट ओझा-खान्दानी, ऐ सरदार पण्डा'क पदकेँ अलंकृत केने

छला। प्रत्येक व्यक्ति जँ 25 वर्ष'क कालखण्डीय मानि लेल जाथि—तँ यैह तीन सय वर्ष'क समयावधि आकलित होइछ।

श्री भवप्रीतानन्द जी महाराज, मिथिला'क पंजी-व्यवस्था'क अनुसार भरद्वाज-गोत्रीय 'बेलौंचे गढ़' मूलक प्रतिष्ठित मैथिल ब्राह्मण-कुल'क सन्तान रहथि। *स्कन्दपुराण* (ब्रह्मखण्ड, अध्याय 8, श्लोक 70 सँ 72) मे कहल गेल अछि जे भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण, पंच प्रवरवान् होइत छथि। ऐ गोत्रमे समुत्पन्न विप्र-समुदाय, प्रायः धनवान्, कल्याणकर, वस्त्र ओ विभूषण इत्यादिसँ समन्वित, द्विजभक्तिमे आस्थावान्, ब्राह्मण-भोजन करौनिहार तथा सभ क्यौ धर्मनिष्ठ मानव होइत छथि। हिनका लोकनि'क पाँच प्रवरमे भरद्वाज, अंगिरा, वृहस्पति, गार्ग्य ओ सैन्य एतवा ऋषिगण परिपठित भेल छथिन। मुदा, मिथिला'क भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मणलोकनिमे, केवल तीन गोट प्रवर (भरद्वाज, बृहस्पति आ अङ्गिराटा) उपलब्ध होइछ।

भरद्वाजस गोत्रेया प्रवरैः पञ्चभिर्युताः।
आंगिरसो बार्हस्पत्यो भारद्वाजस्तु सैन्य सः॥70॥

गार्ग्यश्चैवेति विज्ञेयाः प्रवराः पञ्च एव च।
अस्मिन् गोत्रे च ये जाता वाड़वा धनिनः शुभाः॥71॥

वस्त्रालंकरणोपेता द्विजभक्ति परायणाः।
ब्रह्मभोजपराः सर्वे सर्वधर्म-परायणाः॥72॥

ओना तँ, भरद्वाज गोत्रीय मैथिल ब्राह्मण प्रायशः नौ-दश मूलक (जेना, एकहरा, बेलौंचा, कनिगाम, सोइनी, धौरी, भुतहरी, गोढरा, डोमकटरिये, सोइनवार, बरबे इत्यादि) उपलब्ध होइत छथि परंच, ताहूसभ मे एकहड़े कन्हौली (महाकवि लोचन झा) ओ बेलौंचेमे (भरतपुर'क बेलौंचे सकरी मितराम झा यतः, ओ उत्तमोत्तम कुल'क दौहित्रकेँ वसौने रहथिः प्रशस्त रहथि) आओर बेलौंचे गढ़ (जाहि वंशमे शैलजानन्द, उमेशानन्द किंवा स्वयं भवप्रीतानन्द) उक्त दूनू मूलं'क मैथिल भूसुर-वंश प्रचुर प्रसिद्ध रहल अछि।

## म.म. वर्धमान उपाध्याय

मिथिलामे, उक्त भरद्वाज गोत्र'क सर्वाधिक प्रसिद्ध ओ पण्डित पुरुष श्रीमान् वर्धमान उपाध्याय भऽ गेल छथि। ई प्रख्यात मनीषी 'नारी-भदौन' गाममे निवास करैत रहथि; जे निज जीवनावधि'क अन्तिम कालखण्डमे, उक्त गामसँ उपटिकएं पचही गाममे स्वीय आवास स्थिर केने रहथि। हिनक पिताक नाम 'भवेश' ओ माता राम'क नाम 'गौरी' छलनि। हिनको मूलग्राम बेलौंचे रहनि।

जखन मिथिला देश पर कर्णाट-वीर राजा नान्यदेव (1098-1133 ई.) प्रशासन चलवैत रहथि, पं. बर्धमान उपाध्याय, हुनक पुत्र गंगदेश ओ मल्लदेव'क सम-कालमे विद्यमान छला। वर्धमान उपाध्याय बहुत बुद्धिमान ओ कल्पनाशील पण्डित छला।

मिथिलामे, ओना एकगोट आओरो बर्धमान उपाध्याय भऽ गेल छथि जे सम्भवतः सरिसवे छादन (शाण्डिल्य) मूल'क जगद्गुरु श्रीमान् गङ्गेश उपाध्याय (*न्याय चिन्तामणि*कार)'क पुत्र रहथि। मुदा, वेलौंचे मूल'क उक्त वर्धमान उपाध्याय'क समय तै गंगेश उपाध्याय'क समकाल वा किंचित् परवर्त्ती ज्ञापित कएल जाइछ।

किछु इतिहासकार इहो कहैत छथि जे बेलौंचे मूल'क वर्धमान उपाध्याय गङ्गदेव'क भ्राता मल्लदेव'क आश्रित नहि अपितु गंगदेव'क पौत्र रामसिंहदेव'क समयमे छला। किएक तँ, उक्त उपाध्याय जी स्वयं *स्मृति तत्त्वविवेक* पुस्तक'क अन्तभागमे लिखने छथि जे

दैनन्दिनमाचारं श्राद्धं शुद्धिं विवादपदम्।
प्रायः प्रत्यहमेतत्प्राज्ञो जिज्ञासते सर्वः॥1॥

तस्माच्चतुर्भिरेभिः कुसुमैरिव गुम्फितो गुणोपहितैः।
मालेवैष निवन्धो रमापतेः कण्ठभूषणं भवतु॥2॥

मुदा, ऐठाम बहुतो गवेपक'क कहव छनि जे ई 'रमापति उपाध्याय जी'क शिष्य रहथिन जनिके पुत्र विष्णुपति भेल रहथि जे *न्यायचिन्तामणि* पुस्तक'क 'तत्त्वदीपन' टीका लिखने छला।

ई वर्धमान उपाध्याय नामक राजधर्माधिकरणिक (धर्मशास्त्र-प्रमुख) व्यक्ति मिथिला देशमे बहुत विख्यात पुरुप भऽ गेल छथि। सन् 1281 साल फसली'क नामी दुर्भिक्ष'क कालावधिमे 'आसी' गाम'क एकगोट 'मठियाही' पोखरि'क जीर्णोद्धार कराओल जाइत छल। ओइ पोखरि'क अंगनै मे, एकगोट विष्णु-मंदिर तथा ध्वज-यष्टि छल। कालक्रमें ई सभ माटि'क तरमे, दवि गेल रहए। मुदा, तै ध्वजयष्टिमे गरुड़'क मूर्ति सेहो स्थापित रहैक। ओइ पोखरि सँ एकगोट शिलास्तम्भ सेहो बहार भेल जाहिपर लीखल छलैक—

जातो वंशे विल्वपञ्चाभिधाने धर्माध्यक्षो वर्धमानो भवेशात्।
देवस्याग्रे देवयष्टिध्वजाग्रारूढं कृत्वाऽस्थापयद्वैनतेयम्॥

उपाध्याय जी उक्त पोखरि'क यज्ञ करबौने रहथि एवं ताहिलेल 'तड़ागामृतलता' नामक पुस्तक सेहो वनौने रहथि यदनुरूपे तै पोखरि'क यज्ञ करबौने रहथि। उक्त उपाध्याय जी'क बनाओल *जलाशय वास्तुविधि* नामक एकगोट पृथक् पुस्तक छल जकर प्रतिलिपि म.म. परमेश्वर झा'क प्रपितामह महावैयाकरण रामझा केने रहथि जे वर्तमान कालधरि तरौनी गाममे विद्यमान छल। ओना, *स्मृति-विवेक शान्तिपौष्टिक विवेक* प्रभृति बहुतो पुस्तक श्रीमान् उपाध्याय जी द्वारा विरचित भेल छल; मुदा, ताहूसभ ग्रन्थ-समूहमे *दण्ड-विवेक* नामक ग्रन्थ'क चर्चा विद्वत्समाज ओ राजनीति क्षेत्रमे, यत्र-तत्र प्रचुर भेल अछि। उक्त पुस्तक'क अन्तमे, ग्रन्थकार लिखने छथि जे—

श्री विल्वपञ्चान्वयसंभवेन श्रीमद्भवेशस्य तनूद्भवेन।
श्री वर्धमानेन विदेहभर्तुः कृते कृतो दण्डविधौ विवेकः॥1॥

परंतु, ऐ बेलौंचे वंशक मिथिला देशमे प्रसिद्धिक एकटा अपरो प्रभूत गरिमामय इतिहास अछि। कहल जाइछ; अही वर्धमान पण्डितराज'क पुत्री-द्वय 'चामुण्डा' भगवती भऽ गेल छथिन। बंग-विजयसँ प्रहर्षित गयासुद्दीन नामक नवाब जखन ससैन्य 'तिरहुत' होइत दिल्ली फिरल जाइत छला तँ सम्भवतः हुनके सैनिक दल'क कोनो टुकड़ी उपाध्याय जी'क युगल पुत्रीकेँ, कोनो वाटिकामे फूल-लोढ़ैत देखि लेलक। हिनका लोकनि'क सौन्दर्यसँ मर्माहत से सैनिक सभ, हिनका लोकनिक 'शील-भ्रंश' करक प्रयत्न केलक। ई लोकनि, तत्काल विदीर्णा वसुन्धरामे समा गेली। श्रीमान् पण्डित जी'क अभिशापसँ, ओ सैन्य-समूह तत्काल आन्हर भए मरि-हरि जाइ गेल। वैह गयासुद्दीन नवाब, तत्कालीन मिथिला-नरेश राजा नरसिंहदेवकेँ वंग-युद्धमे सहायता नहि देबा'क अभियोगमे, 'नज़रबंद' (नेत्र-निरुद्ध) कऽ कए दिल्ली सेहो लऽ गेल छलनि। परन्तु, तै पचही 'ग्राममे, ओ भगिनीद्वय अद्यावधि 'चामुण्डा' भगवती-रूप मे समर्चिता-बंदिता भऽ रहली अछि। उक्त भगवती'क सम्यक् उपासनासँ शताधिक मानव-समुदाय अभीष्टवर'क उपलब्धि कऽ चुकल छथि। तै 'चामुण्डा' स्थानमे, आधुनिक ग्राम्य-जन-समूह बहुत भव्य मन्दिर बनवा देलथिन अछि एवं प्रतिवर्ष, तैठाम ओलोकनि नीक समारोह-सम्मेलन करबै जाइत छथि। सम्भवतः श्रीमान् उपाध्याय जी'क किछु वंशधर लोकनि, तै गाममे, अद्यपर्यन्त निवास कऽ रहलथिन अछि। ओलोकनि प्रशासकीय पदो पर नीक प्रतिष्ठा अर्जित केने छथि।

## म. म. कविवर लोचन झा

भरद्वाज-वंश'क दोसर पुरुषरत्न रहथि महामहोपाध्याय कविवर लोचन झा। ई एकहरे (एक लाङ्गलीय) कन्हौली, भरद्वाज गोत्र'क मैथिल ब्राह्मण रहथि। मुदा, मिथिला'क भरद्वाजगोत्रीय ब्राह्मण-समुदायमे, अहू महाकवि'क नाम, पूर्ण श्रद्धा ओ समादर'क भावनासँ लेल जाइत छनि। खास कऽकए भारतीय संगीत क्षेत्रमे, मिथिला'क कतबा गरिमापूर्ण स्थान छलैकः से अही लेखक'क *रागतरंगिणी* नामक पुस्तकसँ प्रत्यक्षतः ज्ञात होइछ।

महाकवि लोचन झा'क समय, ख्रिष्टाब्द'क सत्रहम शताब्दी मानल जाइत अछि। यतः, ई महाराजा नरपति ठाकुर'क दरबारमे रहि *रागतरंगिणी* पुस्तक लिखने रहथि तएँ 1690 ई.सँ 1901 ई. धरि हिनको कालावधि, मोटामोटी लोक मानैत छथि। कविवर लोचन झा'क सम्बन्धमे, मिथिलाभाषामय इतिहास-लिखनिहार म. म. मुकुन्द झा बख्शी लिखने छथि जे 'उक्त श्रीमान् (नरपति ठाकुर) केँ, काव्य'क प्रेम सविशेष देखि, कवि-समाज हिनका दरबारमे बहुत काल जुटैत छल जकर सत्कार होइत देखि 'लोचन' नामक एक कवि *रागतरंगिणी* नामक ग्रन्थ हिनका नाम पर बनाओल। जे

उत्तमोत्तम भेलासँ सर्वमान्य भेल। ओ कवि पूर्ण पुरस्कार पाओल। ग्रन्थ ओ सम्प्रति उपलब्ध अछि।'

कविवर लोचन झा'क हाथ सँ लिपिबद्ध श्रीहर्ष'क *नैषधमहाकाव्य* सेहो दरभंगा, राज-पुस्तकालयमे, एकगोट उपलब्ध होइछ जकर अन्तमे—"उद्यानग्राम वास्तव्य एक लाङ्गलवंशीयः श्री लोचन शर्म्मा, शाके 1603" तन्मूलक वाक्य सेहो लीखल प्राप्त अछि। अस्तु, ऐसँ बहुतो विद्वान'क अनुमान छनि जे पन्द्रहमशकाब्द के अन्तिम भागमे, उक्त *रागतरंगिणी*कार जरूर भेल छल हेताह।

मिथिला-संगीत कोन रूपें प्रसरित भेल तकर महाकवि लोचन, बहुत समीचीन इतिहास प्रस्तुत केने छथि। *रागतरंगिणी* मे लीखल अछि जे—प्राचीन समयमे भवभूति नामक ब्राह्मण, सिद्ध पुरुष छला; ओ नवीन स्वर (ध्वनि) मे, गीत-रचना कएल करथि। तै समयमे, पश्चिमसँ 'सुमति' नामक कायस्थ पहुँचि, हुनकासँ सभकला सिखलनि। पुनः, राज-दरबारमे, तकरा प्रस्तुत केलनि। तएँ, हुनका कलावान् ओ कत्थक कहल गेलनि। हुनक सन्ततिसभमे, कतेको व्यक्ति 'मल्लिक' उपाधि धारण कएलनि। सुमति'क पुत्र उदय, तनिक पुत्र 'जयत' भेलाह हुनका सुकण्ठ बूझि महाराज शिवसिंह, कविवर विद्यापति'क सन्निकट शिक्षार्थ समर्पित कएल। कवि कोकिल विद्यापति, हुनक निमित्त नव-नव स्वरमे, नानाविध कल्पना-विमण्डित, संगीत सभ बना-बना देबए लगला। तैसभ'क प्रधान गायक राज-दरबारमे 'जयत'केँ बनाओल गेलनि। तै 'जयत'क पुत्र कृष्ण, निज पिते-जेकाँ प्रचुर देशी राग'क गान कएल करथि। हुनको पुत्र हरिहर मल्लिक भेल रहथि। तै हरिहर मल्लिककेँ खङ्ग राम, घनश्याम, कल्लीराम—तीनगोट पुत्र भेलथिन। उक्त पुत्रत्रय मे घनश्याम मल्लिक बहुत विशिष्ट गायक मानल गेला। घनश्यामकेँ तीन पुत्र भेलथिन—लक्ष्मीराम, राघवराम, टीकाराम। ई सभ गोटा देशी सम्प्रदाय'क गानमे पूर्ण प्रवीण होइत गेला। हिनके सभ'क निर्देशानुसार, कविवर लोचन शर्मा ओ महाराजा नरपति ठाकुर लोकनि, निजदेशमे तिरहुत राग-रागिणी सभ'क जोर-शोरसँ प्रचार-प्रसार करवौलनि।

उक्त महाकवि लोचन झा ओ हुनक *रागतरंगिणी* पुस्तक केर ततबे गरिमा नहि छैक। आधुनिक भारतीय संगीत'क जन्मदाता स्व. भातखण्डे महोदय; जखन प्राचीन ग्रन्थसभ'क गवेषणा प्रारम्भ केलनि; तँ *रागतरंगिणी* पुस्तक सेहो हुनका उपलब्ध भेलनि। ऐ पुस्तक के सम्बन्ध मे, अपन विचार प्रस्तुत करैत लिखने छला जे—'उत्तरी भारत में' संगीत'क इतिहास'क मुसलमान-कालमे, सूत्रबद्ध वर्णन करबा'क लेल सर्वप्रथम जाहि ग्रन्थ पर हमरा दृष्टिपात करए पडैत अछि ओ थिक लोचन कृत *रागतरंगिणी*-भातखण्डे-उत्तर भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास, पृ. 10।

उक्त *रागतरंगिणी* पुस्तक'क समीक्षक नै केवल देशी विद्वान् भेल छथि अपितु एकरा प्राप्त करबा'क कामना विदेशी मनीषी लोकनि सेहो रखैत छला। जेना—'किछुए दिन पूर्व मधुबनी'क भूतपूर्व मजिस्ट्रेट तथा विख्यात पुरातत्त्व-वेत्ता श्रीयुत ग्रियर्सन

साहेब, एक पत्र महाराजाधिराज मिथिलेश सर श्री 5, मान् कामेश्वर सिंह वहादुर के. सी. आई. ई.'क सेवामे पठौलैन्हि जाहिमे *रागतरंगिणी, प्राकृत लङ्केश्वर* तथा *प्राकृत-प्रकाश*—एहि तीनू ग्रन्थ'क याचना छलैन्हि। *रागतरंगिणीक* भूमिका (प्राक्कथन) राज पण्डित बलदेव मिश्र।

मिथिला किंवा विद्यापति-संगीत'क निमित्त, सरिपौं; ई एकगोट मान्य ग्रन्थ मानल गेल अछि। ऐमे तिरहुत-संगीत-समीक्षक कविवर लोचन झा नानाविध रागरागिनी'क वृहत् रूपे परिचय देने छथि। विद्यापति'क गीत कें, *रागतरंगिणीकार* रागानुरूप गुण'क अनुसार उदाहरण-रूपमे स्थान देने छथि। ऐ पुस्तक के सम्बन्धमे संगीत'क मान्य विद्वान् श्रीमान् एच.ए. पोपले के निम्नलिखित उक्ति, वस्तुतः, पूर्ण मननीय अछि—"*The Ragatarangini*, Composed by Lochan Kavi probably belongs to this period. The major portion of this (book) work is devoted to the discussion of a number of Songs by a poet named Vidyapati, who florished in the fifteenth century at the court of Raja Shiva Singh of Tirhut. The author also discribes the current musical theories of his day and groups the raga under twelve Thats or fundamental modes." (*The Music of India*, P. 16, H.A. Popley.)

## गंगा'क दक्षिण अंगक्षेत्रीय मैथिल

ओना, एतबा स्पष्टरूपें परिज्ञात भऽ जाइछ जे गंगा'क दक्षिण के ऐ अंग क्षेत्रमे, प्रभूत प्राचीनकालसँ मैथिल लोकनि निवास करैत रहला अछि मुदा, आदित्यसेन (672 ई.)'क जे शिलालेख (मंदार-पर्वत-सम्बन्धी) बाबा वैद्यनाथ'क मन्दिरसँ प्राप्त हाइछ तै मे स्पष्ट उल्लेख अछि जे ओ राजा (आदित्यसेन) नरसिंह भगवानूसँ सम्बद्ध, एकगोट कोनो संस्था संघटित करबौने छला जकर विधिवत प्रतिष्ठा ब्राह्मणेलोकनि'क हाथें सम्पन्न भेल छल। मन्दार-पर्वत पर नरसिंह भगवान्'क से गुफा-मन्दिर अद्यपर्यन्त विद्यमान अछि जकर प्रधान पुजेगरी मैथिल पण्डालोकनि छथि। ऐ मन्दिर पर किंवा ऐ क्षेत्रमे, मैथिल पण्डालोकनि'क अतिरिक्त दोसर कानो जाति'क लोक ने कहियो पण्डा रहला अछि आओर ने हुनका लोकनि'क कोनो आधिपत्य रहलनिहे। अस्तु, ऐ क्षेत्र'क समस्त पुरातत्त्ववेत्ता विद्वन्मण्डली'क अनुमान छनि जे ऐठाम वा ऐ क्षेत्र पर परम पुराकालसँ, केवल मैथिल ब्राह्मणलोकनि'क एकच्छत्र अधिकार विद्यमान छनि। ऐ क्षेत्र'क समस्त धार्मिक क्रिया-कलाप पर, मैथिल सम्प्रदाय'क दिङ्निर्देश प्रायः प्रत्येक समय काज करैत रहलनि अछि। तही कारणें, शिलालेख'क लिपिओ तिरहुता अछि।

पँजवारा सबलपुर के किनवारवंशीय राजपूत राजालोकनि'क अलावे चँदवै-पसै अथवा लक्ष्मीपुर आओर खेतारी जाति'क घटवाली राजा सभ'क राज्यमे बहुत पूर्वकालसँ मैथिल ब्राह्मणे लोकनि पौरोहित्य कार्य करैत छला। खड़हारा आओर सबौर तँ मुसलमानी

शासनकालमे मैथिल जमींदार लोकनि'क द्वारा प्रशासित क्षेत्र सभ छल।

देवनदी गंगा'क दक्षिण के मैथिललोकनि धार्मिक क्रिया-कलाप किंवा खान-पान सभकिछु मिथिला-संस्कृति'क अनुरूप रखलनि। जा'धरि ई लोकनि, वैवाहिक सम्वन्ध मिथिला मे जाकए करथि—प्रायः, आनो सभ्यता-संस्कृति तिरहुते'क मैथिल सम्प्रदाय के अनुरूप चलवैत रहला। परंच, अखिल भारतवर्ष'क दीर्घकालीन परतन्त्रता'क अवधिमे, ई लोकनि, सभसँ मूल्यवान् जै वस्तु'क परित्याग वा विस्मरण केलनि-से छल, हिनकालोकनि'क विशुद्ध 'मैथिलीभाषा'।

वर्तमान कालमे, तकर कुपरिणाम ई भऽ रहल छनि जे ऐ अंग क्षेत्रमे, हिनका लोकनि योग्यता ओ 'संख्यागरिष्ठता'क दृष्टिसँ पूर्णतः सुसम्पन्न ह्वैतहुँ सन्तालभाषी वनांचल अथवा झारखण्ड राज्यमे अन्तर्भुक्त कएल जा रहल छथि। यैह महाकाल'क किंवा जगन्नियन्ता'क क्रूर विडम्वना कहल जा' सकैछ।

गंगा'क दक्षिण क्षेत्रीय पुराकालिक मैथिल विप्रलोकनि'क जखन परिचर्चा प्रारम्भ होइछ तँ प्रथमतः 'रघुनाथ ओझा' नामक तपस्वी मैथिल ब्राह्मण देवता'क परिगणना पूर्ण श्रद्धा'क सँग कएल जाइछ। कहल जाइछ वैह वाणप्रस्थी ऋषि-कल्प रघुनाथ ओझा, बाबा श्री 1008 वैद्यानाथेश्वर'क मन्दिर ओ माहात्म्य लिखिकए एतबा'क उजागर कएने छला। हिनका सम्बन्धमे, स्वयं भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, अपन एक यात्रा-वृत्तान्तमे लिखने छला (आइसँ 119 या 20 वर्ष पहिने, 1880 ई. मे भारतेन्दु वावू हरिश्चन्द्र, वैद्यनाथ क्षेत्र'क निज 'यात्रा' कएने छला-ई विषय *भारतेन्दु समग्र* के पृ. 1044 के आस-पास उल्लिखित भेल अछि।)—"लोग कहते हैं कि रघुनाथ ओझा नामक एक तपस्वी इसी वन में रहते थे। उनको स्वप्न हुआ कि हमारी एक छोटी-सी 'मढ़ी' झाड़ियों में छिपी है, तुम उसका एक बड़ा मन्दिर बनाओ। उसी स्वप्न के अनुसार, किसी वृक्ष के नीचे, उनको तीन लाख रुपया मिला। उन्होंने राजा 'पूरणमल्ल' (गिद्धौर-नरेश) को, वह रुपया दिया कि वे अपने प्रबन्ध में, मन्दिर बनवा दें। वे वादशाह के काम से कहीं चले गये। और, कई बरस तक न लौटे। तब, रघुनाथ ओझा ने दुःखित होकर अपने व्यय से मन्दिर बनवाया। जब पूरणमल्ल लौटकर आये और मन्दिर बना देखा तो सभा-मण्डप बनवाकर, मन्दिर के द्वार पर अपनी प्रशस्ति लिखकर चले गये। यह देखकर रघुनाथ ओझा ने दुःखित होकर कि रुपया भी गया, कीर्त्ति भी गयी, एक नई प्रशस्ति बनायी और बाहर के दरवाज़े पर खुदवाकर लगवा दी। *वैद्यनाथ माहात्म्य* भी मालूम होता है कि इन्हीं महात्मा का बनाया हुआ है, क्योंकि उसमें छिपाकर 'रघुनाथ ओझा' को श्री रामचन्द्र जी का अवतार लिखा है। प्रशस्ति का काव्य भी उत्तम नहीं है, जिससे बोध होता है कि 'ओझा' जी श्रद्धालु थे किन्तु, उद्भट पण्डित नहीं थे।"

पुनः, तहीठाम ओ बावा वैद्यनाथेश्वर'क मन्दिर-निर्माण'क प्रसंग उठाकए आगाँ चर्चा केने छथि जे—"गिद्धौर के महाराजा सर जयमंगल सिंह के.सी.एस.आई. कहते

हैं कि पूरणमल्ल उनके पुरुखा थे। एक विचित्र बात यहाँ और भी लिखने योग्य है। गोवर्धन पर 'श्रीनाथ' जी का मन्दिर सं. 1556 (1499 ई.) में, एक राजा पूरणमल्ल ने बनाया और यहाँ संवत् 1652 (1595 ई.) में, एक पूरणमल्ल ने वैजनाथ जी का मन्दिर वनाया। क्या यह मन्दिरों का काम 'पूरणमल्ल' ही को परमेश्वर ने सौंपा है?"

वस्तुतः, उक्त दुनू मन्दिर'क निर्माण-प्रक्रियामे, 104 वर्ष'क तरपट, भऽ जाइत छैक। अस्तु, वास्तविकता जतए-कतउ हुअए, मुदा, दक्षिणी बिहार'क प्रोषित मैथिल-समुदाय'क परिचर्चामे, उक्त रघुनाथ ओझा'क उल्लेख तँ निश्चयतः करहि'क पड़तैक। जँ, वर्तमान बाबा वैद्यनाथ'क मन्दिर 1595 ई.मे, बनवाओल गेल छल; तँ, एतबा निश्चितप्राय मानि लेल जा सकैछ जे आइसँ लगभग 400 वर्ष पहिने, मिथिलास्थ मैथिल ब्राह्मण लोकनि गंगा-टपि कए, विहार'क ऐ वन्य प्रान्तर क्षेत्र (झारखण्ड क्षेत्र अथवा झादेर खण्ड = जो 'झा' लोगों का भूखण्ड रहा हो) मे, आत्म गतायात (आवाजाही) अवश्य प्रारम्भ कऽ देने छला।

ओना, गम्भीरता एवं विवेकितापूर्वक विचार कएला उत्तर इहो सुस्पष्ट प्रतिभासित होइछ जे मैथिली सीता केँ प्राप्त करक अभिलाषी राक्षसराज रावण, ऐ वैद्यनाथ-लिंग'क जहिया-कहियो प्रतिष्ठा-प्रक्रिया प्रारम्भ केने छल हएत तै काल, मैथिल जन-समूह'क कोनो वर्ग, तकरा नै मदद केने छल हेतनि-से, दृढ़तापूर्वक नहि लीखल जा सकैछ। एतत्पूर्व ओ रावण, कुशध्वज-पुत्री विदुषी 'वेदवती'क अपहरण-हेतु सेहो वेर-वेर प्रयत्नशील भेल रहए। तै-उद्योगमे, सुकेतु-जनक-पुत्री ताड़का ओ तकर कुटुम्वी सभ उक्त राक्षस-नरेश रावणकेँ खूब सहायता पहुँचवैत छलनि। प्रतीकार-स्वरूप, मिथिला-नरेश (मेधस् = अगस्त्य) केँ, कतेक वेर, उक्त ताड़का लोकनिकेँ अभिशप्त करक पड़ल छलनि। परन्तु, सेसभ विषयान्तर'क चर्चा भऽ जाएत, हमरा, ऐठाम एतबे'क लीखक छल जे जै 'वैजनाथ' लऽ कए, विहार'क दक्षिणी भू-खण्ड पर, मैथिल विप्र-समुदाय'क पदार्पण शुरू भेल; से प्रायः, नै केवल चारि शताब्दी पूर्वसँ अपितु, ऐ 'झारखण्ड' क्षेत्रमे, हिनका लोकनि'क आवास नितान्त अदौ युगेसँ अनुमान-गम्य बनैछ।

रघुनाथ ओझा'क अनन्तरकालीन सत्कृती एवं उल्लेखनीय मैथिल समुदायमे सन्ताल परगना क्षेत्रमे, ओना तँ बहुतो व्यक्ति'क नाम लेल जा सकैछ मुदा ऐ बेलौंचे वंशमे पं. शैलजानन्द ओझा, उमेशानन्द ओझा (पहलवान), प्रकाशानन्द ओझा, उमानन्द ओझा, पं. विनोदानन्द झा तथा भवप्रीतानन्द ओझा बहुत नामवर पुरुषसभ होइत गेला। यतः, ऐ बेलौंचे वंश'क दू शाखा छल; तएँ, नन्द-वंशमे उपर्युक्त महानुभावगण लोकप्रसिद्ध पुरुष भेल रहथि। आओर, 'दत्त-वंश'-शाखामे स्व. धीराजदत्तझा द्वारी, कमलादत्त झा द्वारी, चन्द्रदत्त झा द्वारी ओ आशुतोपदत्त झा द्वारी लोकनि, वेश विख्यात व्यक्ति लोकनि भऽ गेल छथि।

ऐ बेलौंचे वंश'क प्रसिद्ध पुरुष लोकनि'क अलावा मिथिलाभाषामे, यथावसर किछु-किछु लिखनिहार लोक-समुदायमे, भागलपुर ज़िलान्तर्गन्त मिश्रपुर ग्राम-निवासी

डॉ. जनार्दन मिश्र एम. ए. साहित्याचार्य छला जे *विद्यापति* नामक पुस्तक लिखने रहथि। माहेश्वरी सिंह 'महेश' मैथिलीमे एम.ए. डिग्री प्राप्त केने रहथि। अभयकान्त चौधरी जी एकगोट मैथिली निबन्ध (मिथिला-भारती, मार्च-जून 1969 ई.) प्रकाशित करबौने छथि।

मुंगेर ज़िलान्तर्गत रतैठा ग्राम-निवासी प्रो. चन्द्रधर पाठक 'आर्य' मैथिलीमे 'स्वदेशीवाणी' पत्रिका किछु सप्ताहधरि चलौने छला।

सन्ताल परगनामे, मरपा ग्राम-निवासी श्री शम्भुनाथ बलियासे 'मुकुल', प्रो. सत्यधनमिश्र, कार्त्तिकनाथ ठाकुर, वरदाचरण मिश्र प्रभृतिव्यक्ति मैथिलीमे निज-निज रचना प्रकाशित करबौने छला। हमरा लोकनि'क अनुरोध पर स्व. बुद्धिनाथ झा 'कैरव' मैथिलीभाषामे, लगभग सोलह वा सत्तरह गोट कविता लिखने रहथि। बहुत गोटा'क विचार छलनि जे स्व. 'कैरव' जी दक्षिण बिहारसँ एकगोट पृथक् मैथिली-पत्रिका'क सम्पादन करथि। डॉ. नर्मदेश्वर झा एवं डॉ. मोहनानन्द मिश्र प्रभृति विद्वान् लोकनि सेहो किछु-किछु मैथिली निबन्ध-लेख सभ लिखलनि ओ प्रकाशित करबौने छथि।

(1) **स्व. शैलजानन्द ओझा**—ई एकगोट सिद्ध सुधी सत्पुरुष लोक रहथि। वर्धमान'क कोर्टमे स्व. कृपाराम चक्रवर्ती तथा स्व. बाबूलाल ओझा द्वारा जे दूगोट सरदार पण्डा लोकनि'क तालिका पेश कएल गेल छलैक; तदनुसार, स्व. ईश्वरीनन्द ओझा, कखनो 17 म तँ कखनो 15 म स्थानमे उल्लेखित कएल गेल छथि। ईश्वरीनन्द ओझा'क पुत्र शैलजानन्द ओझा रहथि। स्व. कृपाराम चक्रवर्ती'क अनुसार ईश्वरीनन्द ओझा'क पश्चात् स्व. उमेशानन्द ओझा सरदार पण्डा'क गद्दी पर समासीन भेला। मुदा, पण्डा-समाज'क आम धारणा यैह छनि जे स्व. ईश्वरीनन्द ओझा'क पश्चात् 18 वर्ष धरि स्व. शैलजानन्द ओझा सरदार पण्डा रहला। जखन, स्व. उमेशानन्द निज मल्लविद्या'क जोर-जबर्दस्ती'क चलते सरदार पण्डा'क गद्दी हथियएब प्रारम्भ कऽ देलनि—तँ स्व. शैलजानन्द बाबू वैद्यनाथ'क प्रधान पुजेगरी—पदसँ अत्यधिक विरक्त रहए लगला। वंश-परम्परा'क नियमानुसार उक्त गद्दी पर स्व. शैलजानन्द बाबूकेँ सुप्रतिष्ठित रहब—अनिवार्य छलनि; मुदा, जएँसँ स्व. उमेशानन्द चाचा कोटि'क वलिष्ठ लोक छलथिन; कौलिक ओ कौटुम्बिक कलह (विवाद) सँ पराङ्मुख भऽ जएब शैलजानन्द बाबू समीचीन गमलनि। अनुश्रुत अछि श्रीमान् गिद्धौर-नरेश स्व. उमेशानन्दकेँ गद्दी-दफनेबामे पीठ पोछैत छलथिन।

(2) **स्व. उमेशानन्द ओझा**—ई बेलौंचे वंशमे, बहुत नामवर पहलवान व्यक्ति भऽ गेल छथि। स्व. उमेशानन्द तथा स्व. गिरिजानन्द—ई लोकनि दू भाइ रहथि। ई विश्वविजयी 'गामा' पहलवानसँ लड़ि गेल छला। जनप्रवाद अछि दूनू गोटा'क 'कुश्ती' 'समानता' पर बंद कऽ देल गेल छलनि। अही कुश्ती'क पश्चात् दिग्विजेता 'गामा', दोसर खेप, कहियो विहारमे पैर नहि रोपलनि। उक्त स्व. उमेशानन्द ओझा प्रभूत ईर्ष्यालु लोक रहथि। जाहि गिद्धौर-नरेश के बल पर, उक्त पद पर अभिषिक्त भेल

रहथि; कहल जाइछ बाबा वैद्यनाथ लेल, तनिके-द्वारा देल गेल चाँदी'क 'गेट' (द्वार) केँ ई उखड़बा कए बाहर फेकबा देने छला। निज अमलदारी धरि, बाबा'क से द्वार, मन्दिरमे नहिञे लागए देलथिन।

हिनक पुत्र आमदानन्द हिनके उतार पर, प्रचण्ड शक्तिशाली पहलवान भेल छला। जखन, हिनका निज पुत्र'क विषयमे ज्ञात भेलनि जे ओ हिनको सँ, अधिकतर जोरबला भऽ गेल छनि; तँ अखाड़ा पर, तकरा सँग जोर करक हेतु नहि राजी होथि। एक दिन बेटा जखन अत्यधिक दृढाग्रह केलथिन जे पिता हमरा जोर करा दियऽ तँ ओकरा तेना ने छाती-तर चापि लेलथिन जे पाछाँ ओ पुत्र खूब खून बोकड़ि-बोकड़ि कए मरि गेलनि।

स्व. उमेशानन्द ओझा जखन अपनाकेँ नावल्द गमलनि तँ कहल जाइछ स्व. भोथड़ी खवाड़े के जेठ बेटा आमदानन्द खवाड़े (प्रसिद्ध 'डाकू' बाबू) केँ पोष-पुत्र बनौलनि। मझिलाबाबू तथा खोखा बाबू (नूनू खवाड़े) नामक दूभाँइ तै डाकूबाबू केँ आओरो छलथिन। हिनका समयमे, सरदार पण्डा'क गद्दी-लेल, न्यायालयमे मारिते केशाकेशी चलैत रहल। कोर्ट-दिशसँ तीन-चारि खेप 'रिसीभर' बहाल कएल गेल। उक्त पद'क दावेदार-रूपमे, स्व. प्रकाशानन्द सेहो मोकद्दमा केने रहथि। मुदा, स्व. त्रिपुरानन्द ओझा'क पहिलुकी पत्नीमे उत्पन्न होइतहुँ यतः प्रकाशानन्द, श्रीमान् भवप्रीतानन्द ओझासँ 11 मास'क छोट आयु'क रहथि तएँ, न्यायालय के दृष्टिमे, गद्दी'क असली हकदार श्रीमान् भवप्रीतानन्दकेँ बूझल गेलनि। अस्तु, 1929 ई.'क ज्येष्ठ मास में स्व. भवप्रीतानन्द ओझाकेँ सरदार पण्डा'क पद पर प्रतिष्ठित कएल गेल छलनि। स्व. उमेशानन्द ओझा केवल 12 वर्ष धरि, सरदार पण्डा'क पद पर रहला।

(3) **स्व. प्रकाशानन्द ओझा**—उक्त भरद्वाज गोत्रीय मैथिल विप्र-वंशावली'क तेसर प्रख्यात पुरुष पटियाला इस्टेट'क परम श्रद्धेय राजगुरु श्रीमान् प्रकाशानन्द ओझा भेल छला। वास्तवमे, आदिविदेह नरेश श्रीमान् दत्तात्रेय जाहि तन्त्र शास्त्र'क अप्रतिम साधक रहथि, हुनक तही तन्त्र-साधना'क बलें, ई मिथिलादेश, नै केवल भारतवर्षमे अपितु सम्पूर्ण मही-मण्डल पर एकगोट अतुलनीय स्थान बनौने रहल अछि। ऐठाम दर्जनो ओझा, पण्डित सौंसे संसारमे, ऐ तन्त्र-विद्या'क अनवरत प्रचार-प्रसार कऽ गेल छथि।

मिथिला'क एकगोट पर्यायबोधक नाम 'तिरहुत' (त्रिभुक्त) सेहो थिकै। ऐठाम प्रभूत पुरातन काले सँ शाक्त, शैव ओ वैष्णव मतावलम्बी मानव-समुदाय निवास करैत आएल छथि। यतः, ऐ तीनू कोटि'क मानव-समुदाय'क लोकसँ ई क्षेत्र संभुक्त रहल अछि; तएँ, एकरे लोककण्ठ त्रिभुक्त वा तिरहुत कहब सेहो प्रारम्भ कऽ देने छल। ओना, इहो बड़गोट उघार सत्य थिक जे ई मिथिला देश आध्यात्मिक क्षेत्रमे, सेहो भूमण्डल पर सर्वदा एवं सर्वथा अपन एकगोट पृथक् पहचान रखलक अछि। अहीठाम

जैन, बौद्ध ओ चार्वाक सन'क नास्तिक दर्शन सभ'क प्रादुर्भाव भेल। मुनिवर याज्ञवल्क्य अहीठाम, समग्र कृष्णमय (मिश्रित-कलुषित) वेद-वाङ्मयकेँ मथि कए शुक्ल (पूर्ण पुनीत = निष्कलुष) वेद निष्पन्न केने रहथि। हुनके प्रदर्शित *शतपथ ब्राह्मण* तथा हुनके निर्दिष्ट *स्मृति* द्वारा, एतुक्का समस्त सुधी-समाज स्मार्त्तकर्मी भऽ गेल छथि। यदि प्राचीन न्याय गौतम मुनि दऽ गेल रहथि, तँ अर्वाचीन न्याय सेहो गंगेशे उपाध्याय-निर्मित, ऐठाम अतीव आरम्भिक कालसँ समादृत रहल अछि। ऐठाम, कहिओ नारी अथवा सोलकन्ह (षोडशकघ्न = वैदिक वा स्मार्त्तकर्मी लोकनि'क न्यूनातिन्यून सोलह संस्कारकेँ नै माननिहार) केँ शास्त्र-परिचर्यासँ पराङ्मुख नै राखल गेल अछि।

मिथिलाकेँ *बृहद्विष्णु पुराणक* अनुसार 'शक्तिपीठ' सेहो कहल गेल अछि। तकर तात्पर्य ई नहि जे ऐठाम साक्षात् जगज्जननी जानकी (सीता) माटिसँ बहार भेल छली। आद्या शक्ति, प्रायशः आनो-आनो धरा पर अवतीर्णा भऽ गेली अछि। मुदा, तैसभ भूखण्डकेँ, कोनो शास्त्र-पुराण 'शक्तिपीठ'क संज्ञा नहि देने अछि। ऐठाम'क आपामर जनता, मूलतः शक्ति (भगवती)'क उपासक होइछ प्रत्येक गृहस्थ कुटुम्बी'क घरमे, अहीठाम कुल-भगवती (गोसाँओनि)'क नित्य प्रति आराधना कएल जाइछ। ऐठाम'क प्रायः प्रत्येक प्रबुद्ध पुरुष **'अन्तः शाक्ताः बहिः शैवाः सभामध्ये तु वैष्णवाः'** भेल रहैत छथि। तएँ, तै पृष्ठभूमिमे, ऐठाम'क लोकमे, वर्ण आओर आश्रम'क ततबा कठिन बन्धन कहिओ नहि रहलैक। सामान्य लोक'क प्रायः यैह धारणा रहैत एलैक अछि जे

प्रवृत्ते भैरवी चक्रे सर्वे वर्णा द्विजातयः।
निवृत्ते भैरवी चक्रे सर्वे वर्णाः पृथक्-पृथक्॥ (*कुलार्णवतन्त्र*)

कहल जाइछ हिज आइनेस श्री 1008 महाराजाधिराज सर भूपेन्दर सिंह बहादुर पटियाला-नरेश, जखन तन्त्रशास्त्र के गम्भीर अनुसन्धान प्रारम्भ केलनि तँ हुनका ऐ वाममार्ग'क कोनो सिद्ध परमगुरु'क अनिवार्यता अनुभव भेलनि। उक्त नरेशकेँ तन्त्रविद्या'क ज्ञानोत्कण्ठा, किछु निजी प्रयोजनवश उत्पन्न भेल छलनि। ऐ तान्त्रिक मतकेँ निजेच्छानुसार विकृत कऽकए ओ अपन रनिवास (भीतर खण्ड) मे लोकप्रिय बनबऽ चाहैत छला। हिज हाइनेस'क रंगमहलमे, लगभग 300 अभिरामा वामा (प्रमदा) लोकनि छलथिन। अनुभवी महाराजा एतबा जनैत छला जे ततबा पैघ तादादमे, मानिनी वृन्दकेँ महलमे, बान्हि राखब कोनो आसान काज नहि थिक; वस्तुतः, से स्वाभाविके छलैक तते विशाल महिला-मण्डलीकेँ विषय-सुखसँ पराङ्मुख राखब नितान्त असम्भवे रहैक। ताहूमे, स्वयं महाराज अपन आदतिसँ किछु अधिक ईर्ष्यालु रहथि। हिन्दू सभ्यता आओर समाज'क नियमानुसार पुनः जरूरी रहै जे रनिवास'क प्रमदा लोकनि, अपन मालिक महाराजा'क प्रति प्रेम-प्रवण ओ एकनिष्ठ रहथि। तही उद्देश्य'क परिपूर्ति-हेतु ओ महाराजा तान्त्रिक मान्यता ओ पूजा-प्रक्रियामे, किछु नवीन रूप'क फेर-बदल कऽकए, एकगोट अभिनव पद्धति'क कौलाचार-विचार'क प्रचार-प्रसारमे

फाँड़ कसि नेने रहथि। मूल लेखक दीवान जरमनीदास, तही दुआरेँ अपन *महाराजा* नामक पुस्तक के पृ. 36 पर लिखने छथि।

उन्होंने (अर्थात् महाराजाधिराज भूपेन्दर सिंह ने) बंगाल के दरभंगा-नरेश की रियासत से, पं. प्रकाशानन्द झा नामक वाममार्ग के कौलाचार्य सिद्ध को बुलवाया, जो तन्त्रशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित और देश-विख्यात तान्त्रिक थे। (ऐठाम एतबा तथ्य हर-हमेशा स्मरण राखक थिक जे उक्त प्रकाशानन्द ओझाकेँ एतबा प्रसिद्धि-दियौनिहार स्व. दरभंगा-नरेश रहथि। उक्त नरेश'क छत्रछाया स्व. ओझा जी केँ अनुखन प्राप्त होइत छलनि)। उनकी मदद से महाराजा के महल के भीतर तन्त्रमार्ग की एक विचित्र उपासना-पद्धति चालू की गयी।

× ×  × ×

कौलाचार्य व्याघ्रचर्म पहने, घुटे शिर, लम्बी जटा (शिखा) और सिन्दूर से चेहरे को रंगे हुए, आध्यात्मिक गुरु की हैसियत से, धर्म-सभा का संचालन करता था। देखने में वह भयानक, लेकिन गम्भीर और तेजस्वी लगता था। उसने अपने हाथों से, देवी की एक मिट्टी की प्रतिमा बना रक्खी थी, जिसे भाँति-भाँति के रंगों से रँगकर, महाराजा के ख़ज़ाने से लाये हुए हीरे, मोतियों और कीमती रत्नों से जड़े हुए हार, बाजूबन्द और बालियाँ वग़ैरह ज़ेवरात पहनाये गये थे। शुरू में कौलाचार्य की आज्ञा पाकर, सभा में एकत्र साधक भक्त देवी की प्रार्थना के भजन गाते। इसके बाद हर एक को, देवी के प्रसाद की तरह, तरह-तरह की तेज़ मदिराओं को एक में मिलाकर तैयार की हुई शराब पीने को दी जाती। मद्यपान का यह दौर, जब एक दो घण्टे चल चुकता और भक्तों को नशा चढ़ जाता; तब कौलाचार्य कुँवारी युवतियों को बुलाता कि वे आगे आकर देवी के सामने, एकदम नंगी हो जाएँ और प्रार्थना के गीत गाएँ। सभा में, हरेक समारोह के मौक़े पर, कौलाचार्य वहाँ मौजूद भक्तों में से किसी को—ख़ास तौर पर महाराजा को ही धार्मिक कृत्यों का संचालक नियुक्त करता। कुण्ड में आग जलती रहती, जिसमें भाँति-भाँति के मसाले, घी, अनाज, धूप आदि की आहुतियाँ देकर हवन होता रहता।

ज्यों-ज्यों रात बीतती, साधक-भक्तों को नशा चढ़ता जाता और वे अपनी सुध-बुध खो बैठते। तब कौलाचार्य पुरुषों और महिलाओं को आज्ञा देता कि वे एकदम नंगे होकर, देवी के सामने मैथुन करें। रनिवास के धाइ घर से बुलाई गयी 12 से 16 साल तक उम्र की कुँवारी लड़कियाँ, नशे में चूर देवी के सामने, नंगी करके लायी जातीं इत्यादि-इत्यादि।

उक्त *महाराजा* पुस्तककेँ पढ़ि गेला अनन्तर जानकारी प्राप्त होइछ जे राजगुरु स्व. प्रकाशानन्द ओझा जी कतबा उच्च कोटि'क तान्त्रिकाचार्य रहथि आओर तहिना यावज्जीवन राजदरबारमे, हुनक की प्रतिष्ठा ओ मर्यादा होइत रहलनि—

1. कौलाचार्य साधक-भक्तों के स्वरों में देवी के भजन ऊँची आवाज़ में गाता रहता।
2. कौलाचार्य की नाराज़गी और क्रोध के विचार से प्रत्येक पुरुष अपने पर नियन्त्रण रखने की चेष्टा करता। जो कामवेग की तीव्रता होने पर, अपने को रोक न पाते, उनके लिए कौलाचार्य की आज्ञा थी कि देवी के चरणों के आगे रक्खे हुए प्याले में, अपना टपकता हुआ स्राव गिरा दें। जब प्याला ऊपर तक भर जाता, तब साधक लोग, बारी-बारी से जाकर, उस प्रसाद को होंठों से लगाते थे, मानों वह देवी का चरणामृत हो।
3. कौलाचार्य, महाराजा के कल्याण के लिए लगातार देवी से प्रार्थना करता रहता।
4. अक्सर, ऐसा भी होता कि कौलाचार्य ऐन्द्रजालिक प्रयोग-द्वारा देवी की मूर्ति को साधकों की दृष्टि में सजीव करके दिखला देता। वहाँ एकत्र भक्त-समुदायों को देवी प्रत्यक्ष आशीर्वाद देती प्रतीत होती। स्वयं महाराजा ने देवी को मानव-शरीर धारण किये देखा और बातचीत की। उन्होंने दण्डवत करके देवी से अपने स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा, समृद्धि और सफलता का वरदान माँगा।
5. कौलाचार्य ने अपने शिष्यों को प्रभावित करने के लिए कुछ चमत्कार भी दिखलाये। उसने एक या दो बार महाराजा से कहा कि पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ के लिए, वे देवी के चरणों में नरबलि चढ़ाने की व्यवस्था करें, मगर महाराजा सहमत न हुए।
6. कौलाचार्य के आदेश पर, उपासना समाप्त हो जाने के उपरान्त देवी के लिए बलि दिये गये भैंसों का मांस, प्रसाद के तौर पर भक्तों में बाँटा जाता था और हिन्दू लोग जो आम तौर पर उससे घृणा करते थे, बड़े उत्साह से प्रसाद ग्रहण करते थे। सवेरा होने पर, कौलाचार्य समारोह-समाप्ति की घोषणा करता। अगले दिन, इस बात का कोई ज़िक्र तक न करता कि पिछली रात को, आमोद-प्रमोद के उस मन्दिर में, कैसे-कैसे भोग-विलास के उत्सव और रक्तरंजित कारनामे हुए थे।
7. अन्त में, यह नया तान्त्रिक मत दूसरी रियासतों में भी फैल गया, जहाँ के नरेशों के रनिवासों में भी सैकड़ों रानियाँ थीं। उन लोगों ने भी इस मार्ग का अवलम्बन करके शान्ति और सन्तोष प्राप्त किया। (पृ. 40)

(4) स्व. उमानन्द ओझा (1893-1950 ई.)—पटियाला नरेश के राजगुरु तन्त्र-शिरोमणि श्रीमान् प्रकाशानन्द ओझाकेँ दू विवाह रहनि। तान्त्रिकचार्यकेँ, बाबा वैद्यनाथ ओ' माता दुर्गा भगवती'क दयासँ, दूनू सहधर्मिणीमे, वेश सखा-सन्तान जनम लेलथिन। ई दोसर वात रहैक जे, तै राजगुरुकेँ, भारतवर्ष'क विविध राजदरबार

सभमे, उपलब्ध राज-सम्मान ओ' प्रतिष्ठा-पूजा संग्रह करवासँ कखनो पर्याप्त फुरसति नहि भेंटैत छलनि। समाज'क लोक-अनुश्रुति'क अनुसार, ओ राजगुरु निज कौटुम्बिक भरण-पोषण-हेतु अत्यल्प समय निकालि पावथि। तै राजगुरुकेँ, प्रथम विवाहमे, सम्भवतः केवल यैह कविभूषण उमानन्द जी टा सन्तान भेल छलथिन। तन्त्र-गुरु स्व. सत्यानन्द जी लोकनि, हुनक द्वितीय विवाह'क सन्तति-वितानमे परिगणित होइत रहथि।

कहल जाइछ स्व. कविभूषण श्रीयुत उमानन्द जी एक अत्यधिक संवेदनशील कवि छलाह। पिता'क प्रथम सन्तान हेवा'क कारणें, एतवा स्पष्ट सत्य छल जे ई आत्म बालपनमे, पूर्ण सुख सद्भाग्य'क समुपभोग केने रहथि। हिनका यादृश लारप्यार ओ सुख-सुविधा प्राप्त रहनि; से, बहुतो-बहुतो राजकुमारकेँ हठात् नसीब हएब असम्भवे मानल गेल छल। कविवर उमानन्द'क अनन्तर कालीन जीवनमे शताधिक मार्मिक ओ संवेदनापूर्ण काव्याभिव्यक्तिक, वैह वैभव-विरह ओ कुटिल अर्थाभाव आधार-शिला बूझल जाइछ। कवि भूषण उमानन्दजी, बाबा वैद्यनाथ'क अनतिदूरे अवस्थित कुण्डाग्राममे लगभग 1893 ई.'क भाद्र कृष्ण अष्टमीकेँ ग्राम्य भगवती'क क्षेत्रमे जन्म ग्रहण केने रहथि। हिनक सहपाठी सभमे, विहार'क भूतपूर्व मुख्यमन्त्री पण्डित विनोदानन्द झा'क नाम सर्वदा उल्लेखनीय बूझल जाइछ। भावुक कवि-पुंगव ओइ उमानन्दजी'क पश्चात्कालिक जीवन घोर उपेक्षा एवं अभावपूर्ण भऽ गेल छलनि। अनुश्रुत अछि जे अकिंचनता'क तै असह्य वेदनाकेँ विस्मृत कऽ देबा'क हेतुएँ, उक्त कविभूषणजी आत्मिक तै कष्टमय जीवनावधिमे, भाँग, गाँजा एवं नानाभाँति'क नशा-परिसेवन सेहो करए लागि गेल रहथि। ओ जखन पुरजन-परिजन वा समाज'क कोनो कोटि'क जन-समूह'क समक्ष होइत किम्हरो प्रस्थान करथि तँ हुनक मस्तक ओ ग्रीवा, हर-हमेशा आनत भेल रहैत छलनि। निज वैभव-विहीन तथा निरादृत जीवनावधिमे, ओ कहियो भरिमुँह हँसैत अथवा ककरो सँग सम्भाषण करैत नहि दृष्टिगोचर भेला। सम्भवतः, निज हीनतापूर्ण तही जीवन'क चित्रांकन, कविवर'क निम्न बहुतप्रचरित एवं जनप्रिय 'लोकगीत' मे भेल छल।

(त्रिपदी, दाँड झूमर)

कहाँ सँ आएलें भौंरा! कहाँ छलें रात रे!
आरे भौंरा! निशी भेलो परभात रे!
भोरे झरलो मधू रौदें-जारे गात रे!
आरे भौंरा! मोने रहलो मोन'क बात रे!
एके तँ फूटलौं हमें झरि कए कुसात रे!
आरे भौंरा! दोसरे निठुर तोरो जात रे!
'उमानन्द' कहे भौंरा! जाहि विनिपात रे!
आरे भौंरा! के जोड़ए पिरीत तोर साथ रे!

117119
9.12.04

जएँसँ, दक्षिण विहार'क उक्त झारखण्ड क्षेत्र कोनो समय, सर्वाधिक वंग भाषा-भाषी मानव-समुदाय'क भूखण्ड-रूपें परिगणित होइत छल' तएँ, ऐठाम'क अधिकाधिक सभ्य समाज'क मातृभाषा वँगले छल आओर कोनोटा प्रवुद्ध लेखक वा प्रतिभावान् कवि, आत्मरचना, वंग-भाषामे करव गरिमादायक एवं समाजोपयोगी वुझैत रहथि। कविभूषण स्व. उमानन्द जी सम्भवतः मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण एक प्रभूत जाग्रत समाज-सेवी लोक छला-अतएव, हिनक सैकड़ो पद्य बंग-भाषामे निर्मित भेल छल।

कविवर उमानन्द जी, अपन बेजोड़ काव्य-प्रतिभा-बलें, विहार'क पूर्वाञ्चल तथा आधुनिक बंगभूमि'क समस्त पश्चिमाञ्चल क्षेत्र'क, जनकण्ठमे वसि गेल रहथि। हिनक कृष्ण-काली-पाला, रामनिर्वासनपाला, द्रौपदी-वस्त्र-हरण-पाला अथवा आगमनी-पाला के दर्जनो पद्यावली, लोकगीत-गायक कोनो संगीतज्ञ व्यक्तिसँ, कोनो ठाम, किओ व्यक्ति, फरमाइस कऽ कए सुनि सकैत छला। बहुतो व्यक्ति'क कहब छनि जे देवघरमे जे शिरोमणि ठाकुर नामक प्रसिद्ध 'झूमर-गायक' रहथि से, कविवर उमानन्द जी'क अकिंचनता (अभावी जीवन)'क अनुचित लाभ उठा कए, हिनके दर्जनो पद्य-पुञ्जकेँ अपना नामसँ मुद्रित करबा लेने रहथि। ओना, एतवा निःसंदिग्ध एवं सुस्पष्ट सत्य थिक जे ओ शिरोमणि ठाकुर एकगोट विख्यात एवं सबल संगीत गायक रहथि; मुदा, ओ पद्य-रचना-केनिहार'क रूप मे कहियो ख्याति-उपार्जन नहि केने रहथि।

कविवर उमानन्द जी'क लगभग 140 पद्यात्मक *झूमर-शिरोमणि* नामक वंगाक्षरमे मुद्रित पुस्तक हम मित्रवर प्रो. सत्यधन मिश्र जी'क पुस्तक-संग्रहमे, देखने छलौं। ऐठाम एकगोट कठोर सत्य'क उद्घाटन करबामे, हमरा कोनो तारतम्य नहि भऽ रहल अछि जे प्रो. सत्यधन मिश्र जी वैद्यनाथधाम'क साहित्यिक समाजमे, यदि आविर्भूत नहि भेल रहितथि—तँ सन्ताली, वंगला वा खोरठाभाषा भाषी-लोकनि'क मैथिली-विरोधी आन्दोलनकर्त्तालोकनि कहिया नहि, एतत्क्षेत्रीय प्राक्तनो मैथिली रचना-प्रपुञ्जकेँ तोड़ि-मड़ोड़ि कए विनष्ट कऽ देने रहितथि अथवा, अन्य भाषा'क रचना-भण्डारमे अंगीभूत बनौने रहितथि। हँ, तँ एतबा हम दृष्ट प्रत्यक्ष बात उल्लिखित कऽ रहल छी *झूमर-शिरोमणि* पुस्तक भारत शुभचिन्तक छापाखानासँ प्रकाशक रामप्रसाद गुप्त, बुकसेलर, देवघर मुद्रित करबौने छला। स्व. उमानन्द जी'क ज्येष्ठ पुत्र स्व. बालानन्द झा हमरो सुपरिचित एवं सम्मानकर्त्ता लोक रहथि। किन्तु, हुनक अल्पवयमे, असमय मृत्यु भऽ गेलासँ, स्व. कवि भूषण जी'क अप्रकाशित कोनो सामग्री उपलब्ध करबामे, हमरा असमर्थ बनि जाए पड़ल अछि। एक सज्जन किन्तु स्व. कविभूषण जीकेँ नितान्त नजदीकसँ देखनिहार ओ जननिहार व्यक्ति तँ हमरा एतबा पर्यन्त कहलनि—जे कविकुल-भूषण स्व. उमानन्द जी निज आर्थिक विपन्नता एवं सामाजिक तथा कौटुम्बिक घोर उपेक्षासँ पाछाँ एतबा ने ग्लानिग्रस्त रहए लगला जे अपनाकेँ दीर्घावधि लेल मूर्च्छाग्रस्त बनौने रहबा'क क्रममे, कतिपय विषाक्त सर्प-द्वारा आत्मजिह्वामे दंश लेल

करथि। हुनका दू-दू, तीन-तीन दिनधरि वहुतो लोक, घरमे निराहार बिछौना पकड़ने सूतल देखल करनि; तथापि, स्वाभिमान'क पालन करैत, ओ किनको आगाँ कहियो हाथ नहि पसारलनि। कविवर'क निम्नपद्य, की सर्वहारा जीवन'क, तही आर्थिक विपन्नता-दिशि नहिं इंगित करैछ?

(झूमर)

सर्व सुखप्रद अर्थ एई संसारे, अर्थे'र महिमा के वरणिते पारे,
अनर्थ अशेष हरे;
अर्थे'र पुण्योदय, अर्थेरइ विजय, चिरदिन चराचरे, गो!
धर्मे राखी मन, करो प्राणपन, अर्थ-उपार्जन तरे
अर्थे'र किंकर, एई मर्त्यभुवन, अर्थे अघटन हय संघटन,
अधमे उत्तम करे;

भीरु हय वीर, पापी युधिष्ठिर, सबे तारे समादरे गो! सर्वसुख...
कुरूप यद्यपि हय धनवान, लोके कहे ताके कन्दर्प-समान,
वर्णना मुखे ना धरे;

अर्थे करे दान, पण्डिते'र मान, अतिमूढ़मति नरे गो! सर्वसुख...
धने'र कारण, सुपण्डित गन, धनवाने करे आराधन,
चेये मुख आशाभरे;

चातक पिपासे, वारिविन्दु आशे, हेरे यथा जलधरे गो! सर्वसुख...
अर्थ नाही जार, व्यर्थ वाचा तार, पदे-पदे सुधू विडम्बना-सार,
नेहारे ना केह' फिरे;

मकरंद-हीन, कुसुम जेमन, अनादरे मधुकरे गो! सर्वसुख...
वनिता करे ना प्रेमअलापन, सुत अनुगत नहे कदाचन,
सम्माने ना सहोदरे;

पाछे किछू चाय, एई आशंकाय, त्यजे जतो सहचरे गो! सर्वसुख...
हृदये चापिया शत अपमान, लये शून्यभय-निरानंद प्राण,
रहे से अवनी-परे;

हये निरुपाय, चिरदिन हाय, अन्तरे गुमरि भरे गो! सर्वसुख...
बालविधवा'र यौवने'र प्राय, सुख-साध तार विफले मिशाय,
निराशा'र पारावारे;

एक दैन्य दोषे, शतगुण नाशे, 'उमा' कहे वारे-वारे गो! सर्वसुख...

संस्कृत'क से कहावत कि 'सर्वेगुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते' कविभूपण उमानन्द जी'क उक्तभावकेँ एक पंक्तिमे कहि देने अछि। सरिपौ; कविवर उमानन्द, अपना समक्षमे कोन-कोन वैभव-विलास वा कोन-कोन राज-सुख-सुविधा नहि देख चुकल छला। मुदा, निज परिणमित वयमे, जखन ओ असह्य अभावी मनुष्य'क जीवन जीवि रहल रहथि-तँ, से वेदना समाज'क कोन सहृदय पुरुषकेँ नहि भऽ जाइत छलनि? महाकवि भर्त्तहरि तँ, एते दूर धरि लीखि गेल छथि जे निम्नांकित सातगोट शूल, हमरा तँ कखनो विस्मृत नहि भ पबैछ। जेना—

शशी दिवसधूसरो गलितयौवना कामिनी
सरो विगतवारिजं मुखमनक्षरं स्वाकृतेः।
प्रभुर्धनपरायणः सतत दुर्गत सज्जनो
नृपाङ्गणगतः खलो मनसि सप्त शल्यानि मे॥

(*नीतिशतक*-56)

तात्पर्य दिन'क समयमे धूमिल भेल चन्द्रमा, ढरैत जुआनी'क कामिनी, सरसिज-विहीन सरोवर, निरक्षरतायुक्त सुन्दर मुखाकृति, अर्थ-लोलुप राजा, दुर्दशाग्रस्त सज्जन तथा राजदरबारमे समादृत ह्वैत शैतान व्यक्ति ई सात भाँति'क लोक, हमरा मनमे, सदिखन काँट-जेकाँ चुभैत रहैछ।

सरिपौं, कविभूषण उमानन्द, आर्थिक कुटिलतम आघातकेँ बर्दाश्त करितहुँ, यतः, परम शीलवान् पुरुष'क जीवन जीलनि, तएँ अर्थशास्त्री चाणक्य'क शब्दमे एतबा तँ कहलें जा सकैछ जे 'दरिद्रता शीलतया विराजते' हुनक अकिञ्चनतो हुनक अनुकरणीय शीलवत्ता'क चलतें, मनोरमे जँचैत रहल। कोनो, विद्वद्गोष्ठीमे, आत्मविनम्रता'क केहन भव्य स्वरूप, ओ प्रस्तुत केने रहथि से, हुनक निम्नोद्धृत 'झूमर घैरा' मे, समीक्षित कएल जा सकैछ।

सभागान (त्रिपदी)

(गण्यमान्य जत महाजन)

सभा-माझे विराजित, काव्यामोदी सुधी कत। आमि अतिक्षुद्र, हाय! महते'क ऐ सभाय, सविनये करी निवेदन। प्रकासी प्रतिभा माती, कवि-बले लबो ख्याती, नहि हेनो दुराशा आमार; भाव-सम्पदा-विहीना, कविता आमार दीना, माँगे सुधू करुणा सवा'र। क्षुद्र-तुच्छ से हय जना, सज्जने'र कृपा-कणा, जेते तार आछे अधिकार; सेई भरोसाइ आज, त्यागिया भये वा लाज, आगमन हेथाय आमार। जे विशाल विश्वमाझे, शशांक तपन राजे, खद्योतेर आछे सेथा स्थान? एई मात्र भावी मने, क्षमा करो निजगुणे, अभाजने जतो मतीमान।

झूमर (भादुरिया)

ना जानी काव्य कौशल, नाही विद्या-वुद्धि-वल, करि जाहे प्रतिभा विस्तार गो!
तुपी मन सज्जन सवा'र गो! सभा-माझे विनती आमार।
करी सुधू हरीनाम, राखी निज परीणाम, प्राणे जागे आनंद अपार गो!
नाही अभिलाषी प्रशंसा'र गो, सभा माझे विनती आमार।
मराल जेमती नीर, त्यजि पान करे खीर, तेमनि करिवे परिहार गो!
त्रुटि मन गुणे आपना'र गो, सभा माझे विनती आमार।
महते'र एई नीति, दोष त्यजि गुणे प्रीति, आछे रीति विदित संसार गो
एई मात्र भरोषा आमा'र गो, सभा माझे विनती आमार।

कविवर उमानन्दकेँ निजमाता-पिता'क छत्र-छाया दीर्घावधि-हेतु नहि उपलब्ध भऽ सकलनि अन्यथा ओ परम पौगण्डावस्थहिंसँ, कोन-कोन वैभव-विलास नहि भोगि-विलोकि चुकल छला। यदि तुलसीदास'क शब्दावली मे तकर चित्रांकन कएल जाए तँ कहल जा सकैछ।

पितु-वैभव-विलास मैं डीठा। नृपमनि-मुकुट, मिलित पदपीठा।
सुख-निधान अस पितुगृह मोरे। मातृ-हीन मन भाव न मोरे
ऐठाम 'पिय-विहीन' के स्थान मे 'मातृ-हीन' पद टा नियोजितव्य वनैछ।
(*रामचरितमानस*, अयोध्या काण्ड 87 दोहा'क वाद)

उक्त कविवर्य के सम्बन्धमे, 4 जनवरी, 1965 ई.'क 'आर्यावर्त्त' (दैनिक समाचारपत्र) केँ देखल जा सकैछ जाहिमे कवि उमानन्द'क कोनो 'जयन्ती-समारोह'मे, विविधवक्तालोकनि, अपन-अपन केहन हार्दिक उद्‌गार व्यक्त केने छलाह—

"पं. विनोदानन्द झा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि स्व. उमानन्द की सबसे वड़ी विशेषता यही थी कि उनकी चिन्तन और अभिव्यक्ति—दोनों की भाषा एक थी। उनकी रचनाओं में हम अन्तर का चित्र पाते हैं। वे जीवन-पर्यन्त संघर्षों से जूझते रहे।

"समारोह के संयोजक प्रो. सत्यधन मिश्र ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उमानन्द जी की प्रतिभा के स्पर्श से, कोई भी व्यक्ति मुग्ध हो सकता था। हिन्दी, मैथिली एवं बंगला में, समान रूप से अधिकार रखना उनकी विराट् प्रतिभा का परिचायक है।

"प्राचार्य श्री कृष्णनन्दन सहाय ने कहा कि उमानन्द जी में अनुभूति की तीव्रता के साथ-साथ जीवन के विविध पक्षों को उतार सकने की अद्‌भुत क्षमता थी।

"प्रो. ताराचरण खवाड़े ने कवि की साधना के विविध पक्षों का रहस्योद्‌घाटन करते हुए कहा कि उनकी तुलना संस्कृत कवि माघ से की जा सकती है।

"प्रो. छेदी झा शास्त्री ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बताया कि उमानन्द

जी की अप्रकाशित रचनाओं का संग्रह करने के साथ-साथ उनकी प्रकाशित प्रतियों की रक्षा की जानी चाहिये।

"इस अवसर पर कविवर उमानन्द के झूमरों के गायन के साथ, 'घैरा' का भी आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। श्री जयनारायण खवाड़े के निर्देशन में, गणेशकला मन्दिर, देवघर के कलाकारों ने सामूहिक लोकगीतों का गायन किया। सर्वश्री महेश्वर पाण्डेय, शंकरदत्त द्वारी, विश्वनाथ ठाकुर ने भी कई घण्टों तक श्रोताओं का मनोरंजन किया।"

अहिना, कोनो समारोह के शुभावसर पर देवघर के पूर्ण अव्यवहित पश्चिम भागमे अवस्थित 'नारायणपुर' ग्रामनिवासी श्रीमान् आशुतोष दत्त झा द्वारी जे काव्यमय श्रद्धांजलि, कविवर उमानन्द जी के प्रति, व्यक्त केने छला; संयोगसँ तहू'क सत्य प्रतिलिपि, वर्त्तमान पंक्ति'क लेखककेँ उपलब्ध भऽ गेल अछि अस्तु, तकरो अक्षरशः उद्धृत कऽ देव, कोनो अप्रासंगिक नहि जँचैछ।

॥ श्री श्री 108 सरस्वत्यै नमः ॥

कवि अमर और गाथा अमर

(स्व. कविभूषण उमानन्द जी'क प्रति श्रद्धांजलि)

दोहा— गुण-गरिष्ठ, गरिमा वढ़े कविकुल मे हो इष्ट।
उमानन्द जी रहें अमर, आशु'क एक अभीष्ट ॥

(कवित्त)

अवतंस नन्दवंश के, 'झा' की उपाधि लिये
भूषण निज कुल के, कुँवर राज-अंश के।
मराल मानस सर के, थी सभी निराली छटा।
परख नीर-क्षीर की, श्रेष्ठ कवि-कुल के।
भूलते नहीं थे कभी, वंश-मर्यादा सभी
थाती रक्खे थे क्रम, पुरुषानुक्रम की
वर था वरदा का, भरपूर उमा की कृपा
अमर बने गाथा, यही श्रद्धाञ्जलि 'आशु' के॥

श्री श्री 108 शंकर भगवान् दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

आशुतोषदत्तझा द्वारी, नारायणपुर।

22 अक्टूबर, 1968 ई., मंगलवार।

उक्त समारोह'क स्वागताध्यक्ष प्राचार्य राधाकृष्ण राय (आर. मित्रा. उच्चमाध्यमिक विद्यालय, देवघर) छला तथा सभा'क आयोजन अ.भा. राष्ट्रभाषा प्रचारिणी सभा, देवघर'क दिशसँ अक्टूबर 1968 ई.मे भेल छल।

कवि-भूषण स्व. उमानन्द जी कतेक लोकप्रिय कवि छला; से, हमरा स्मरण अबैछ सम्भवतः 1966 ई.मे सन्ताल परगना कालेज, दुमका'क कोनो स्नातकवर्गीय सामयिक परीक्षा'क आधुनिक भारतीय भाषामे, हिन्दीमे अनुवादार्थ जे, अँग्रेजी गद्य'क सन्दर्भ सभ देल गेल छल; से सभ हिनके आओर आधुनिक विद्यापति कविवर भवप्रीतानन्द जीयेसँ सम्बद्ध रहए। यथा–

Umanand Jha was a great poet of Santhal Pargana. His rich passionate and Sensuous folk songs are based on the Love-dalliance between Krishna and Radha, depicting the different moods of passion in different season. Bhakti for personified god is at its bottom in these Lyrics. Some Songs are Social and Suggestive As musical poetry, these songs have influenced the people of Chhotanagpur and Santhal Paraganas. His Songs are simple and direct yearings on Soul for the divine, full of Spiritual, dissatisfied and the longing for ultimate rejoning.

(5) **धीराजदत्त झा द्वारी (1876 ई. सँ 1948 ई.)**–कविवर भवप्रीतानन्द जी'क अही बेलौंचे वंश में स्व. धीराजदत्त झा द्वारी उच्चकोटि'क कवि भऽ गेल छला जे निज प्रतिभासँ बंगला भाषामे, शताधिक पद्यरचना कऽ गेल रहथि। कोनो सुयोग्य प्रकाशक के अभावमे, ओ रचना सभ, हुनक पौत्रलोकनि'क जिम्मामे, सुरक्षित किन्तु उपेक्षित बनल पड़ल अछि। धीराजदत्त झा द्वारी'क विवाह जगद्गुरु पण्डित'क पुत्री 'रानीझा' सँ भेल छलनि। ई, 73 वर्ष'क आयुमे, 1949 ई.मे दिवंगत भऽ गेल छला। हिनक अर्धाङ्गिणी पूज्यचरणा रानीझा हिनकासँ 1 वर्ष पहिनाहि शिवलोक-प्रयाण कऽ गेल छलथिन। स्व. धीराजदत्त झा द्वारी'क परिवार-प्रचुर समृद्ध ओ भरल-पूरल मानल जाइत छनि। हिनक सन्तति-परम्परामे, ओना तँ बहुतो व्यक्ति भेलनि परन्तु, श्रीयुत आशुतोषदत्त झा द्वारी जे लगभग 1903 ई.'क आसपास जन्म लेने रहथि, वर्त्तमान कालधरि मौजूद छथि। इहो लगभग 25-30 गोट 'ब्रजवूलि' तथा हिन्दी रचना कएने छथि। हिनक निम्नोद्धृत दूगोट रचना नमूना'क तौर पर द्रष्टव्य अछि। ई समस्या पूर्त्ति रुचिपूर्वक करैत छथि। यथा–

**समस्या**–ये पुंज प्रतिभा के हैं।

शिर जटाजूटाधारी, जामे गंगा है विचारी, पतित उधारी गुणगरिमा के हैं;
छाये तन सोर, हैं वसहा असवारे, धारे भाल, तिकलवारे, बालचन्द्रमा के हैं।
आप हैं दिगम्बर, अम्वर देत हैं पर हेत, गरल है सरल फल चारो हाथ जाके हैं।
वृथा करि कारी, आप धरी झोड़ी, 'आशु' देखि नर हेरी, ये पुंज प्रतिभा के हैं॥

**समस्या**–'देते फलचार फूल एक ही धथूरे से।'

शिरशोभत शशिभाल, पुनि त्रिपुण्ड्रधर विशाल, वहत सुधाधार, गंगजटा जूड़े से।
हाथ लै त्रिशूल भव नाशिव त्रिशूल-हेतु, पाये बहुत शूल-शमन, छुटे हैं कसाले से॥

पुष्प की कमान, मान मर्दए मदन महीप, कियो तन खाक, एक ही टक हेरे से।
चाहो जो मनाव हेतु, 'आशु' है बनाये देत, देते फल चार, फूल एक ही धथूरे से॥

सुनेतो अनेकन के दुखियों का दरदभार, पार हैं उतार आशु गहरे नद-नारे से
उभरी भवसिंधु, बाड़व गाढे वेगधार, तामे कर्णधार हैं असवार बन निराले से।
योगियों के ईश हैं, शीस हैं गिरीश के ये, नंगे हैं उमंगे बनी, पी-पी भंग गोले से;
चंपक ना मोतिया ना रीझते गुलाब हार, देत फलचार, फूल एक ही धथूरे से॥

(राष्ट्रीय कविता)

इस शरच्चन्द्र की शोभा को उन मुग्ध चकोरों से पूछो;
घन के गर्जन में क्या सुख है यह वन के मोरों से पूछो।
मकरंद कमल का कैसा है यह प्यारे भृंगों से पूछो;
क्यों प्राण वीण पर देते हैं यह हिरण-शावकों से पूछो।
क्यों दीप-शिखा पर जलते यह प्रश्न पतंगों से पूछो;
हँस-हँस फाँसी पर चढ़ जाते क्यों, देश-प्रेमियों से पूछो।

कविवर धीराजदत्त झा द्वारी'क कनिष्ठ पुत्र महेश्वर प्रसाददत्त झा द्वारी (जन्म 1916 ई.सँ जुलाई 1984 ई.) सेहो उत्कृष्ट काव्य-रचना करैत छला। मुदा, हिनक पुत्र प्रो. शान्तिशेखर द्वारी कहलनि—जे हिनक कविता-पुस्तिका, गृह-परिवर्त्तनक'क क्रममे, हमरा सभ-द्वारा कतौ फेका गेल जे अद्यावधि नहि उपलब्ध भऽ सकल।

कविवर भवप्रीतानन्द जी'क एक पुस्तक *झूमर रसमंजरी* छलनि जाहिमे, ओ, स्वयं ललित ओ भग्नत्रिपदी छन्द मे निज वंश'क परिचय देने रहथि। हिनक पूर्व पुरुष लोकनि, जे-जे धार्मिक वा सामाजिक कार्य केने छलथिन, ताहिठाम तकरो सभ'क संकेत कऽ देने रहथि। मुदा, ओइठाम, स्व. सदुपाध्यायजी अपन सुकृति'क कोनोटा उल्लेख नहि केलनि। अपन विषयमे ओ, केवल एतबे लिखने छला—'निजपरिचय दिते शरम गलिवें, भवप्रीतानन्द नाम, अतिअल्पज्ञान अर्थात् अपन परिचय दैत हमरा लज्जा होइत अछि। भवप्रीतानन्द अतीव अल्पज्ञानी अछि। तत्रत्य वंशावली निम्नांकित रूपेँ छल—

| | नाम | कीर्त्ति स्मारक |
|---|---|---|
| | चन्द्रमणि ओझा | |
| प्रथम पुत्र | रत्नपाणि ओझा | गौरीमठ-निर्माण |
| | जयनारायण ओझा | आद्याशक्तिरीश्वरी स्थापना |
| | यदुनन्दन ओझा | राधाकृष्ण-मन्दिर |
| | रामदत्त ओझा | अन्नपूर्णा ओ' राम-जानकी'मन्दिर |

| | |
|---|---|
| आनन्ददत्त ओझा | आनन्द भैरवमठ ओ कुरमीडीह मे जलाशय-निर्माण |
| परमानन्द ओझा | |
| सर्वानन्द ओझा | आनन्दभैरव-मठमे मूर्त्तिस्थापना |
| ईश्वरीनन्द ओझा | |
| पूर्णानन्द ओझा | |
| शैलजानन्द ओझा | शैलजा मन्दिरमे मूर्त्तिस्थापना |
| त्रिपुरानन्द ओझा | श्रीविद्यायन्त्र |
| भवप्रीतानन्द ओझा | |

# २

# व्यक्तित्व

वास्तव में कहबी छैक—'यः प्रीणयेत् सुंचरितैः पितरं स पुत्रः'—अर्थात् जे अपन सदाचरण बलें, दिवंगत पितरोकेँ प्रसन्न कऽ दियए—सैह असल अर्थमे पुत्र थिक। ओना, कतेक ठाम एहनो उल्लेख उपलब्ध होइछ जे जे व्यक्ति 'पुं' नामक नरकसँ निज पितर'क उद्धार कऽ सकथि—सैह 'पुत्र' थिका। तात्पर्य जे कोनो निकलैछ—से, यैह जे कोनो व्यक्तिकेँ निज आचरण द्वारा निधनंगत पितरोकेँ पूर्णतया परितृप्त करक चाही। वैद्यनाथधाम'क निकट स्थित 'कुण्डा' ग्राममे, जखन, एक सरदार पण्डा'क वंशमे, आश्विन कृष्ण नवमी, बुध संवत् 1943 अर्थात् ईस्वी 1886 मे बालक भवप्रीतानन्द'क प्रादुर्भाव भेल तँ से कालखण्ड, वस्तुतः पितरेलोकनिक छलनि। किएक तँ आश्विन मास'क जे दूगोट पक्ष होइत अछि ताहिमे हिन्दू 'पञ्चाङ्ग'क अनुसार कृष्णपक्षकेँ पितृपक्ष ओ शुक्ल पक्षकेँ देवी पक्ष (अथवा, मातृपक्ष) सैह कहि कए सम्बोधित कएल जाइछ। अस्तु, हमरा लगैत अछि उक्त सदुपाध्याय जी'क प्रादुर्भाव'क आन-आन जतबा हेतु-पुंज रहल हो; मुदा, तै सभ हेतु-पुञ्जमे, सबलतम हेतु, सम्भवतः निज पितृ कुलकेँ अत्यधिक उजागर कऽ देवे छलनि। अन्यथा, तै मिथिलासँ दर्जनो सत्पुरुषलोकनि गंगा'क दक्षिणी अंग-क्षेत्रमे पदार्पण केने रहथि, ओहो वंश-संदोह'क सन्तान लोकनि, कोनो अल्पख्यात बीजी पुरुषलोकनि'क सन्तति-सखा नहि रहथि। मुदा, जतबा उजागर उक्त भवप्रीतानन्द'क चलतें, ई भरद्वाज-गोत्रीय गढ़ बेलौंचे 'मूल'क कुल ख्याति प्राप्त केलक-से, प्रायशः आन-आन मूलग्रामी (गोत्रीय) लोकसभ'क नै प्राप्त भऽ सकलनि। ई कुल जें एक दिशि दर्जनो सरदार पण्डा देल तँ दोसर तरफ कमलादत्त द्वारी-सन'क संस्कृत'क विद्वान्, चन्द्रदत्त द्वारी-सन'क नगराध्यक्ष ओ ख्यातिप्राप्त अधिवक्ता, पं. विनोदानन्द झा'क समान देश-विख्यात बिहार प्रदेश'क मुख्यमन्त्री, पं. शिवराम झा'क तुल्य लोक-सेवी ओ' सन्ताल क्षेत्र'क मालवीय देल। वर्त्तमानो काल मे, ऐ खान्दान'क बहुतो व्यक्ति अत्यधिक धनी, त्यागी, परिश्रमी, व्यवसायी, पहलवान, कलाकार, प्राध्यापक, गायक (संगीतज्ञ) ओ धर्म गुरु (तीर्थगुरु) रूपमे, स्वक्षेत्र ओ क्षेत्र'क बाहरो नाम केने छथि।

कहल जाइछ बाल'क भवप्रीतानन्द'क जन्म-दिनेमे हुनक जीभ पर वाणी (सरस्वती देवी)'क बीज-मन्त्र लीखि देलगेल छलनि। जकर परिणाम भेल जे तै बालक के

अकुण्ठित से बोल, आइ लक्ष-लक्ष जन कण्ठ'क आत्मवाणी बनिकए सर्वत्र मुखरित ओ गुंजायमान भऽ रहल अछि। जहिया हिनक जन्म भेल छल तकर अदम्य आनन्दोल्लासमे, उक्त शुभावसर पर प्रभूत अन्न-वस्त्र, धन-द्रव्य ओ दान-दक्षिणा वितरित कएल गेल रहए। स्वयं तत्कालीन सरदार पण्डा पूज्यचरण स्व. शैलजानन्द ओझा (बालक'क पितामह) नवजात शिशु'क सार्वविध कल्याण ओ दैर्घायुष्य-लेल, माथा पर आशीर्वाद'क हाथ देने रहथिन। सरिपौ; बालक भवप्रीता'क ओ गौर वर्ण, रक्तोत्पलप्रतिम काया, कारी-गभुआर केश, प्रशस्त ललाट, थुल थुल तथा नितान्त परिपुष्ट हाथ-गोड़, ककरा नहि अपलक नेत्री बना देने छल। वास्तवमे, ई बालक, नै केवल योषा-गर्भसँ निःसृत भए निज विकसित स्वरूप देखबए पहुँचल रहए, अपितु, एकरा तँ भविष्यत्काल'क गरिष्ठतम गर्भसँ सेहो बहार भऽ कए एकगोट अद्‌भुत ओ असाधारण प्रतिभा प्रदर्शित करक रहइ।

अनुश्रुत अछि वैभव-विमण्डित तही वातावरणमे, किशोर भवप्रीता'क शिक्षा-दीक्षा सेहो प्रारम्भ भेल। ऐ बालक'क पितामह स्व. शैलजानन्द ओझा ओ पितामही स्वर्गीया गृहलक्ष्मी सुमित्रा देवी अपन समस्त ध्यान, अही बालक'क उज्ज्वल भविष्य-लेल सदिखन केन्द्रित राखए लगला। भवप्रीता'क शारीरिक ओ मानसिक सन्तुलित विकास, कोन रूपें प्रबर्द्धमान रहत, तकर चिन्ता मेऽ-वापसँ वेशी यैह पितामह-पितामही (दादा-दादी) कएल करथिन।

अंग्रेजी'क एक कोनो प्रौढ़ विचारक, वस्तुतः एकगोट बहुत पैघ तथ्य'क उद्‌घाटन कऽ गेल छथि—महान् ओ उच्च वंशमे आविर्भूत हएव, अपने आपमे, कोनो गोटा-लेल, एकगोट पैघ सम्मान एवं विशेष अधिकार'क बात थिक। जे तदनुरूप जीवन व्यतीत करैत छथि; ओ सर्वोच्च आदर'क पात्र भऽ जाइत छथि आओर जे से नहि करैत छथि, से सभ सँ पैघ अपकीर्त्ति'क भाजन बनैत छथि।

Good-blood descent from the great & good, is a high honour and privilege. He that lives worthily of it is deserving of the highest esteem; he that does not deeper disgrace.

(*सूक्ति सागर*, रामशंकर गुप्त, पृ. सं. 127) अंग्रेज पादरी, C.C. (Colton 1780-1832)

सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द जी'क गोत्र 'भरद्वाज' थिकनि। अस्तु, हिनकामे, कतिपय गुणगण निज गोत्रर्षि'क विरासत-रूपमे, आवि गेल छनि। ओनातँ 'भरद्वाज' ऋषि'क जन्म तथा लालन-पालन-विषय'क, पुराण ग्रन्थ सभ मे, बहुतो रोचक कथा सभ उपलब्ध भऽ जाइछ; मुदा, महाभारत'क अनुसार 'भरद्वाज'क जन्म भऽ गेला पर बृहस्पति एवं ममतामे—ई विवाद उत्पन्न भऽ गेल छलनि—जे ऐ नवजात'क संरक्षण-भार के लियए? दूनू गोटा एक-दोसर सँ कहए लगला 'तूँ एकरा सम्हारेँ' (भर द्वाजमिमम्)। तही कारणें उक्त बालक'क नाम 'भरद्वाज' पड़ल (म. अनु. 142.31 कुं)।

बालक 'भवप्रीतानन्द'केँ पिता त्रिपुरानन्द ओ माता 'नूना' जन्म भने दऽ देलथिन; मुदा, अहू भवप्रीता'क संरक्षण-भार ओलोकनि पूर्णतः अपना ऊपर नहि राखि सकलथिन। से, किछुदिन धरि, तै लार-पियार'क जँ समस्या सामने एलनि तँ दादा शैलजानन्द ओ दादी सुमित्रादेवीये—तकर समाधानमे पिल पड़ली।

जहिना 'भरद्वाज' ऋषिकेँ सम्हारबा'क प्रश्न पर, बृहस्पति ओ ममतामे विवाद चलैत देखि, वैशाली-नरेश 'मरुत्त', भरद्वाज'क लालन-पालन-भार अपना ऊपर लऽ लेने रहथि (*बृहद्देवता* 5-102-103) कहल जाइछ अहू भवप्रीतानन्द'क किछु तेहने दशा भऽ गेल छलनि। 20, रुपैया'क अन्तिम निधि, दुर्गमतारिणी माता दुर्गा'क आराधनामे, सर्वभावेन समर्पित कऽ देला उत्तर, जखन इहो बालक भवप्रीता' सर्वहारा भऽ गेल रहथि तँ कहल जाइछ वैह दुर्गा मैया, लक्ष्मीपुर इस्टेट'क कृपालु राजा स्वर्गीय प्रतापनारायण देव 'जी'क असीम अनुकम्पा हिनका पर बरसि पड़ल छलनि। 'फागा' मौजेमे, उक्त दयालु राजा साहेब, हिनको निज गुजर-बसर लेल; 'साढ़े सैंतीस बीघा जमीन' ब्रह्मोत्तर कहिकए ओहिना दऽ देने छलथिन। जै घटना'क प्रकाश स्वयं सदुपाध्याय जी निज प्रकाशित पुस्तक *बृहत्झूमरमंजरी* मे, पूर्ण कृतज्ञता ज्ञापन'क संग केने छथि।

छठिहार'क रातियहिसँ, सदुपाध्याय जी'क लालन-पालन'क समस्त दायित्व'क भार, हिनक पितामही स्व. सुमित्रा देवी अपना उपरमे, लऽ लेने छलथिन। नेनपनेसँ, सदुपाध्यायजी, अपन दादीसँ नानागोट देवी-देवता सभ'क पौराणिक कथा, धार्मिक पावनि-तिहार'क महातम इत्यादि'क सम्बन्धमे विविधभाँति'क कथा-पिहानी सुनल करथि जे आगू चलिकए हिनक महत्तम व्यक्तित्व'क नेओ के आधारशिला सिद्ध भेल।

पारिवारिक अन्तर्विरोध एवं वैमनस्य'क क्रम तै गतिसँ चलैत रहलनि कि हिनक किशोरावस्था समाप्तो नहि भेल रहनि आओर भवप्रीतानन्द जीवन'क सघनतम अन्धकार'क सम्मुख पूर्णतः किंकर्त्तव्यविमूढ़ भए ढाढ़ भऽ गेला। पिताजी तँ हिनक नेनपनेमे चलि देने छलथिन। हिनक स्नेह-सौहार्द'क एकमात्र आश्रयस्थल सौभाग्यशालिनी पितामही श्रीमती सुमित्रा देवी सेहो निःसहाय अवस्थामे छोड़िकए, स्वयं दिवंगता भऽ गेलथिन। कहावत छैक 'जे नेनुआ से गर्भहि नेनुआ'। हिनक दादीकेँ प्रबल विश्वास छलनि, हमर 'भवप्रीतानन्द' एक-न-एक दिन निश्चय सरदार पण्डा'क गादी पर बैसत तथा दुनियामे नाम करत। तही विश्वास'क चलतें, दादी सुमित्रा देवी, निज मरण घड़ीओमे, हिनका स्पष्ट शब्दमे वारण केने छलथिन 'हमर मरला उत्तर तों हमरा मुखाग्नि नहि दीहें'। बुझै छेँ ने—तोरा सरदार पण्डा बनक छौ। दुनिया मे विख्यात बनक छौ। उक्त गद्दी'क अधिकारीकेँ ककरो मुखाग्नि देव अनुचित थिकै। हिनक पितामह श्रीमान् शैलजानन्द ओझा यद्यपि जीवित रहथि मुदा, ओ सरदार पण्डा'क गादीसँ हटि गेल रहथि तथा अपन ज्येष्ठ पौत्र'क विपन्नावस्था'क केवल मूक दर्शक भऽ गेल रहथि।

सरिपौं, बालक 'भवप्रीता', जखन एगारह वर्ष'क भऽ गेला तखन, हिनक पितामही बुद्धिमती सुमित्रा देवीकेँ दिमाग पर ई भूत सवार भऽ गेल छलनि जे हमर किशोर 'भवप्रीता' कोना, अपन वाप-पुरुषा'क गादी पुनः हाँसिल करत। पितामह स्व. शैलजानन्द कतेक कारण सँ 'गादी' त्यागि, घर बैसि गेले छला। 'भवप्रीता'क पिता पं. त्रिपुरानन्द'क असमय निधन भऽ गेल रहनि। गद्दी'क हकदार स्वयं नाबालिक रहथि। तएँ, पितामही'क सभ भाँति'क आशा लता, केवल बालक 'भवप्रीता'क चतुर्दिक चतरब शुरू कऽ देलक। दोसर दिशि, हिनक वंश'क आओरो विपक्षी सभ'क कुदृष्टि उक्त गद्दी'क हेतु, प्रतिपल लागल रहैत छल। परंच, भवप्रीता'क पितामही, एक कुशल वीररमणी छली। ओ कहियो वर्दाश्त नहि करए चाहैत छली जे उक्त गद्दी पर, हुनक होनहार पौत्र बालक भवप्रीताकेँ छोड़ि, अतिरिक्त किओगोटा बैसि कए, गद्दी'क सम्पत्तिकेँ, मनमाना हथियएव प्रारम्भ कऽ दियए। अस्तु, पितामही'क प्रबलतर आकांक्षा'क कारणें, बालक भवप्रीतानन्द, अपन पितामही'क प्रेरणासँ वर्धमान (जतए मन्दिर'क सभटा 'केश' फरिछाइत छल) गेला तथा अपन पुरनका 'वकील'सँ भेँट केलनि। ओइ सुयोग्य आत्म अधिवक्ताकेँ अपन सभटा विषय साफ-साफ सुना देलथिन। वकीलो हिनक गोट-गोट कागजात देखि-सुनिकए, हिनका संग नाना प्रकार'क प्रश्न, शंका-समाधान केलकनि। ई, हुनक सभटा प्रश्न-प्रपुञ्ज'क प्रचुर समीचीन जबाब देलथिन। वकील, हिनक तीव्र बुद्धि ओ प्रतिभासँ प्रभूत प्रभावित भेला। उक्त वकील-लग, जे किओ आनो व्यक्ति जूमए-तकरा सभकेँ, ओ वकील; हिनक बुद्धि-क्षमता'क भूरि-भूरि प्रशंसा सुनाबए। ओ बाजए—"एई वच्चा मोक्किल, आमा के मोकदमा खूब भालो भावे बुझाच्छे।" वर्धमान जिला'क कोर्टमे, वकील हिनका तरफसँ, आवेदनपत्र देलक। किछु विपक्षी लोक सभ, निज-निज अधिकार जँतेबा'क हेतु, तै अदालतमे, सेहो आवेदन करैत गेला। केश-मुकदमा किछु अवधि-धरि चलैत रहल। परन्तु, सुनवाइ एवं विवेचना'क पश्चात् निर्णय, तरुण भवप्रीतानन्द'क पक्षमे भेल। ई भवप्रीतानन्द जी, गद्दी'क निर्विवाद उत्तराधिकारी घोषित कएल गेला। उक्त अधिकार'क लड़ाइमे, नै केवल स्व. उमेशानन्द ओझा अथवा हुनक ल'ड़-ज'ड़ हिनक प्रतिपक्षिता करैत रहथिन, कहल तँ इहो जाइछ जे स्वयं प्रकाशानन्द ओझा (पटियाला-नरेश'क राजगुरु) किछु अवधि-लेल, हिनक विरोधिता-खातिर कलह'क मैदानमे, स्वयं उतरि गेल छलथिन। ऐ सत्त्वाधिकार'क प्रबल युद्धमे—हिनका कोनो सामान्य विजय नहि उपलब्ध भेल छलनि। कोर्टमे, हिनका, अपना ऊपर लगाओल गेल दर्जनो मिथ्या आरोप-प्रत्यारोप'क अत्यधिक, युक्तियुक्त सफाइ देला उत्तरे 'डिग्री' भेटल छलनि।

मनुष्य निज उद्यम औ पौरुष-बलें, सरिपौं, बहुत पैघ-पैघ उपलब्धि कऽ लैछ वा तकर जोगार जुटा लैछ मुदा, कहल जाइछ जे "होता वही है, जो मंजूर-ए-खुदा होता है।" माननीय सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द जी'क पूर्वहुँ जे किओ (उमेशानन्द ओझा) सरदार पण्डा'क गद्दी पर बैसि गेल छला; से तै वंश'क नामी पहलवान् पुरुष रहथि।

हुनक राक्षसी वल-पौरुष-लग, अनुश्रुत अछि नामवर दवंग-दवंग लोक सेहो सोझे आनत भेल रहैत छला। तै व्यक्तिसँ लोहा लेब, प्रत्येक पुरुष-लेल कथमपि सम्भव नहि छल। एतबा बात जरूर छैक, हमर 'चरितनायक' गद्दी'क उत्तराधिकार'क संग्राममे, निश्चय न्यायसंगत विजय प्राप्त कऽ लेने रहथि; मुदा, तै कालावधिमे, हिनक उमेर तै जोगर'क नहि भेल रहनि जैसँ हिनका सिंहासनारूढ़ कऽ देल जइतनि।

सरदार पण्डा'क पद पर प्रतिष्ठित हेबा-लेल (पूर्वमे 45 वर्ष, मुदा) संशोधित आयु 40 वर्ष हएब अनिवार्य रहैक। भवप्रीतानन्द जी उत्तराधिकारी घोषित हेवा'क काल-खण्डमे, सम्भवतः, 20 वा 22 वर्ष'क, नितान्त तेज-तर्रार प्रतिभावान् नवयुवक रहथि। तएँ, हिनका सिंहासनारूढ़ बनवा-लेल, 18, 20 वर्ष'क दीर्घ प्रतीक्षा करव अनिवार्य भऽ गेलनि।

उक्त 18 सँ 20 वर्ष'क कालखण्डमे, तै समय'क सामाजिक रीति-रेवाज'क अनुसार, अनुश्रुत अछि हमर 'चरितनायक' श्रीमान् भवप्रीतानन्द जी महाराजकेँ वारी-वारीसँ, तीन खेप विवाह करए पड़ल छलनि। पहिल विवाह सम्भवतः स्व. गोविन्द खवाड़े'क पुत्री-सँग भेल रहनि। तदुत्तर, दोसर विवाह कोनो मिश्रोपाधिधारी, फलाहारी-पण्डा-गच्छ मे भेल छलनि। स्व. सदुपाध्यायजी'क तेसर विवाह, सरावाँ'क आगाँ 'लखोरिया' गाम'क कोनो ओझा-परिवारमे भेल छलनि। ई, एकगोट पृथक् सत्य घटना थिकै-जे हिनका कोनोटा सहधर्मिणीमे बालक-सन्तान नहि जन्म लेलथिन। हिनक पत्नी'क नाम 'नन्ददुलारी' देवी छलनि।

स्व. भवप्रीतानन्द'क अतिरिक्त दू भ्राता स्व. इन्द्रानन्द ओझा एवं मंगलानन्द ओझा लोकनि, सन्ततिवान् रहथि। स्व. इन्द्रानन्द ओझाकेँ आमदानन्द, ज्ञानानन्द ओ विशुद्धानन्द-तीन बालक छलथिन। तहिना, स्व. मंगलानन्द जी ओझाकेँ ललितानन्द, श्याम भवानन्द तथा शारदानन्द उक्त तीन पुत्र भेलथिन। परन्तु, स्व. मंगलानन्द जी सर्व कनिष्ठ भ्राता छलथिन। आओर, इन्द्रानन्द जी माझिल भ्राता रहथि। अस्तु, इन्द्रानन्द जी'क आमदानन्द झा नामक बालककेँ जे चारि पुत्र सर्वश्री अजितानन्द, कामदानन्द, मुरलीनन्द ओ अमृतानन्द छथिन—ताहिमे श्री अजितानन्द जीकेँ भवप्रीतानन्द जी'क पश्चात् गद्दी भेटब—समीचीन बूझल जाइत अछि। किन्तु, वर्त्तमान समयमे, यतः बाबा वैद्यनाथ-मन्दिर'क व्यवस्था सरकार'क हाथेँ सम्पादित होइछ—तएँ, श्रीयुत अजितानन्द झा जी उपेक्षित भेल जीवनयापन कए रहला अछि।

पुनः, प्रकृति-विषय पर चली। अतः, जखन श्रीमान् भवप्रीतानन्द जीकेँ निज पितामही'क छत्रच्छाया उठि गेल छलनि तँ दैनन्दिन जीवनयापन'क क्षेत्रमे, हिनका एकगोट वड़ पैघ विकराल समस्या, आगाँमे आबि कए मुँह बावऽ लगलनि। तखन, तै अवधिमे, हिनक सुयोग्य वकील, हिनका अदालतमे, एकगोट अर्जी लिखिकए देब'क परामर्श देलथिन। कहलथिन-"आवेदन में लिखिए कि मैं सरदार पण्डा की गादी का उत्तराधिकारी हूँ, लेकिन अपेक्षित उम्र नहीं होने की वजह से, गादी का अभी तक पूर्ण

अधिकारी नहीं हो सका हूँ। मेरे स्थान पर, 'सेकेण्ड रूल' के अनुसार, तत्काल किसी 'एक्टिंग सरदार पण्डा' को बिठाया जाए तथा ऐसी स्थिति में, जीवनयापन के लिए, तत्काल मुझे मन्दिर के रक्षित कोष से, खोराकी की व्यवस्था करवा दी जाए, क्योंकि उक्त सम्पत्ति का भावी हकदार मैं ही हूँ।"

अनुश्रुत अछि तदनुरूप आवेदन-प्रपत्र तैयार भेल। परंच, एकरा भाग्य'क खेल कहल जाए'ओ अर्जीवला दरखास्त अदालतमे, नहि देल जा सकल। ई सदुपाध्याय जी'क ललाट-रेखा'क भारी विडम्बना छल।

इम्हर, दिनानुदिन हिनका लोकनि'क समक्ष, अर्थाभाव'क अजगर साप क्रमशः मोटगर होइत गेल। ऐ कालखण्डमे, उक्त सदुपाध्याय जी, कहुखन कए, नौकरी करक विचार करए लगला। मुदा, कोनो समुपयुक्त जीविका नहि उपलब्ध हेबा'क कारणें, तै दिशसँ, ई हताश बनि गेला। अन्ततः, तै दारुण अर्थाभाव'क कालावधिसँ, आत्मोद्धार-लेल निज आवास-गृह'क बिक्री-छोड़ि, दोसर, कोनो उपाय नहि दृष्टिगोचर भेलनि। अतः, निजावासकेँ बेचि, ई सदुपाध्याय जी, तै दुर्दिन'क असह्य पीड़ाकेँ सहए लेल, देवघरसँ उत्तर-पूर्वमे, 2 मील पर अवस्थित 'रामपुर' ग्राममे, एक छोटे-छीन 'कुटिया' निर्माण कए रहए लगला।

'रामपुर' ग्राम'क एकान्तवास तथा पहाड़ी स्रोतस्विनी'क कछेर एवं विराट विपिन-विहारमे, हिनक कवि-प्रतिभा विशेष रूपेँ मुखरित हुअए लगलनि। दिन-राति, भोर-साँझ, जखन-तखन काव्य-साधनामे तल्लीन भऽ गेल करथि। एक तरहें हिनक कवि-जीवन-लेल, ई स्थान प्रभूत अनुकूल भऽ गेल छलनि। कखनो ई चिड़ै-चुनमुनी'क कलरव'क मध्य रचना करथि तँ कखनो झुरमुटमे बैसि, नदी-तट पर वैसि शिव-प्रदोष-पूजा तथा रात्रि-समयमे, कुटीमे विश्राम कएल करथि। ऐ ग्राम्य परिवेशमे, हिनक अधिकाधिक शृंगारपरक रचना विरचित भेल छलनि। तै झूमर-घेरा-युक्त रचना, सभ'क एकगोट गजव गँबारू सुगन्ध प्रस्फुटित होइछ। देहाती क्षेत्रमे, हिनक तही रचना सभ'क अधिकाधिक प्रचार भेलनि।

मुदा, कवि भवप्रीतानन्द'क इहो शान्त जीवन चिर-काल-पर्यन्त नहि रहि सकलनि। वस्तुतः ई तँ ऐ मानव-जीवन'क नितान्त कटु सत्यता थीक। महाकवि कालिदासो लिखि गेल छथि—

कस्यात्यन्तं सुखमुपनुतं दुःखमेकान्ततो वा
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमि-क्रमेण।

जेना, गाड़ी'क पहिया, गतिशीलता'क अवस्थामे, ऊपर-नीचा होइत रहैछ तहिना प्रत्येक मनुष्य'क जिनगी'क पहिया, प्रतिपल ऊपर-नीचा होइत रहैत छै। ऐ मर्त्य भुवनमे, किओगोटा ने निरन्तर सुखभोग करैत रहि जाइछ आओर ने किओगोटा लगातार कष्टे'क सागरमे निमग्न भेल रहैछ। 'चक्रवत् परिवर्त्तन्ते दुःखानि च सुखानि च'।

मकान-विक्रय कऽ देला उत्तर, जीवन-निर्वाह'क एकमात्र संचित 'धनराशि' जखन क्षीणप्राय भऽ गेलनि तखन, कविवरकेँ पुनः वास्तविकता'क सुस्पष्ट ज्ञान हुअए लगलनि। ओ विचारए लगला—'ई जीवन-प्रवाह आब कोना आगाँ बढ़त?' हिनक नितान्त प्रशान्त जीवनमे, पुनः एकबेर, बड़कागोट हलचल आरम्भ भऽ गेलनि। ई, राति-दिन, निज स्थिति'क ठोस वास्तविकताकेँ सोचि-सोचि, आगाँ'क कोनोटा कार्य-कलाप सम्पादित करबामे, अत्यधिक कुण्ठित भऽ गेल करथि। बहुतो गोटा'क धारणा छनि, निम्नांकित पद्य-रचना कविवर तही समयमे केने छल हेता। जेना—

झूमर (भदवारी)—निर्गुण

रे, दारुण संसार, तोरा सँ जी-ऊचटौ हमार।
वैभव-लोका-परीवार, पले मे सभ'क उजार
सकल प्राणी काल'के आहार, रे दारुण संसार!
माटि'क लागी काटा-काटी, नारि'क लागी लाठा-लाठी
भेट'क लागी पापाचार, रे दारुण संसार!
रोग-शोक-चित्त'क ग्लानी, नारी, बेटा, धन जन-हानी
कत्तहुँ हँसी, कत्तहुँ हाहाकार, रे दारुण संसार!
'भवप्रीता' कहए सार, एके छै चैतन्याधार
भावेँ आरो सपना के प्रकार, रे दारुण संसार!

## कवि'क स्वप्नलब्ध सान्त्वना

कहल जाइछ दुर्गतिनाशिनी माता दुर्गाधरि निज वरद पुत्र केर तै दशाकेँ शीघ्रे तारि गेली। एक रात्रि कविवर'क सहधर्मिणीकेँ एक स्वप्न देखेलनि जे देवी दुर्गा स्वयं उपस्थित भए, हुनका आशीर्वाद दैत छथिन एवं कहैत छथिन जे 'तोरा लोकनि चिन्ता जुनि करेँ, हम तोरा सभ'क अर्थ-विकलांगता'क चिकित्सा कऽ देने छियहु। ऐ रोग सभसँ, तोरा लोकनि बहुत अल्पावधिक उपरान्ते त्राण पाबि जेबेँ।'—एतबा कहि ओ देवी अन्तर्धान भऽ गेली। निशीथमे, निज सहधर्मिणी'क तेहन स्वप्न-कथा आत्म काने सुनि, ई सुदपाध्यायजी अत्यधिक सान्त्वना ओ मानसिक शान्ति'क अनुभव केलनि। दोसर दिन भेने, ई देवी'क पूजा, किछु विशिष्ट प्रकारेँ प्रारम्भ कै, अवशिष्ट 20 टाका सेहो तहीमे खर्च कऽ कए, स्वयं माता जगत्तारिणी'क भरोसें नितान्त आराम करए लगला। छला तँ प्रचुर किशोरावस्थहि सँ परम आस्तिक लोक। अस्तु, एक दिन ई स्वयं अपनहुँ एकगोट सपना देखलनि।

कविवर भवप्रीतानन्द स्वप्न देखलनि "जे भगवान् श्रीकृष्ण निज प्राण-प्रिया राधिकासँ कहि रहल छथि जे अहाँ ऐ भावुक कविकेँ, अपन बालक मानि लियौक। आओर, राधिका जी, पति'क तै अनुरोधकेँ अङ्गीकारो कऽ लेलथिन अछि।" तदनन्तर, तँ ई स्वयंकेँ परमात्मा'क एकनिष्ठ सन्तान मानए लगला।

सरिपौ; उक्त स्वप्नागत सान्त्वना'क उपरान्ते, लक्ष्मीपुर-इस्टेट'क स्व. ठाकुर प्रताप नारायण देव जी'क तरफसँ, हिनका 'साढ़े सैंतीस विगहा ब्रह्मोत्तर खेत'क भूमिखण्ड प्रदान कएल गेल छलनि। राजासँ स्वर्ण पदक सेहो भेटल छलनि। एकर कृतज्ञता-प्रकाशमे स्वयं कविवर लिखने छला जे "मैं आशीर्वाद देता हूँ कि ठाकुर साहब की दिवंगत आत्मा, इन्द्र की भाँति चिरकाल तक स्वर्ग में सुख-भोग करती रहे। और, ठाकुर साहब की बड़ी रानी श्रीमती कुसुम कुमारी देवी जी भी मुझे स्नेह की दृष्टि से देखती रही हैं। अतः, मैं उन्हें भी आशीर्वाद देता हूँ कि रानी साहिबा दीर्घायु हों और चिरकाल तक राज्य-भोग करती रहें।" (*भवप्रीतानन्द पद्यावली*, पृ. 10)

वस्तुतः, उक्त घटना'क अनन्तर तँ, अनेकानेक महान व्यक्ति लोकनि'क दृष्टि, हिनका ऊपर आकृष्ट हुअए लगलनि। कविवर भवप्रीतानन्द सम्पूर्ण सन्थाल परगना, वीरभूम, मानभूम (वर्त्तमान कालिक पुरुलिया आओर धनवाद) सिंहभूम, बाँकुड़ा, मिदनापुर इत्यादि स्थानमे अत्यधिक लोकप्रिय कवि-पुंगव के रूपमे सम्मानित हुअए लगला। हिनक सरल ओ सरस रचनावलीसँ, छोट-पैघ सभ कोटि'क लोक आनन्द उठबए लगला। तहीक्रममे, तै क्षेत्र'क पैघ-पैघ घटवाल तथा राजा-महाराजा लोकनि'क दृष्टि, सेहो हिनक वैयक्तिक जीवन'क प्रति अनुरक्त हुअऽ लागल।

काशीपुर (पंचकोट, पुरुलिया)'क राजा हिज हाइनेस महाराजा ज्योतिप्रसाद सिंहदेव बहादुर तँ हिनक बहुत विशिष्ट सम्मान केलथिन। भवप्रीतानन्दकेँ ओ स्वयं साक्षात् शिव पधारलनि अछि-से बुझि आदर देने छला। वैद्यनाथ बाबा'क नगरी, देवघरमे, हिनका सुभ्यस्त रूपें रहक हेतु, एकगोट सुन्दर भवन कीनि देलथिन। संगहि, ई सरदार पण्डा'क निज खान्दानी गादी पर, कोना पदासीन भऽ जेता-तन्निमित्तो उक्त राजा, हिनका खूब मदति केलथिन। अदालत'क निर्णयानुसार, जून 1929 ई. (ज्येष्ठ 1336 साल) मे, ई सरदार पण्डा'क गादी पर बैसाओल गेल छला। राजा हिनका आर्थिक कष्टसँ उबार'क हेतु मासिक वृत्ति बान्हि देने छलथिन।

जामताड़ा'क राजा, सेहो हिनकर सम्मान ओ प्रतिष्ठा केने छलथिन। कहल जाइछ उक्त राजा साहब हिनका पर्याप्त धन दऽकए परिपूर्ण बना देने रहथिन।

कविवर भवप्रीतानन्द जी, जखन सरदार पण्डा'क पुनीत ओ प्रतिष्ठित 'पद' पर, अभिषिक्त भऽ गेला, तखन हिनक वास्तविक प्रतिभा, उदीयमान प्रभाकर'क तेज-जेकाँ आहिस्ते-आहिस्ते, समस्त मानव-समाज-रूप नभो-मण्डल पर पसरए लागल। आब तँ, हिनक अप्रतिम शैव, वैष्णव ओ शाक्त प्रतिभा-त्रिवेणी'क नितान्त पवित्र ओ प्रणम्य जलमे, हजार'क हजार आम जनसमूह साह्लाद निमज्जन करए लागल। संस्कृत, हिन्दी, मैथिली, बँगला ओ अंग्रेजी के कतिपय पत्र-पत्रिका ओ विद्वन्मण्डली हिनक व्यक्तित्व एवं कृतित्व'क सम्बन्धमे, निज-निज अभिमत प्रकाशित करए लगला।

बँगला'क एकगोट पत्र मे तँ एतेधरि प्रकाशित कऽ देल गेल जे बँगला-लोक-साहित्य'क महान् गौरवरत्न श्रीमान् भवप्रीतानन्दजी, 16म शताब्दी'क

एक गोट प्रख्यात कवि छला जनिक जन्म बँगाल'क वीरभूमि जिलामे भेल छल। ऐ विधि'क मन्तव्य प्रकाशन'क पाछाँ आन जे कोनो अभिप्राय वा हेतु रहल हुअए मुदा, कविवर 'भवप्रीतानन्द' जरूर व्यक्तित्ववान् लोक थिका-से तँ स्पष्टे प्रमाणित होइछ। अन्यथा, कोनो साहित्यिक समीक्षक द्वारा, कोनो व्यक्तिकेँ, ऐ प्रकारेँ अपनेबा'क प्रयास'क पृष्ठभूमिमे आन कोन तथ्य पर ध्यान देल जाए।

रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ, देवघर द्वारा एकगोट *संगीत-संग्रह* नामक बँगला पुस्तक प्रकाशित करबाओल गेल; तै मे श्रीमान् भवप्रीतानन्दजी'क उत्कृष्ट थोड़ेक झूमर लोक-गीतो मुद्रित करबाओल गेल। तै गीत सभकेँ, विद्यापीठ'क छात्र-समुदाय समय-समय पर सस्वर गवैत छथि। उक्त पुस्तक'क विद्वान् सम्पादक लिखने छला—"झूमर से हमलोग सन्ताल, बाउरी प्रभृति छोटी जातियों के लोगों के अश्लील गीत समझते थे, किन्तु सदुपाध्याय श्री श्री भवप्रीतानन्द ओझा ने देव-देवी-विषयक तथा आध्यात्मिक भाव-संवलित वहुत-से भक्तिपरक झूमर-गीतों की रचना करके, इन्हें उच्चकोटि के शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में पहुँचा दिया है।"

पुनः, तही बँगला-साहित्य'क प्रख्यात मनीषी डॉ. सुकुमार सेन, सेहो ऐ सदुपाध्याय जी'क सरस रचनावली'क भूरि-भूरि प्रशंसा केने छथि।

बँगला-साहित्य'क प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सुधीर कुमार करण, अपन *सीमान्त बँगला लोकायन* नामक पुस्तकमे, सदुपाध्याय जी'क चर्चा करैत लिखने छला—"झूमर-जगत के गुरु के रूप में इनकी मान्यता है; इनके पदों के भाव लोकायन हैं किन्तु भाषा शिक्षालब्ध। पदों के सुर भी मूलतः लोकायन एवं मानर-डंफा के ताल में ही सुनने में अधिक अच्छा लगता है।"

हिन्दी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि स्व. द्विजेन्द्र'क कहब छलनि—जे "वैद्यनाथ धाम-वास्तव्य कविवर भवप्रीतानन्द झा'क कविता-माधुरी'क आस्वाद जनिका प्राप्त भेल छनि हुनका निःसंकोच कहए पड़तनि जे वीणापाणि'क एहि वरद पुत्र'क लेखनीमे अजस्र काव्यशक्ति सन्निहित अछि।"

भागलपुर विश्वविद्यालय के प्रख्यात प्राध्यापक डॉ. विष्णु किशोर झा 'बेचन' हिनका सम्वन्धमे लिखने छला—"इनकी रचनाएँ मिथिला से बंगाल तक आज जनमानस का अंग बनकर लोककण्ठ में समा गयी हैं।"

साहित्य अकादेमी, दिल्लीमे, मैथिली भाषा के प्रतिनिधि तथा बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुरमे मैथिली-विभाग के भूतपूर्व रीडर प्रो. रमानाथ झा 24, दिसम्वर 1966 ई. 'क 'Indian Nation' पटना में, Bhavapritanandji; His Poetry and Music नामक निबन्ध अंग्रेजीमे प्रकाशित करवौने छला।

पुनः, वैह रमानाथ बाबू Bhavaprita-Sangeet or A New trend in Maithili Music नामक लेख गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टीट्यूट, इलाहावादसँ प्रकाशित डॉ. उमेश मिश्र-स्मारक अंकमे, (1968 ई.मे) मुद्रापित करवौने छला।

संस्कृत'क विद्वत्समाजमे, लोककवि भवप्रीतानन्द जी जखन-तखन चर्चित होइत छला। बिहार सरकार'क संस्कृत-शिक्षा-निरीक्षणाध्यक्ष पं. रामनारायण शर्मा जी, 1943 ई.मे, निम्नांकित शव्दावलीमे, हिनक सम्बन्धमे, अपन अभिमत प्रगट केने रहथि। जेना—

एषां काव्यं नैसर्गिकम्। एतेऽज्ञसा जन कवय इति वर्णयितुं शक्यन्ते। मन्ये कालपरिपाकेणैतेषां गीतयः उपचर्यया झूमर्यादयश्च सविशेषं जनहृत्पीठमधिष्ठास्यन्ति। यत्र-तत्र गीतिषु जयदेव कविभणिति पङ्क्तीनां विद्यापति-गीति'पङ्क्तीनां च झंकार संवादे चाकल्प्येते निमीलितदृशा।

तहिना, कोनो समयमे, महाराजा, दरभंगा'क राजपण्डित एवं संस्कृतभाषा'क मान्य उद्भट विद्वान् पं. त्रिलोकनाथ मिश्र जी हिनक झूमर-घैरादि लोकभाषा-रचना सभकेँ सुनिकए निम्नांकित भावोद्गार प्रगट कएने छला—

'यावदिन्दुमिहिराभ्यामिह महीधराः सिन्धवश्च
सरसाश्चकासतितमाम् तावदस्य विदुषोऽतिनिर्मला सवृत्तकृतिकला विराज्यात्।'

पद्मश्री पं. विष्णुकान्त झा, निज *वैद्यनाथ शिव-प्रशस्तिः* नामक पुस्तकमे, कविवर भवप्रीतानन्द जी'क सम्बन्धमे, एकगोट श्लोकमे, निम्न रूपें, आत्ममन्तव्य प्रकाशित करबौने छथि। जेना—

अनेक ग्रन्थाणां विरचनमहो! बंगवचसां
तथा लोक्यं गीतं विदितमिह यस्यास्ति विपुलम्।
स मान्यः पण्डेशो गिरिपति-सुतेशार्चनरतो
भवप्रीतानन्दो जयति बुधवन्द्यः कविवरः॥

तहिना, हमरा मोन पड़ैछ 1966 ई.मे, सन्ताल परगना महाविद्यालय, दुमका'क बी.ए. (फाइनल)'क तृतीय सामयिक परीक्षा'क आधुनिक भारतीय भाषा (हिन्दी)'क प्रश्नावलीमे, जे दूगोट अंग्रेजी सन्दर्भ'क हिन्दी भाषामे अनुवाद-करए-लेल देल गेल रहैक ताहिमे निम्नलिखित सन्दर्भ श्रीमान् भवप्रीतानन्दसँ सम्बद्ध रहैक। जेना—Sadupadhyaya Sri Sri Bhavapritanand Ojha is called Vidyapati of modern age, because, the poetry of Vidyapati is very similar to that of ojha ji. His dramatic poetry is based on Radha and Krishna. He is the head prist of Baidyanath Temple. He has no formal education. His Vigorous poetry, sometimes has social conduct and propagandist value. He was honoured by the governor of Bihar for his services in the field of folk songs. His language is very simple and a direct mixture of Maithili, Bhojpuri and Bengali. Though, Maithili is his mother tongue, he has acquired a place of honour in the history of Bengali literature. Folk music

and sensuous emagery are Vis-a-Vis with each other. Mr. Upendranath Pandey of Deoghar has recently, performed the folk songs (Jhoomar) of Bhavapritanand in our College, under the auspices of Music, Dance and Drama Society.

दिनांक 3 अक्टूबर, 1969 ई. मे, देवघर'क विख्यात मैथिली संस्था 'स्वदेशवाणी'क कार्यकर्त्ता लोकनि, हिनका 'अभिनव विद्यापति' कहि कए सम्मानित कएने छला। किएक तँ कर्मनिष्ठ शिवभक्त होइतहुँ यैह विद्यापति'क देसिल वयना मे प्रवाहित कृष्णभक्ति'क स्रोतस्विनीकेँ कालान्तरमे प्रगट केने छला।

स्व. भवप्रीतानन्द, व्यक्ति-प्रशंसामे सेहो कतिपय रचना केने छला जाहिमे लक्ष्मीपुर, जामताड़ा तथा पंचकोट'क महाराजालोकनि'क प्रशस्ति प्रसिद्ध अछि। ई, निज झूमरगायक शिरोमणि हाजरा पर्यन्तकेँ सम्मान देने छला। कुण्डामे भगवती कुण्डेश्वरी'क *भक्तिपद्यावली* लिखने रहथि। रामपुरमे काली'क उपासना केने छला। तन्त्र-साधना'क गुरुदेव पितामह शैलजानन्द ओझा'क वन्दना केने रहथि। ई कुण्डेश्वरी भगवती'क संस्थापक रामपद ओ हरिपद वन्द्योपाध्याय'केर नाम'क स्मरण केलनि। ई कुण्डेश्वरी भगवती'क प्रधान-पुजारी, दातव्य औषधालय'क प्रधानचिकित्सक, बिहार'क भूतपूर्व मुख्यमन्त्री'क प्रशस्तिमे अपन काव्य-पुष्पाञ्जलि अर्पित केने छला।

कविवर भवप्रीतानन्द, मन्दिर मे उपनीत भेनिहार वटुक सभ'क खातिर, भीतरखण्ड-आवास-कार्यालयसँ, प्रथम भिक्षारूपमे अन्नद्रव्यादि उपलब्ध करेबा'क परम्पराकेँ, आजीवन निर्वाह करैत रहला।

कविवर भवप्रीतानन्द'क रचना-यात्रा 1900 ई.सँ लऽ कए 1970 ई. धरि, निरन्तर गतिशील रहल। उक्त अवधिमे, ई देवघरिया मैथिली, हिन्दी ओ बँगला भाषा मे प्रभूत रचना केलनि।

## की सदुपाध्याय जी वस्तुतः 'अभिनव विद्यापति' छला?

वस्तुतः, जखन-कखनो हीन गुणवला वस्तुकेँ अर्थात् उपमेयकेँ, कोनो दोसर उत्कृष्ट गुणवला वस्तु'क सँग गुण-लेश सँ सादृश्य देखाओल जाए—सैह 'उपमा' कहबैछ। उपमानोपमेययोर्गुणलेशतः साम्यमुपमा (1) उत्कृष्टवता येन पदार्थेन सह हीनं किमपि वस्तु गुणलेशतः उपमीयते सादृश्यमानीयते तदुपमानम्। हीनगुणं यच्च किमपि वस्तु गुणलेशतः सादृश्यमुपयाति तदुपमेयम्। उपमानोपमेययोर्गुणलेशतः यत्सादृश्यं सैवोपमेति भावः॥

ऐठाम, कतिपय गुणावलीमे हीन अछैतहुँ यदि भवप्रीतानन्द, विविधगुणशालि महाकवि विद्यापति'क संग सदृशता मे लाओल गेल छथि तँ से कथमपि दोषावह नहि वूझल जेबा'क चाही।

ऐ उपमा-प्रक्रियामे, गुण-बाहुल्य'क उत्कर्षता कि अपकर्षता प्रायशः कवि-कल्पिते जनाओल गेल अछि।

महाकवि विद्यापतिमे, निम्नांकित कपितय गुणावली बहुत उत्कर्षाधायक छल। जेना—(1) ओ संस्कृत, अवहठ्ठ एवं देसिलवयना'क निष्णात पाण्डित्य'क अतिरिक्त तद्युगीन अरबी, उर्दू इत्यादि राजकीय भाषा'क सेहो नीक जानकारी रखैत रहथि। (2) ओ धर्मशास्त्र, व्याकरण, छन्दःशास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र, युद्धविद्या, तन्त्रशास्त्र, कामकला, दर्शनशास्त्र इत्यादि बहुतो विद्या'क प्रवीण लोक छला। (3) ओ शास्त्रीय तथा लोक-संगीत-दूनू'क कुशल रचनाकार छला। (4) ओ विविध राज-दरबार'क सिद्धहस्त ओ सम्मानित आचार्य कवि रहथि। (5) ओ विविध भाषा मे निपुणता'क संग पुस्तक-प्रणयन-कर्त्ता रहथि। हुनक तै-तै भाषाक अनेक रचना सभ उपलब्ध होइछ। (6) ओ निज प्रतिभा-बलें पुश्त-दर-पुश्त कवि-जगत'क समुत्प्रेरक महाकवि छला। (7) ओ दीर्घकालधरि समग्र उत्तरी भारत ओ तराइ क्षेत्रीय नेपालदेश'क महाकवि-रूपमे समादृत ओ सत्कृत व्यक्ति रहला। (8) ओ वैष्णव-शैव एवं शाक्त-उपासक सभ'क हेतु बेजोड़ रचना सभ दऽ गेल छथि। (9) ओ शतञ्जीवी महाकवि, जीवन'क नानाविध उत्थान-पतन'क घात-प्रतिघातकेँ अत्यन्त करीबसँ देखनिहार ओ भोगनिहार, लोक रहथि। (10) ओ कोमल कान्त पदावलीमे अतीव मनोरम रचनाकेनिहार अत्यधिक जनप्रिय कविवर्य रहथि। (11) ओ देश, भाषा एवं राष्ट्र केर गरिमाद्योतक महाकवि भऽ गेल छथि। (12) ओ बहुमुखी प्रतिभा'क अप्रतिम गुणवान् ओ गुणज्ञ कलाविद् लोक छला। (13) ओ अभिनव जयदेव तथा कवि-कोकिल'क उपाधिसँ विभूषित कएल गेल महापुरुष छला। (14) ओ आत्म कवित्व'क बलें 'विस्फी' ग्रामोपार्जन कएने रहथि। (15) ओ दिल्ली-दरबार मे विजातीय प्रशासकोसँ शंसित ओ सम्मानित भेल रहथि।

## ॥ सदुपाध्याय स्व. भवप्रीतानन्द ओझा ॥

(1) ई लोक प्रसिद्ध गीतकार छला। (2) जनभाषामे रचना केनिहार जनप्रिय कविवर्य रहथि। (3) शैवी, वैष्णवी तथा शाक्ती रचना के प्रणयनकर्त्ता, विलक्षण कल्पनाशील पूजनीय व्यक्ति रहथि। (4) अन्तःप्रान्तीय ख्याति प्राप्त दीर्घजीवी लोक रहथि। (5) उत्थान-पतन ओ घात-प्रतिघातसँ बहार भेल इहो तन्त्र-साधना'क उत्कृष्ट साधक व्यक्ति छला। (6) मैथिल पण्डा-समाज'क प्रधान ओ श्रेष्ठ शिवाराधाक लोक रहथि। अस्तु,

उपर्युक्त गुण-समूहसँ विमण्डित ऐ कवि व्यक्तित्वमे, अभिनव विद्यापति'क सहसा झलक पएब—कोनोटा असम्भव नहि दृष्टिगोचर होइछ। वास्तवमे, ई 'अभिनव विद्यापति' सम्पूर्ण विहार-वासी लोक-समूह'क लेल महत्तम गरिमावान् कवि-पुङ्गव रहथि। इहो महान् लोकगीतकार, अपन आरम्भिक जीवनमे, महाकवि कालिदास, गीतिकाव्यकर्त्ता जयदेव तथा कवि-कोकिल विद्यापतिये-जेकाँ नितान्त शृंगार-प्रधान

रचना लीखल करथि। ई प्रख्यात साधक शिवचन्द्र विद्यार्णव के शिष्य तथा तीर्थ पुरोहित स्व. गंगा फलाहारी जी'क प्रधान शिष्य बूझल जाइत छथि। हिनक प्रभूत सरस रचनावलीकेँ स्व. कीर्त्ति गोस्वामी नामक गायक गओल करथि। मुदा, जखन ई सरदार पण्डा'क प्रतिष्ठित पद पर अभिषिक्त कऽ देल गेला तँ वैह कीर्त्तिगोस्वामी हिनका कहलथिन—आव, अपनें ऐ रसिकता-पूर्ण काव्य-निर्माण'क योजनाकेँ बन्द कऽ दियऽ एवं ईश्वराराधनामूलक भक्तिमय पद्यावली'क संरचना कएल करू। कविवर भवप्रीतानन्द'क रचनामे, कहल जाइछ, तदुत्तरे उल्लेखनीय मोड़ प्रारम्भ भऽ गेल। दरअसल, कोनो युवक कवि, आरम्भिक जीवनमे रसाक्त रचना लिखवे करैछ। 'ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः।' (कालिदास) कामिनि करए असनाने, हेरितहिं हृदय हनए पँचवाने (विद्यापति)। तएँ, भवप्रीताओ लिखैत रहथि—'तोर जुआनी तोरे रहतौ छनभर हमरो काज।' आदि।

---

# ३

# मठाधीश (सरदार पण्डा) : पद प्राप्ति'क आधार

कहबै-लेल भने कहल जाइत छल पण्डा-प्रधान (सरदार पण्डा) मुदा, हमरा बुझनें, ई 'आस्पद' आरक्षित रहए केवल, कोनो कुल-विशेष'क ज्येष्ठ सन्तान-लेल। तएँ, ऐ पद पर, प्रभूत प्राक्तन कालसँ, सिर्फ बेलौंचे-वंश'क ज्येष्ठ सन्तान अभिषेकित कएल जाइत रहला। मुदा, गम्भीरतापूर्वक चिन्तन केला उत्तर, ऐ प्रक्रियामे यौक्तिकता'क औचित्य'क अपेक्षा, परिपाटी-परिपालन'क प्रबलतम हाथ, प्रत्यक्षतः प्रतिभासित होइछ। किएक तँ, विप्र-वृन्दो'क बीच जँ वरिष्ठता'क विचार कएल जाइत तँ भगवान् मनु'क स्पष्ट आदेश छलः –

विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठ्यं क्षत्रियाणां तु वीर्यतः।
वैश्यानां धान्यधनतः शूद्राणामेव जन्मतः॥ 2/155

अर्थात् ब्राह्मण लोकनिमे ज्येष्ठता'क विचार ज्ञान-बलें हो राजन्य-वर्गमे शक्ति'क बले। धनधान्य'क आधार पर वैश्य'क ज्येष्ठत्व विचार करक चाही। जन्मना केवल शूद्र-समाजमे, वरिष्ठता'क निर्णय हो। अस्तु,

उक्त पृष्ठाधारमे, ब्राह्मण लोकनि'क मध्य, जे गोटा, ज्ञान-विज्ञानमे प्रतिष्ठित ओ प्रभूत परिपक्व रहितथि तनिकर ज्येष्ठत्व स्वीकार कएल जाइत। मुदा, ऐठाम तँ पूरा जातिगत व्यवस्था'क विचार नहि रहैक' तखन तँ कोनो वंश'क ज्येष्ठत्व वा श्रेष्ठत्व'क, गैहिक उत्तराधिकार-लेल जैह नियम परिपालनीय रहैक; तकर पूर्णतः परिपालन करब सैह समुपयुक्त ओ समुचित छलैक। अतः, मिथिलामे, म. म. चण्डेश्वर ठाकुर विरचित जे *राजनीति-रत्नाकर* पुस्तक अछि ताहि मे स्पष्ट कहल गेल अछि जे

राज्यं पुरोविवाहं च सपिण्डी करणं पितुः।
गुणवत्सु कनिष्ठेषु ज्येष्ठ एव समर्हति॥ (पृ. 70)

अर्थात् 'पिता'क सपिण्ड' श्राद्ध कार्य, पूर्व विवाह ओ वैभवाधिकार (मालिकियत) गुणवन्त कनिष्ठ सन्तति सभ'क अछैतहुँ, जेठ सन्तानेकें करबा'क शास्त्रीय विधान अछि।'

तएँ, बेलौंचे-वंशमे, तही नियमानुसार, यदि कोनो व्यक्ति-विशेषकें, कतवो विवाह रहैत छलनि तँ समस्त पत्नी-मण्डलीमे, जनिके पुंसन्तति (पुरुष सन्तान) वयसा

ज्येष्ठ रहैत छलथिन; सैह पिता'क वैभव, वा श्राद्धादि क्रिया-कलाप'क उत्तराधिकारी बूझल जाइत छला। मैथिल ब्राह्मण-समाजमे, ऐ प्रकार'क आचार-संहिता प्रायशः मिथिला वा परदेशमे स्थित जातीय लोक परिपालन करैत छला।

16 म शताब्दी'क गोस्वामी तुलसीदास जी, निज *रामचरित मानस*मे, यद्यपि ऐ ज्येष्ठत्व-विचार'क विरोध करैत अनुभूत होइत छथि तथापि, महाराज दशरथ जी'क तीनू पत्नीमे, कौशल्या'क जेठ सन्तान, भगवान् रामचन्द्रे'क राज्याभिषेककेँ ओहो समीचीन बतौने रहथि।

जनमे एक संग सबभाई भोजन सयन केलि लड़िकाई।
करनबेध उपवीत विआहा संग-संग सब भये उछाहा।
विमलवंश यह अनुचित एकू बंधु विहाय बड़ेहि अभिषेकू।

(अयोध्याकाण्ड, दो. 9 के बाद)

जेठ स्वामि सेवक लघुभाई यह दिनकर कुल रीति सुहाई।

(अयोध्याकाण्ड, दो. 14 के बाद)

तएँ, 14, वर्षधरि, भगवान् रामकेँ जंगलवास करबवितहुँ, अयोध्या राज'क वास्तविक उत्तराधिकारी भगवान् रामचन्द्रेकेँ मानल गेलनि।

प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्ही; सादर भरत सीस धरि लीन्हीं।
चरन पीठ करुणानिधान के, जनु जुग-जामिक प्रजा प्रान के॥

(अयोध्याकाण्ड, 315 दो. के बाद)

आओर, रामानुज श्रीमान् भरतजी महाराजो तहिना तै खराम केँ—

नित पूजत प्रभु-पाँवरी प्रीति न हृदय समाति।
मागि-मागि आयसु करत राज-काज बहुभाँति॥

(अयोध्या काण्ड 325 दो.)

वस्तुतः, त्रेतामे, जाधरि 'धर्म' भगवान'क तीन चरण विद्यमान छलनि, तावत्पर्यन्त, ऐ पवित्र भारतभूमि पर, उत्तराधिकार-लेल भाइ-भाइ'क बीच कोनो उल्लेखनीय झगड़ा भेल हो-तेहन चर्चो नहि उपलब्ध होइछ। मुदा, द्वन्द्वात्मक द्वापर-युग'क पदार्पण होइतहि कौरव-पाण्डव-संग्राम प्रारम्भ भऽ गेल। जे महा समर कराल कलि'क प्रवेश केला उत्तर, आओरो विकराल रूप धारण कऽ लैत अछि।

खास कऽ कए मुसलमानी शासन-कालमे, जखन गद्दीनसीन राजालोकनि'क द्वारा, भाइ-भाइमे पितृ-रिक्थकेँ हथियेबा-लेल, घमासान युद्ध शुरू भऽ गेल करए; तँ तत्कालीन भारतवर्ष'क आम अवाममे, तकर देखा-देखी भऽ जएब अत्यन्त स्वाभाविक छलैक। नै केवल, उत्तराधिकार'क क्रममे, गृह-कलह प्रारम्भ भेल अपितु मन्दिर-मस्जिद

ओ गुरुद्वारा'क उत्तराधिकार-हेतु सेहो लड़ाइ आरम्भ भऽ गेल छल। अहीठाम, बाबा वैद्यनाथ धाममे की भेल?

अनुश्रुत अछि ऐठाम गुरु गोरखनाथ-अनुगामी सिद्ध-महात्मा लोकनि'क, ऐ मन्दिर पर, प्रारम्भिक वर्चस्व छल। हुनका लोकनि'क, बाबा मन्दिर'क अव्यवहित पश्चिम दिग्विभागमे, हाल-हाल धरि 'नाथ-वाड़ी' कऽ कए एक भूमिखण्ड छल। ओलोकनि, ऐ ज्योतिर्लिङ्ग'क उपर आत्मिक एकच्छत्राधिकार, प्रभूत दीर्घ कालसँ—स्थापित केने छला। ऐठाम सामान्य पाठक सभसँ एतबा अवश्य ध्यातव्य थीक जे नाथ पन्थ'क आदिम गुरु विदेहराज 'दत्तात्रेय' मानल गेल छथि। अतः, नाथमतावलम्बी महात्मालोकनि पुराकालिक विदेहराज'क कट्टर अनुगामी सिद्ध सन्त लोकनि बूझल गेल छथि।

मुदा, कहल जाइछ तै नाथ-पन्थी साधु-संन्यासी-समाजसँ, जे लोकनि सत्त्वाधिकार छिनलनि; से सभ पश्चात् समयमे 'मठपति'क अभिधानें अभिहित भेला। ई 'मठपति' उपाधिधारी विप्रवृन्द, वस्तुतः, वेश बलवन्त ओ विक्रमी मानव-समाज रहथि। हिनका-लोकनिकेँ गृध्रकूट (गिद्धौर)-नरेश'क पूर्ववर्त्ती कुलीन कुलधर लोकनि, ससम्मान मिथिलासँ ऐठाम मँगवा, मन्दिर'क प्रधान पुजेगरी'क आस्पद प्रदान केने छलथिन। ई अतुलित तपोबली ओ संयमधनी भरद्वाज गोत्रीय बेलौंचे गढ़मूल'क मैथिल महीदेवता (भूसुर) लोकनि रहथि।

मुदा, हिनका लोकनि'क एक उपाध्याय (ओझा) गच्छ जखन, पुनर्वार मिथिलासँ जुमल छलथिन तँ ई लोकनि आओरो उग्र तपस्विता-बल प्रदर्शित कए, मन्दिर'क पूरा अधिकार, अपन हाथमे लऽ लेलथिन। ई लोकनि, लगभग 300 वर्षसँ, वर्त्तमान वैद्यनाथ-शिव'क प्रधान-पुजेगरी'क पद पर कार्यरत छथि। भने, दियादी द्वेष ओ' कौलिक कूटाचार, हिनको लोकनिकेँ वेश दुर्बल बनबैत गेल छनि।

जखन, प्रसिद्ध मल्लविद्या-निपुण पं. उमेशानन्द ओझा ऐ वंशमे, उत्पन्न भेला-तँ ओ सर्वप्रथम, ज्येष्ठत्व क्रम-विचार पर, बलात् प्रहार करब प्रारम्भ कऽ देलनि। गद्दी'क असली हकदार पं. शैलजानन्द ओझा श्रीमान् उमेशानन्द ओझासँ उमर ओ सम्बन्धमे, कनिष्ठ पड़ैत छला। फलतः, उमेशानन्द निज कायिकी पशुशक्ति प्रदर्शित करब प्रारम्भ कऽ देलनि। शालीन ओ सुधी शैलजानन्द ओझा सिंहासन-हेतु निज कुटुम्बीमे संग्राम करब नितान्त असमीचीन मानि प्रधान-पुजेगरी-पदकेँ पकड़ने रहबा (दँतिया कए धेने रहबा) सँ पूर्णतः विरक्त भऽ गेला।

बलिष्ठ उमेशानन्द ओझा (सरदार पण्डा) अपन मनमौजीपना-लेल, वेश कलंकित बनए लगला। उक्त उमेशानन्द, नै केवल निज खन्दानकेँ कलहायित कऽ देलनि, वरञ्च, सम्पूर्ण पण्डा-समाजसँ 'जजिया टेक्स'-जेकाँ असूल करब प्रारम्भ कऽ देने छला। हिनका समयमे, यदि कोनो पण्डा'क यजमान सवत्सा धेनु बाबा'क नामे दान करैत अथवा केओ दाता, अशर्फी चढ़ा निज तीर्थ-पुरोहित'क सम्मान करैत, तँ ई सभगोटासँ, कोनहुना सुनि लेला उत्तर, निज खजाना-हेतु, तकरा सभकेँ प्रत्यर्पित करबा लीतथि।

पूरा पण्डा-समाज, हुनक तेहना जोर-जुल्म ओ जबर्दश्ती'क वर्त्तावसँ उत्पीड़ित भऽ गेल रहथि।

परन्तु, तही वेलौंचे वंशमे, दियादी काट-चलेबा'क नीतिसँ, कतेक सत्पुरुष लोकनि, समय-समय पर बहुत किछु सामाजिक सुधार-हेतु सेहो सम्मुख अबैत गेल रहथि।

पं. कमललोचन झा ओ पार्वतीचरण द्वारी आम पण्डा लोकनि'क सत्त्वाधिकार-रक्षार्थ बहुत-किछु युक्ति-जोगार बैसोने छला। पण्डा-धर्म-रक्षिणी-सभा'क संघटन पं. कमललोचन झा प्रारम्भ करबौलनि सर आशुतोष मुखोपाध्याय (जे पार्वती चरणद्वारी'क यजमान रहथि) केँ कहि, न्यायालयमे, बाबा-पर छुआ कए देल दान-दक्षिणा सम्बद्ध तीर्थ-पुरोहितकेँ भेटनि-से सुधार-कार्य 'द्वारी' जी'क माध्यमे भेल छल।

पं. विनोदानन्द झा (विश्रुत काँग्रेसी नेता तथा बाद मे बिहार'क मुख्यमन्त्री) 1953 ई.मे, आचार्य विनोवा भावेकेँ, वैद्यनाथ-मन्दिरमे, हरिजन-प्रवेश हेतु प्रोत्साहित केने छला। तत्कालीन सरदार पण्डा वर्त्तमान 'चरितनायक' यैह भवप्रीतानन्द ओझा जी छला; अनुश्रुत अछि ई तै आचार्य विनोवाकेँ मन्दिरमे हरिजन-प्रवेश'क हेतु लिखित अनुमति प्रदान केने छलथिन। तहिना, स्वयं भवप्रीतानन्द ओझा (सरदार पण्डा)'क सम्बन्धमे, आम लोक'क अनुकथन अछि जे ई, 41-42 वर्ष'क आत्म पण्डा-प्रधानत्व कालावधिमे, बहुतो उदारवादी दृष्टिकोण अपना सम्पूर्ण पण्डा-समाज हेतु भूयमान अनेक जोर-जुल्मकेँ प्रशमित केने छला।

अही बेलौंचे वंशमे, पं. शिव राम झा भेल रहथि। हिनका द्वारा अनेक शिक्षा संस्थान'क स्थापना ओ समाज-सेवा'क बलवन्त ओ उल्लेखनीय कार्य-कलाप सभ भेल छल।

अस्तु, ज्येष्ठत्व-विचार-रूप विषयकेँ उठाकए हम यैह ज्ञापित करक प्रयत्न कएल अछि जे निज खंदानहि'क दियादी डाह सँ उक्त पण्डा-प्रमुख'क आस्पद आइ बनर बाँटमे पडि, अवाञ्छनीय उलझन मे फँसि गेल अछि। आपसी फूट'क वस्तुतः, एहने कुफल, कोनो कुटुम्बीकेँ हाथ लगैत छनि। सरिपौं, जखन राज्ये बदलि जाइछ तँ ने ओ नगरी ने ओ ठाम'क उक्ति चरितार्थ भऽ जाइत छैक। सरदार पण्डा'क आस्पद आइ किछु तेहने परिस्थितिमे पड़ि, उलझनमे फँसि गेल अछि।

ओना, कोनो मठ-मन्दिर'क प्रधानत्व-पदकेँ स्वीकार केने की फजीहति होइछ-एतद्विषयक वाल्मीकि *रामायण* (उत्तर का., आ. 59'क पश्चात् वर्णित प्रक्षिप्त सर्ग-1) मे उल्लिखित तै कथा'क सार, कोनो प्रधान पुजेगरीकेँ अवश्य जानि राखक चाहियनि जैमे कहल गेल अछि जे—अवध-नरेश राजा रामचन्द्र'क दरबारमे, एकदिन निज अभियोग लऽकए एकगोट 'श्वान' पहुँचल। ओ, कहलकनि—हम विशुद्ध निरपराधी-अछैतहुँ, 'सर्वार्थसिद्धि' नामक भिक्षु-द्वारा मस्तकाघात पेलौं अछि। तएँ निज न्याय-लेल हम अपने'क दरबारमे उपस्थित भेल छी। तैठाम आगाँ कहल गेल अछि जे

अयोध्या-नरेश राजा राम निज सभासद् सँ परामर्श केला उत्तर, तही श्वान केँ तै भिक्षु-लेल दण्ड-निर्णय'क अधिकार देलथिन। किएकतँ, ओ सर्वार्थसिद्धि नामक भिक्षु निज अपराध कबूलि लेने रहथि।

ओ श्वान श्रीरामचन्द्र'क सभामे निज न्याय-लेल, तै भिक्षुकेँ दण्ड-दियेबा'क प्रक्रियामे, निवेदन केलनि—सरकार! ऐ भिक्षुकेँ कालञ्जरमे स्थित मठ'क कुलपति-पद पर अभिषिक्त करबा देल जाए। तै श्वान'क कथनानुसार, ओइ भिक्षुकेँ पूर्ण मान-दानपूर्वक, हाथी पर सवार करबा कए ओइ मठ'क मठाधीश-हेतु प्रस्थित करबा देल गेलनि। मुदा, तै ठाम'क समस्त सभासद्, जखन तै कुत्तासँ जिज्ञासा केलथिन—तों, तै भिक्षुकेँ एहन वर-तुल्य दण्ड-विधान किएक करबौलहिन? तखन, ओ प्रत्युत्तरमे कहलकनि-विद्वद्वर द्विजगण! हमहूँ पूर्वजन्ममे, तही स्थान'क महन्थ छलौं। यद्यपि, हम बहुत सावधान, पूर्ण विनीत, शीलसम्पन्न, द्विज-देवता-पूजक, समस्त प्राणि-जगत'क हितचिन्तक तथा देव-द्रव्य'क रक्षक रही, तथापि कुलपतित्व'क दोषसँ, हम ऐ दुर्योनिकेँ प्राप्त भेल छी। तैठाम, ई भिक्षु तँ अत्यन्त क्रोधी, असंयमी, नृशंस, मूर्ख एवं अधार्मिक अछि। तै परिस्थितिमे, तैठाम'क कुलपतित्व-अङ्गीकारव; एकरा-लेल वरदान नहि वरञ्च, घोर अभिशाप भेलैक अछि। अस्तु, कोनो कल्याणकामी पुरुषकेँ मठाधिपता भूलोसँ नहि अङ्गीकार करक चाही। मठाधिपता, कोनो पुरुष'क सात पुश्त तककेँ नरकमे खसा दैछ। जे ब्रह्मस्व, देवांश, स्त्रीधन, बालधन किंवा निज-प्रदत्त धन'क अपहरण करैछ ओ निज इष्ट-मित्र'क समेत 'अवीचिमान' नामक नरकमे खसैछ। तएँ, प्रमादवशो विवेकशील लोककेँ, ऐरूप'क पद-भार नहि ग्रहण करक चाही।

श्वान'क तद्रूपक विचार सुनि कए समग्र सभामण्डली आश्चर्यान्वित भऽ गेला। कहल जाइछ काशी पहुँचिकएऽ ओ श्वान प्रायोपवेशन पर बैसि गेल।

---

# कृतित्व

वस्तुतः, जखन कखनो, किनको कृति'क हमरा परिचय प्रस्तुत करए पड़ैछः तँ संस्कृत'क निम्नोद्धृत श्लोक, हमरा अरबद्धि कए मोन पड़ि जाइछ। जेना—

ग्रन्था-जलाशयाराम-सुसन्तति-सुरालयाः।
पञ्चवंशाः समाख्याता न्यूना चोत्तरतो भुवि॥

तात्पर्य, ग्रन्थ, पोखरि, बगीचा, सुसन्तान, आओर देव-मन्दिर—यैह पाँच गोट किनको कृतित्व'क खान्दान बूझल गेल अछि। अहू पाँचोमे उत्तरोत्तर लघुता ख्यापित कएल गेल छैक। जे 'ग्रन्थ'-निर्माण कऽ कए गेल छथि; से, सर्वोपरान्त निक्षिप्त कएल गेल-सन जँचैत छथि। (किएकतँ एकरा प्रकाशित हेबाधरि वहुतो बाधा होइत रहलैक अछि।)

ओना, 'कीर्त्ति' कोनो क्षेत्र'क हुअओ; ओ जीवन-दायिनी थिक। 'कीर्तिर्यस्य स जीवति'—ऐ सम्बन्धमे, *महाभारत*'क वनपर्व (अ. 199) मे, एकगोट बहुत रोचक ओ बलवन्त कथा अबैछ। पाण्डवलोकनि, एकबेर, मार्कण्डेय ऋषिसँ पुछलथिन—की किओ गोटा अपनहुँसँ अधिक बृद्ध (चिरंजीवी-किएक तँ आठम चिरजीवी यैह मानल गेल छथि—'मार्कण्डेय मथाष्टमः), ऐ मही मंडल पर छथि?

मार्कण्डेय जबाब देलथिन—एक समय स्वर्गसँ च्युत भऽ गेला पर राजर्षि इन्द्रद्युम्न (सम्भवतः, कोनो जनक-विशेष) हमारा समीप आबि कए ई कहलनि जे हुनक 'कीर्त्ति' नष्ट भऽ गेल छनि, तएँ, ओ पुछलनि जे की हम हुनका चिन्हैत छियनि? जखन, हम हुनका चिन्हबामे, निज असमर्थता प्रगट केलियनि; तखन, ओ एकगोट अश्व'क रूपधारण कऽ लेलनि आओर हमरा, हिमालय पर्वत पर, ओइ 'प्रावारकर्ण' नामक उलूक'क नजदीक लऽ गेला जे हमरोसँ बूढ़ रहए। ओइ उलूककेँ, हमरा लोकनि 'इन्द्रद्युम्न-सरोवर'मे निवास करएवला, तै 'नाड़ी जंघ' नामक 'बक'क सन्निकट लऽ गेलिऐक जे तहू उलूकसँ वेशी बूढ़ छलए। ओ 'बक' हमरा लोकनिकेँ, तही सरोबरमे, निवास केनिहार, अकूपार' नामक 'कच्छप'-दिशि इशारा केलक। 'अकूपार' इन्द्रद्युम्नकेँ जनैत छलनि। अतः, ओ जनौलकनि कि 'इन्द्रद्युम्न' राजर्षि 1000 खेप, यूप'क स्थापना केने रहथि तथा 'इन्द्रद्युम्न' नामक सरोवर तै गो-समूह'क पैरसँ खोदा

कए वनल थिकैक जकरा सभकेँ, ई राजर्षि, ब्राह्मण-लोकनि'क दान-दक्षिणामे अर्पित केने रहथिन।

तदुपरान्त, आकाशसँ, तैठाम एकगोट रथ पहुँचलैक आओर एकगोट दिव्यवाणी, तै 'इन्द्रद्युम्न'केँ पुनः, स्वर्गमे बजौलकनि। तही सम्बन्धमे, ई श्लोक सभ कथित भेल रहैक—

दिवंस्पृशति भूमिञ्च शब्दः पुण्यस्य कर्मणः।
यावत् स शब्दो भवति तावत्पुरुष उच्यते॥13॥

अकीर्त्तिः कीर्त्यते लोके यस्य भूतस्य कस्यचित्।
स पतत्यधमान् लोकान् यावच्छब्दः प्रकीर्त्त्यते॥14॥

तस्मात्कल्याणवृत्तः स्यादनन्ताय नरः सदा।
विहाय चित्तं पापिष्ठं धर्ममेव समाश्रयेत्॥15॥

(*महाभारत*, वनपर्व, 199/13-15)

तदनन्तर, ओ राजर्षि 'इन्द्रद्युम्न', हमरा तथा तै 'उलूक'केँ अपन-अपन स्थान पर पहुँचा देलनि तथा अपने ओ पुनः तही रथपर बैसि कए स्वर्गकेँ लौटि गेला।' पाण्डवलोकनि 'इन्द्रद्युम्न'केँ पुनः स्वर्ग प्राप्त करेबा'क कारणें महर्षि मार्कण्डेय'क भूरि-भूरि प्रशंसा केलथिन।

ऐठाम, उक्त कथा उद्धृत करबा'क हमर दूटा अभिप्राय-प्रकाशन थिक। पहिल ई जे किनको दीर्घायुष्मत्ता'क विचार भारतीय संस्कृतिमे, तै व्यक्ति'क कीर्त्ति-अकीर्त्ति पर निर्धारित होइत छल। 'इन्द्रद्युम्न' टा-लग नहि, अपितु आयु'क विचारसँ मार्कण्डेयऋषि, 'प्रावारकर्ण' नामक घूक, 'नाड़ी जंघ' नामक बक तथा 'अकूपार' नामक कच्छपोसँ छोट छला—ई स्वयं मार्कण्डेय ऋषि, व्यंजनासँ अभिव्यक्त केलथिन। दोसर अभिप्राय ई भेल जे 'कीर्त्ति' कोनो क्षेत्र'क हो, तकर जननिहार जाधरि, एकोटा जीव, ऐ मर्त्यभुवनमे रहैछ ओ व्यक्ति जीवित रहितहि छथि। तएँ, व्यंग्यार्थ इहो भेल जे मार्कण्डेय महर्षि, कीर्त्तिशाली इन्द्रद्युम्न राजर्षिसँ अपन उमर छोट जनौलनि।

अस्तु, संस्कृत जगतमे, निम्नलिखित श्लोक सभ बहुत महत्त्वाधायक बूझल जाइछ। जेना—

स्वयं तथा न कर्त्तव्यं स्वगुणख्यापनं पुनः।
स्वगुणख्यापनं युक्त्या पर-द्वारा प्रयोजयेत्॥
करिष्यन्न प्रभाषेत कृतान्येव तु दर्शयेत्।
धर्मकामार्थ कार्याणि तथा मन्त्रो न भिद्यते॥

अपनेसँ, स्वगुणख्यापन नहि करी। निज गुणावली'क बखान, युक्तिसँ दोसर-द्वारा करबावी। ताहूमे कर्त्तव्य कर्म'क उल्लेख तँ कखनौ नहि करी; सिर्फ कृतकर्मकेँ दरशा

देब समीचीन बूझल गेल अछि। किएकतँ अर्थ, धर्म ओ काम-सम्बन्धी कार्य सभ'क रहस्य तैसँ उघार नहि भऽ पबैत छैक।

परैः प्रोक्ताः गुणा यस्य निर्गुणोऽपि गुणी भवेत्।
इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः॥

जकर गुणावली, कोनो दिगरलोकेँ, अनुकीर्त्तित होइछ—से, यदि अल्पगुणवन्तो रहैछ; तँ, दरअसल, ओकरे गुणशाली कहल जेबा'क चाही। निजमुखेँ, आत्म गुण-गण'क प्रशंसा केने, साक्षात् देवराजो (इन्द्रो) लघुताकेँ प्राप्त करैत छथि।

सदुपाध्याय श्रीमान् भवप्रीतानन्द ओझामे, वस्तुतः नाना भाँति'क गुणगण विद्यमान छलनि। ओ प्रख्यात शिवाराधक, मन्दिर प्रतिष्ठापक, कूपनिर्मापक, अनुदान-प्रदाता, देवी-पूजक, हरिहर-मेलापक, प्रकृति'क पुजारी, लोक-गीत-निर्माता, भाषा-साहित्य-प्रणयी, जीव-जन्तु-पालक, कवि-कलाकार-प्रेमी ओ' गुणी-गवैया लोकनि'क सम्मानकर्त्ता रहथि। हिनक कृतित्व'क दर्जनो क्षेत्रमे उद्घाटन होइछ। मुदा, ऐठाम, हम संक्षेपमे, हुनक किछु मुख्य-मुख्य कृतित्व'क परिचय-उपस्थापित कऽ देब; प्रसरोचित बुझैत छी।

(1) वैद्यनाथ-शिव-मन्दिर'क प्राङ्गण स्थित भुवनेश्वरी तथा महालक्ष्मी-सहित भवगती 'तारा' जी'क प्राण-प्रतिष्ठा ओ मन्दिर-निर्माण माननीय भवप्रीतानन्द जी'क कर-कमलें भेल छल।

(2) उक्त मन्दिर'क प्राङ्गण स्थित सूर्य मन्दिरसँ, जखन भगवान् सूर्यदेव'क 'पाषाणी प्रतिमा' चोरी भऽ गेल छल तँ वर्त्तमान 'सूर्यनारायण देव'क प्रस्तरी मूर्त्ति, श्रीमान् सदुपाध्याय जीये निर्मापित करबा कए, प्रतिष्ठित केने रहथि।

(पाठक लोकनि'क जानकारी-हेतु, ऐठाम एक गवेषणा'क विषय, हम उल्लिखित कऽ देब अवसरोचित बुझैत छी। स्व. भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द'क कथन छलनि, जे वैद्यनाथ-मन्दिर'क प्राङ्गणमे, बहुतो जैनी प्रतिमा सभ हिन्दू मूर्त्ति, मानिकए पूजित भऽ रहल अछि। *भारतेन्दु-ग्रन्थावली* (*भारतेन्दु-समग्र*, सं. हेमन्त शर्मा)'क पृष्ठ सं. 1045 पर, लीखल अछि—"मन्दिर के चारों ओर, देवताओं के मन्दिर हैं। कई प्राचीन जैन मूर्त्तियाँ, हिन्दू मूर्त्ति बनकर पूजिता हैं। एक पद्मावती देवी की मूर्त्ति बड़ी सुन्दर है, जो 'सूर्यनारायण' के नाम से पूजिता है। यह मूर्त्ति पद्म पर बैठी है और दो बड़ी सुन्दर कमल की लता दोनों ओर बनी है। उस पर अत्यन्त प्राचीन पाली अक्षर में कुछ लिखा है, जो मैंने श्री बाबू राजेन्द्र पाल के पास पढ़ने को भेजा है। दो भैरव की मूर्तियाँ, जिनमें एक तो किसी सिद्ध जैन की और एक जैन क्षेत्रपाल

की है, बड़ी सुन्दर हैं। लोग कहते हैं कि भागलपुर ज़िले में किसी तालाब में से निकली थीं।"

(3) मन्दिर'क द्वार पर एकगोट शिवाला आओर सुलतानगंज'क गंगा-तट पर दोसर 'शिवाला', माननीय सदुपाध्याय जी'क कीर्त्तिकेँ अद्यावधि द्योतित करैछ।

(4) देवघर'क घड़ीदार-परिवार, प्रभूत प्राचीनकालसँ, शरत्कालीन दुर्गा-पूजनोत्सव, निज द्रव्य-व्यय-द्वारा करवबैत अबैत छथि। तनिकालोकनिकेँ आर्थिक सहायता-पहुँचेबा'क अभिप्रायसँ, मान्यवर श्रीमान् भवप्रीतानन्द जी, एकगोट भव्य-भवन तैठाम बनावा देने छथि। आब, तकर किराया'क आमदनीसँ, ओ दुर्गा-पूजा प्रतिवर्ष सोल्लास सम्पन्न भेल करैछ।

(5) निजावास (भीतर खण्ड)'क अत्यन्त समीपमे, श्री श्री दुर्गा जी'क पूजन-मण्डप ओ तकर अव्यवहित पूर्वभागमे, श्रीमान् सदुपाध्याय जी, एकगोट वेश गम्भीर कूप-निर्माण करवौने रहथि। वावा मन्दिरस्थ 'चन्द्रकूप', समय-कुसमय यदि शुष्कप्राय बनि जाइछ तँ तही कूप-जल सँ, सहस्राधिक शिवोपासक, वावा वैद्यनाथकेँ जलाभिषेक करैत छथि। (भऽ सकैछ अहू कूपमे, कोनो अकूपार नामक कच्छप निवास करैत हुअए जे दिवंगत सदुपाध्याय जी'क यशोगाथा सुनेबा-लेल, कखनो ऊपर आवि जा सकैछ)।

(6) देवघरमे, एकगोट नगर स्तरीय सार्वजनिक हिन्दी पुस्तकालय छल जाहि-हेतु दर्जनो हिन्दी पुस्तक सभ'क अलावा एकगोट सबलतर काष्ठ 'आलमीरा' श्रीमान् सदुपाध्याय जीये प्रदान केने रहथि।

(7) जखन, स्वामी विवेकानन्द जी'क मतावलम्बी महात्मा लोकनि देवघरमे, परमहंस श्रीरामकृष्ण देव'क नाम पर, कोनो रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ'क संस्थापना करब प्रारम्भ केलनि, तँ माननीय सदुपाध्याय जी हुनका लोकनि'क उत्साह-वर्धनार्थ, तै कालखण्डमे, प्रतिवर्ष 500 रु.'क आर्थिक सहायता, बहुत कालखण्डधरि दैत रहलथिन।

(8) जखन, देश-विदेश'क सुदूरवर्त्ती तीर्थयात्री-लोकनि, वैद्यनाथ शिव'क दर्शन-पूजन-हेतु समेकित होइत छला; तँ, हुनका लोकनि'क मनोरञ्जनार्थ तथा आत्म जन्तु-परितोषिणी वृत्ति'क चलतें, सदुपाध्याय जी निजावास'क भीतरखण्डमे, एकगोट अनुपम 'चिड़ियाखाना'क निर्माण करबौने छला; जैठाम रंग-बिरंग'क विहङ्गम-व्रात'क अलावा चौकस परिचर सभ'क सेहो नियुक्ति ओ निगरानी हर-हमेशा रहैत छलैक।

(9) सदुपाध्याय जी'क दर्शन-साक्षात्कार-हेतु जखन-जखन ख्यातिप्राप्त ओ विशिष्ट-विशिष्ट अतिथिवृन्द पहुँचैत छला तँ माननीय भवप्रीतानन्द जी महाराज हुनका लोकनि'क आन-आन जे कोनो औपचारिक स्वागत-सत्कार

करैत छलथिन—से, तँ मठाधीश'क परम्परा ओ प्रचलन'क अनुकूल कएले जाइत छलनि; मुदा, तै विशिष्ट-विशिष्ट अतिथिवृन्द'क उत्कृष्ट मनोरंजनार्थ एकगोट संगीत-मण्डली'क आयोजन सेहो करबा दैत छलथिन। ताहि संगीत-मण्डलीमे, पूजनीय भवप्रीतानन्द'क झूमर-घैरा-गायन'क कार्यक्रम प्रधान-रूपें चलैत छलैक। गायक लोकनिमे, स्थानीय कलाकार लोकनि'क वेश झमटगर मण्डली रहैत छलनि। स्व. शिरोमणि ठाकुर, स्व. विश्वनाथ ठाकुर, स्व. महेश्वर पाण्डेय, स्व. जयनारायण खवाड़े, श्री देवेन्द्र झा, श्री उपेन्द्र झा, श्री शंकरदत्त झा द्वारी ताहि गायक मण्डलीमे, मुख्य भूमिका अदा करैत छला।

(10) पूज्यचरण श्रीमान् सदुपाध्याय जी द्वारा प्रतिवर्ष अनुष्ठित हुअऽवला शारदीय दुर्गा मैया'क सविधि तान्त्रिकी सपर्या, सैकड़ो सुधी समीक्षक समाज-लेल नितान्त उत्प्रेरक ओ उरः परावर्त्तक रहैत छल।

## ओझा जी (सरदार पण्डा)'क प्रकाशित कृति परिचय

दिवंगत महान् कवि, सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द जी, सरिपौं, निज पश्चात्कालिक जीवनावधिमे, एक सर्वसाधन सम्पन्न पुरुष भऽ गेल रहथि। ओ यदि चाहितथि—तँ कोनो सुयोग्य विद्वान् पुरुषकेँ, निज समग्र रचनावली'क सम्पादन-भार दए, अपन पूर्वापर प्रकाशित समस्त पद्यावलीकेँ संगृहीत करबा, एक विलक्षण ग्रन्थावली'क आकार प्रदान करबा सकितथि; मुदा, तेहन कोनो ठोस काज, निज जीवनावधिमे, ओ नहि कऽ सकला। से एकगोट कचोट'क विषय।

प्रायः, बहुतो महान् साधक, निज कृतित्व'क प्रति अहिना असावधान दृष्टिगत भेला अछि। ई काज, लेखक के परिसर'क लोक सभकेँ, सतर्कतापूर्वक कऽ लेब समुचित बूझल गेल अछि। देवघरमे, तै कालखण्डमे, मुद्रण-प्रेस'क सेहो प्रचुर असौविध्य छलैक। ई सदुपाध्याय जी'क निज दूरगामी सूझ-बूझ'क परिचायके कहक चाही जे निज रचना सभ-लेल ओ एकगोट गायक-दल नियुक्त कए, तनिके लोकनि'क कण्ठमे, अपन रचना दऽ देल करैत रहथि। जनकण्ठधरि पहुँचल सैह रचना सभ, आइ हिनक अप्रकाशित रचनावलिओ'क प्रति आकर्षण जगा रहल अछि।

ओना, कविवर भवप्रीतानन्द'क गायकवृन्द, हिनक रचनामे, नै केवल बहुत स्थल पर फेर-बदल करैत गेलथिन वरञ्च सदुपाध्याय जी'क कतिपय रचनावलीकेँ निज-निज नामें, प्रकाशित करा लेबा'क सेहो कुकृत्य कऽ चुकल रहथिन। *बृहत् झूमर रसमंजरी*'क तदनुरूपे कविवर 'उमानन्द' जी'क कतिपय पद्यावलीमे, कतेक ठाम आन व्यक्ति'क नाम घुसेरल परिलक्षित होइछ।

सदुपाध्याय जी निज रचना-निकुञ्जकेँ, यदि सम्यक् सम्पादित स्वरूप नहि प्रदान करबा सकला तँ तकर पृष्ठाधारमे, हुनक साधना-तल्लीनता सेहो एकगोट महती

त्रुटि-कोटि'क मानल जा सकैछ। ओ तँ अविरल निज आध्यात्मिकी साधना-संस्तृतिमे, रमल रहएबला साधक पुरुष रहथि। फलतः, आत्म-संवेदनशीलता'क क्षणमे, निसर्गतः विनिःसृत रचना-कृतित्वकेँ बटोरब ओ आत्म अनिवार्य कार्य कोना अनुभव करितथि। तएँ, सदुपाध्याय जी'क ऐ क्रिया-मर्यादाकेँ, ने तँ हुनक आत्म रचनावली'क प्रति उदासीनता कहल जायत आओर ने कोनो साकांक्ष उपेक्षा-भाव।

माननीय सदुपाध्याय जी'क प्रकाशित रचनावलीमे, निम्नलिखित पुस्तक सभ'क उल्लेख, बहुधा बहुतो ठाम लेखक लोकनि करैत छथि। यथा—

(क) *झूमर रसमंजरी*, (ख) *झूमर रसतरंगिणी*, (ग) *झूमर रसपारिजात*, (घ) *वृहत् झूमर रसमंजरी*, (ङ) *वैद्यनाथ-क्षेत्र-सर्वस्व*, (च) *धैरा-संगीत*, (छ) *भवप्रीतानन्द-पद्यावली* एवं (ज) *कमरथुआ*।

उक्त पुस्तक सभ'क मुद्रण-कार्य अधिकांशतः महानगरी कलकत्ता मे भेल छल। फलतः, सदुपाध्याय जी'क जे कोनो मैथिली, हिन्दी वा बँगला रचना सभ छलनि; सभटा'क लिपि बंगला बनलैक ओ तदनुरूप प्रकाशन-कार्य करबाओल गेल। वस्तुतः, तै समयमे, देवघरमे, तेहन कोनो प्रेस सभ उपलब्ध नहि रहैक आओर कलकत्तामे, देवनागरी लिपिमे, कोनो रचनाकेँ प्रकाशित करबेवामे भारी असुविधा भऽ गेल करैक। अस्तु, उपर्युक्त पुस्तक सभमे, प्रायः अधिकाधिक पुस्तक सभ'क प्रकाशन बँगले लिपिमे भेल छनि जाहिमे हिन्दी वा मैथिली बोली विमिश्रित (व्रजबूलि'क) सेहो कतिपय पद्य सभ उपलब्ध भऽ जाइछ।

(क) *झूमर रसमंजरी*—ई पुस्तक, सम्भवतः कलकत्तेमे मुद्रित कराओल गेल छलैक। एकर लिपि बँगला रहैक। एकर प्रतिसभ, आब अनुपलब्ध छैक।

(ख) *झूमर रसतरङ्गिणी*—इहो पुस्तक कलकत्तेसँ प्रिण्टेड भेल रहए। मुद्रांकन'क लिपि बँगला रहैक। झूमर-धैरा-गायक सभ'क बीच ई पुस्तक बहुत लोकप्रिय भऽ गेल छल।

(ग) *झूमर रस पारिजात*—एकरो भाषा एवं लिपि बँगला रहैक। लघुकायिकी पुस्तिका सभमे, अहू रचना'क काफी जनप्रियता छलैक। सदुपाध्याय जी'क काव्यात्मक व्यक्तित्वसँ परिचित हेबा-लेल, सामान्य जनताकेँ, उपर्युक्त यैह तीनू पोथी, शुरू-शुरूमे, हाथ लगैत छलैक।

(घ) *वृहत् झूमर रसमंजरी*—उपरि निर्दिष्ट तीनू पुस्तक'क जखन कए-कए वेर संस्करण निकलि चुकल छल तँ ऐ पुस्तक'क किछु वज़नदार संस्करण (चतुर्थ संस्करण'क नामसँ) पुनः कलकत्तेसँ बँगला लिपिमे, करबाओल गेल। ऐमे, लगभग, 212 गोट पद, सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द जी'क छलनि आओर लगभग 150, पद स्व. कविवर उमानन्द जी'क मुद्रापित करवाओल गेल छल। ई पुस्तक बँगला संवत् 1340 (ख्रिष्ट संवत् 1933 ई.)'क आसपास प्रकाशित भेल रहए। प्रकाशक लोकनिमे, सर्वप्रथम नाम मानभूमि जिला'क 'बड़ाम' गाम निवासी श्री शिरोमणि हाजरा'क छलनि तदुत्तर लीखल

छलैक श्री शिरोमणि ठाकुर ओ श्री उपेन्द्रनाथ ओझा वैद्यनाथ पण्डागण। सर्वसत्त्व संरक्षितः मूल्य (1.25) अर्थात् पाँच सिक्का। हाँ, *बृहत् झूमर रसमंजरी*—ले. भवप्रीतानन्द, एतबा ऊपर मे जरूर मुद्रित छलैक। ऐ पुस्तक मे, कविवर भवप्रीतानन्द'क (*रामायण*-सम्बद्ध सम्भवतः 21 गोट पद्य छल) जेना *रामायण*—झूमर 9 टा, भरत-सम्भाषण 11 टा। तदुत्तर, *महाभारत*-प्रसंग'क कीचक-बध-पाला 6, दुर्योधन हर्ष-विषाद-मृत्यु 11, कुन्ती-गान्धारी-संवाद-? भीष्म-इच्छा-मृत्यु 2, कुन्ती-गान्धारी-पाला 10 तथा अभिमन्यु-बध-पाला 24। तहिना, ऐ पुस्तक मे, किछु छिट-पुट विषयकेँ उठाकए विरचित चण्डी-संगीत-पाला 26, राधिका-कलंक-भंजन-पाला 8 एवं पारिजात-हरण-पाला इत्यादि सेहो सभ रहैक। उक्त *वृहत् झूमर-रस-मंजरी* पुस्तकमे; कुल्लम 800 सौ पद प्रकाशित रहैक। ऐ पुस्तकमे एकगोट 'फूल-पाला' सेहो सम्भवतः प्रकाशित भेल छलनि जाहिमे, नानाभाँति'क फूल सभ के नामसँ पाला वन्दी काव्य-रचना भेल छलैक। परन्तु, उक्त पुस्तक, श्रीमान् भवप्रीतानन्द जी'क 'झूमर' रचना-सभ'क बृहत्ससंग्रह छल।

(ङ) *घैरा-संगीत*—ई पुस्तक, देवघर'क 'कुईक प्रेस'सँ, देवनागरी-लिपिमे, मुद्रापित करबाओल जाइत छलैक जाहिमे, लगभग 80 गोट पद टंकित-मुद्रित भऽ चुकल छलैक। मुदा, दैवी कोनो दुर्योगवश, सम्पूर्ण पुस्तक, ने मुद्रित भऽ सकले आओर ने तकर पुस्तकाकार स्वरूप लोककेँ प्राप्त भऽ सकलैक।

अनुश्रुत अछि कविवर'क कोनो गोतिया सज्जन, तै प्रेस-कॉपीकेँ अपना घरमे, कतौ खूब गाड़िकए रखने छथि। कविवर'क जीवन-कालमे तँ ओ नहिञे प्रकाशित भऽ सकले, आब तँ ओकर प्रकाशन असम्भव जँ नहि तँ जटिलतर जरूर भऽ गेल छैक।

घैरा-संगीत'क मुद्रित भाग मे, धनुष-भंग-पाला 9, राम-वनवास 18, चीरहरण 10, रास-लीला 9, राधा-कलंक-भंजन 6, रुक्मिणी-हरण 10, उद्धव-संवाद 6 तथा पारिजात-हरण 18 गोट अर्थात् 88 टा 'घैरा' संगीत मुद्रित भऽ गेल छलनि। ज्ञात नै, अवशिष्ट कतेक संख्यक 'घैरा'-संगीत प्रकाशनार्थ बँचि गेल।

कविवर 'भवप्रीतानन्द' उपरिलिखित घैरा-ओ झूमर—ऐ दू गोट संगीत-धारा'क अति विशिष्ट रचनाकार मानल जाइत छला। हिनक यैह दूनू रचना, अधिकाधिक जनकण्ठ मे विद्यमान अछि।

(च) *वैद्यनाथ-क्षेत्र-सर्वस्व*—उक्त पुस्तक हमरा, कोनो समयमे, अवलोक'क अवसर भेटल छल। ई पुस्तक, वैद्यनाथधाम ओ मन्दिरस्थ देवी-देवता'क पूजा-सपर्यासँ सम्बद्ध अनुभूत भेल रहए। लिपि यतः एकरो बँगले रहैक, तएँ इहो रचना, सर्वजन सुपाठ्य नहि छलैक।

(छ) *भवप्रीतानन्द-पद्यावली*—(झूमर-संगीत) इहो पुस्तक सेहो देवघर'क 'दि कुइक प्रेस'सँ 16 सितम्बर, 1968 ई.मे, नागरी लिपिमे, मुद्रापित करवाओल गेल छलैक। एकर पहिल संस्करण केवल 500 भेल रहैक। परन्तु, ऐ पुस्तक'क गोटेक आधेक प्रति, एखनहुँ उपलब्ध भऽ जेबा'क सम्भावना रहैत छैक। ई पुस्तक स्वयं

लेखक तथा सम्पादक श्री भोलानाथ झा (भूत पूर्व प्राचार्य, हिन्दी विद्यापीठ गोवर्धन महाविद्यालय, देवघर), प्रो. चन्द्रधरपाठक 'आर्य' तथा योगेन्द्र झा शाण्डिल्य'क सम्मिलित सहानुभूतिसँ प्रकाशमे आबि सकल छल। परन्तु, अहू सहयोगी मित्र-मण्डलीमे, मुख्यतर भूमिका श्रीमान् भोलानाथ झा जी'क छलनि।

उक्त पुस्तक के सम्बन्धमे, स्वयं सम्पादक महोदय निज भूमिकामे, लिखि देने छला—"सदुपाध्याय जी के असंख्य झूमर गीतों में, चुन-चुनकर उत्कृष्ट गीतों को इस संग्रह में रक्खा गया है। यह संग्रह अपने आप में, एक ऐतिहासिक महत्त्व की चीज़ है। कारण, इसके पूर्व कवि का कोई झूमर-गीत देवनागरी-लिपि में नहीं प्रकाशित हो सका था। पिछले साठ वर्ष की अवधि में इन्होंने जो रचनाएँ की हैं, उनमें से अधिकांश गायकों तथा जनसाधारण के कण्ठों में हैं। इस संग्रह में अधिकांश ऐसी ही रचनाएँ हैं।"

वस्तुतः, उक्त पुस्तक'क विमोचन श्रीमान् वैजनाथ पाण्डेय (निदेशक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना) 16.9.68 ई.कें केने रहथि। समारोह'क तै शुभमय अवसर पर पंक्ति'क लेखक सेहो मौजूद रहथि।

(ज) *कमरथुआ*—ई पुस्तक, भारत प्रिण्टिंग वर्क्स, देवघरसँ नागरी लिपिमे, 1969 ई.मे, मुद्रापित करबाओल गेल छलैक। ऐ पर, रचयितामे, श्री श्री भवप्रीतानन्द ओझा (सरदार पण्डा, बाबा वैद्यनाथ, देवघर, सं. प.) एवं प्रकाशकमे, कविवर प्रो. रामकिशोर झा 'विभाकर' मुद्रित करवाओल गेल छैक। मूल्य 20 पै. मात्र। ऐमे, शिव-सम्बन्धी लगभग 9, राधाकृष्ण-लीला-विषयक 6, विविधमे लगभग 3 गोट पद संगृहीत अछि।

प्रस्तुत पुस्तक के सम्बन्धमे एतवा अवश्य ज्ञातव्य थिक जे उक्त पुस्तक'क सम्पादन-भार स्वयं कविवर भवप्रीतानन्द जी 26.1.69 ई.कें हमरा, सौंपने छला। *भवप्रीतानन्द-पद्यावली*'क नागरी लिपिमे, प्रकाशन भेला उत्तर, ओकर अप्रत्याशित प्रचार-प्रसार देखि, लेखक उत्साहित भए अहू पुस्तक'क नागरी लिपिमे, प्रकाशन करबा देबा'क निमित्त हमरा निज दृढाग्रह जनौलनि। कहलनि-सुलतानगंज सँ देवघर-पर्यन्त आबऽवला *कमरथुआ* यात्री लोकनिकें, ई भजन-सभ, गाबइ मे, सुविधा हेतनि। अतः, एकरा तदनुरूप, मैथिली भाषा'क पुट दैत, अपने सम्पादन करियैक। हम कार्य-भार निज शिर पर जखन लऽ लेलियनि-तखन, कार्य जतबा सरल बुझएल छल वास्तविकता तैसँ कोसो दूर रहैक। तथापि, जेना-तेना 30.1.69कें, उक्त पुस्तक, प्राक्कथन-लेखन-सहित, हम श्रीमान् सदुपाध्याय जीकें प्रत्यर्पित कऽ देलियनि। मित्रवर योगेन्द्र झा 'शाण्डिल्य'कें कहि, भारत प्रिण्टिंग प्रेसमे एकर मुद्रण'क सेहो व्यवस्था करा देलियनि। एकर आवरण-पृष्ठ पर, कविवर स्वयं हमर नाम सम्पादकमे, मुद्रापित करवा चुकला। परन्तु, किछु अनपढ़, अनभिज्ञ लगुआ-भगुआ लोकनि'क कूट चालि'क चलतें, उक्त पुस्तक के प्रकाशक'क स्थानमे, हमर नाम, बिना हमर अनुमति'क

प्रकाशित करबाओल गेल। उक्त पुस्तक के प्रकाशनमे, हमर एको कौड़ी व्यय नहि भेल छल। भोलेनाथ-पुजारी'क भितरखण्डीय लगुआ-भगुआ भद्र पुरुष लोकनि'क वास्तवमे, अजवे-गजव दरबार छल। कविवर भवप्रीतानन्द, तै परिवेशमे, जतबाकालिक आयुःक्षेपण कऽ गेला-सैह महान् आश्चर्य'क विषय छल। 'प्रयाणे विस्मयः कुतः'—चलि गेला-तैठाम की आश्चर्य। पुस्तक'क सुरक्षा-लेल, 'आवरण-पृष्ठकेँ', नै केवल पुनर्वार मुद्रित करबाओल गेल अपितु ओकर दोसर पृष्ठ पर, 'रचयिता द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित' सेहो पंक्ति छपवाओल गेल।

---

# 5

# झूमर ओ' घैरा

॥ झूमर-विचार ॥

झूमर शव्द जनभाषा'क शब्द थिक। भारतीय संगीत'क दुनियामे, जै गायनसँ जन-जन झूमऽ लागए, आनन्द एवं उल्लाससँ नाचऽ लागए; संगीत'क तै विधाकेँ झूमर अथवा झुम्मरि-पदेँ अभिहित कएल गेल अछि। हिन्दी कोष-ग्रन्थ सभ मे झुमरि (हिं. स्त्री)'क अर्थ = एक प्रकार'क रागिणी देल गेल अछि। पुनः, तहीठाम झुमरी (हिं. स्त्री) शब्द'क अर्थ लीखल गेल अछि = लकड़ि'क मुँगरी, छत-पिटबा'क एक प्रकार'क पिटना। पुनः, यैह झूमरी (हिं. स्त्री) शब्द = 14, मात्रात्मक एक प्रकार'क 'ताल'क द्योतक सेहो थीक। मुदा, झूमरी (हिं. स्त्री) जखन स्त्रीलिंग में व्यवहृत होइछ तँ शालक राग'क एकभेद जनाओल गेल अछि।

*भार्गव हिन्दी-कोष* ग्रन्थमे, झूमर शब्द'क अर्थ देल गेल अछि—होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत, इस गीत के साथ होनेवाला नाच, बहुत स्त्रियों या पुरुषों का मण्डलाकार घूम-घूमकर नाचना, झूमर ताल। सन्थाल परगना-क्षेत्रमे, हम स्वयं बहुतो वनवासिनी मझियाइन महिला-मण्डलीकेँ, कोठा'क छतकेँ मुँगरीसँ पिटैत-घड़ीमे, झूमर-गीत गबैत सुनने छी। तएँ, हम ऐ तथ्यकेँ स्पष्टतः नहि बूझि रहलौ अछि जे ई गीत सभ, होली'क आनन्द मे गाओल जाइछ कि शरद ऋतु'क ठंढ इजोरिया रातिमे, मर्द कि महिला-लोकनि उल्लसित भए गबैत छथि।

कविवर भवप्रीतानन्द'क प्रयाससँ ई झूमर-संगीत तेहन लोकप्रिय बनि गेल अछि—जे देवघर'क नितान्त सभ्य एवं सुसंस्कृत ब्राह्मण-समाज सेहो ऐ संगीत'क झूमि-झूमि कए, डंफा एवं मानर लए, विविध मण्डलीमे विभक्त भए, निज-निज दल-वल'क संग गायन करै छथि।

कविवर भवप्रीतानन्द'क दोसर विशेषता इहो छनि जे ऐ घैरा (खेमटा) वा झूमर-संगीत-विधामे नै केवल देवी-देव'क रूप-चित्रण, स्तुति-वन्दन या चरित्र-गायन-ई कएने छथि अपितु उक्त संगीत-विधामे ई राष्ट्रगान, स्वागत-गीत, स्वराज्य-वर्णन, साक्षरता-अभियान, चीन'क चुनौती, गाँधी डांडी यात्रा, नवान्न, जिताष्टमी, करमा-पर्व, परिवार-नियोजन, खादी-प्रशस्ति-गीत, घुसखोरी, निर्गुण, उदासी तथा हास्य-विनोद'क

पद्योसभ निर्मित कऽ गेल छथि। हँ, एतबा सत्य थीक जे कविवर 'भवप्रीता' जखन झूमर-संगीत सभ'क रचना करए लगला; तँ झूमर संगीत'क निम्नांकित चारि-पाँच प्रभेद पर अपन विशेष ध्यान केन्द्रित रखलनि। जेना—दाँड़, घटबाड़ी दाँड़, झुमटा, भादुरिया, भदवारी, महराई (ग्वार-समाज'क झूमर लोक गीत), भदुरिया (छन्दपरक)।

दाँड़ झूमर— तिरिया जनम जँ देभै गोसैयाँ लाल, दिहऽ देवा
कन्हैया अइसन पिया, लाल दिहऽ देवा।
तिरछी नजरिया कि मोहिनी हँसिया लाल, दिहऽ देवा
पिरित-भरल हिया लाल दिहऽ देवा।

घटवारी दाँड़— ई केकरी बहुआरी, नैना सँ तीरा दियए मारी।
चन्द्रमुखें धीरे हाँसी, गला रे, लगाबए फाँसी
गोर देहें सोहए नील साड़ी, ई केकरी बहुआरी?
एक राखए माथा-परे, दुजा कँखियाए धरे
वुकें राखए दुइ पयोधारी, ई केकरी बहुआरी?

झुमटा— गेलौं गगरिया लै यमुना-किनरिया,
गेलौं गगरिया-लै यमुना-किनरिया,
छैला वँसिया बजाबै, कदम-तरें।
बँसिया बजाबै कि हँसिया देखाबए
बँसिया वजाबै कि हँसया देखाबए
मोर हिया जे डोलाबै, नैना-वाणें। आदि

भदवारी— राति लागए डर, भादव अन्हार भयंकर
बदरा गरजए घोर, मोरवा वोलए कठोर
सूप-धारेँ झरए जलधर, राति लागए डर।
निकुञ्जें नाहीं नागर, मदनें हानत शर;
दंशए विरह-विषधर, राति लागए डर॥ आदि

भादुरिया—छन्द—विरहिनि नारी, उमर किशोरी, भादो राति अन्हारी
निन्दो न आबै, मदन सतावै, तापर आफद भारी, हो तापर...

झूमर— वाजए मोहन वाँसुरिया, भिजी चुनरी
गोरी! बरसए बदरिया, भिजी चुनरी

छन्द— सुनिकए वाँसुरी, मति भइ वावरी, चित-वसि गये मुरारी
चलिअ तहाँ जहँ श्रीमनमोहन, श्याम वँसुरियाधारी

झूमर— मोहि ने सूझए डगरिया, भिजी चुनरी
नैना भरए जैसे झरिया, भिजी चुनरी। आदि

महाराई— उधो! बड़ी भागें मिलए नीलमणिया, रे ना।
उधो! साधी लेलौं पिरित-बन्हनिया, रे ना।
रामा रे! छीनी लेलकै कुबुजी सौतनिया, भला हो राम
रामा रे! छीनी लेलकै कुबुजी सौतिनिया, रे ना॥ आदि

## ॥ घैरा (खेमटा) विचार ॥

*भार्गव हिन्दी-कोष* के अनुसार घैर, घैरू, घैरो (हिन्दी-पुंलिंग) के अर्थ होइछ—अपमान, अपयश, चुगली, गुप्तरूप सँ दुर्नाम करव (पृ. 143)। अस्तु, हमरा बुझनें घैरो अथवा घैरा शब्द, लोक-गीत'क ओइ विधाकेँ व्यक्त करैछ जाहिमे, जन-जीवन'क कोनो प्रेमी तथा प्रेमिका'क अपमान, अपयश, चुगली अथवा गुप्त रूप'क दुर्नामी'क अनुगायन कएल जाइत छल। ई घटनावली प्रायशः असभ्य मानव-समुदाय'क सामाजिक जीवनमे किंवा अर्ध सभ्य वनवासी'क जन-जीवनमे, अधिकाधिक अद्यपर्यन्त होइत देखल जा सकैछ। पृथ्वी'क कोनोटा सभ्य राष्ट्र अपन कलंक वा अपकीर्त्ति'क अनुकीर्त्तन करैत हो—तेहन नहि देखल जाइछ। तएँ, सभ्य समाज'क सामान्य जीवनमे, ऐ झूमर वा घैरा (खेमटा)-संगीत'क कत्तहुँ प्रचलन-परिपाटी नहि देखल गेल छल। हमर ऐ अभिव्यक्ति'क सम्पुष्टि, निम्नोद्धृत इहो वाक्यावली करैछ जाहि मे लीखल गेल छल—"झूमर से हमलोग सन्थाल, वाउरी प्रभृति छोटी जाति के लोगों के अश्लील गीत समझते थे। किन्तु, सदुपाध्याय श्री श्री भवप्रीतानन्द ओझा ने देव-देवी-विषयक तथा आध्यात्मिक भाव-संवलित वहुत-से भक्तिपरक झूमर गीतों की रचना करके, इन्हें उच्चकोटि के शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में पहुँचा दिया है।" (पढ़ू : *संगीत-संग्रह*, प्रकाशक—रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ, देवघर के संकलयिता के भूमिका अथवा *भवप्रीतानन्द पद्यावली*, पृ. 23)।

ओना, ई वात पूर्णतः सत्य थीक जे कविवर भवप्रीतानन्द, एहनो उपेक्षित झूमर-घैरा-संगीत-विधाकेँ, वर्त्तमान समयमे, अत्यधिक रोचक ओ सभ्यानुमोदित बना देलनिहें।

'घैरा'मे, हमरा बुझनें 13 ओ' 11 मात्रा पर विश्रामवला दोहा छन्द'क प्रयोग होइत छल जे गायन'क क्रममे, 'हो रामा हो' अनुपद'क संग, समन्वित कएल जाइत छल।

जेना— कूवरि-वचन रानी भूललि (हो) देल दैव कुमति चढ़ाइ।
चलि गेल कोप-भवनमा (हो) 'नद' देल उलटे वहाइ॥
(राम-वनवास-पाला)

खेमटा = हिन्दी कोष'क अनुसार, ई हिन्दी'क पुंल्लिग शब्द थीक। एकर अर्थ होइछ छः अथवा चारि मात्रा'क एकगोट ताल। आओर, तही ताल पर होइवला नाच कि गाना।

दशा देखि राजा भेल उदसिया, पुछइछ बतिया, ना
ऐ सखि! पुछइछ बतिया ना।
आजु सुख'क दिन दुखा कि जगलहु फटलहु छतिया, ना
हाय राम! फटलहु छतिया, ना॥

ओना, 'घैरा'-संगीत'क प्रादुर्भाव कोना भेल; तै सम्बन्धमे, कविवर 'भवप्रीतानन्द' जी'क एकगोट प्रभूत उत्कृष्ट काल्पनिक मान्यता छनि। ओ लिखने छथि—'कार्त्तिकी पूर्णिमा'क शारदीय रात्रि रहए। शीतल समीर सर-सर करैत बहि रहल छल। लोक सभ'क हृदय, उमंग ओ उल्लास सँ भरल छलैक। हरीतिमा संयुक्त वृन्दावन'क पार्श्वभागमे, नितान्त कलित कलेवरा कालिन्दी (यमुना) बहि रहल छली। तै यमुना'क निर्मल जलमे, तारिका सभ'क संग चन्द्रदेव वेश झिलमिल करैत छला। स्वयं, व्रजचन्द्र श्रीमान् श्यामसुन्दर सेहो तै दृश्यकेँ देखलनि। अतः, ओ समस्त गोप-सखा सभकेँ, संग कऽ लेलनि। तथा, मुरली पर भुवन-विमोहिनी ध्वनि (तान) निकालए लगला। से, सरस ओ उन्मादक तान (स्वर) सुनि-सुनिकए, भ्रमर, मोर तथा पपीहा-सभ सेहो गुञ्जार करए लागल। निरभ्र आकाशमे, कलंकी चन्द्रमा तँ विहुँसिये रहल छला। तही काल वृषभानु-नन्दनी अभिनवयौवना राधा सेहो निज सखी सभ'क संग तै निकुंजमे, से मुरली-स्वर सुनए जुमि गेली। अस्तु, लोकमुख'क कथन थिक; तही दिन, प्रथम-प्रथम 'घैरा', ऐ भूलोकमे आविर्भूत भेल।

मुदा, घैरा-प्रादुर्भाव-विषय'क उक्त कल्पना-रम्य विश्लेषण, सामान्य पाठक वृन्द-हेतु जेहन रोचक बुझाओ किन्तु, ई अभिकथन, ततवा व्युत्पत्ति-बोधक किंवा मर्मोद्भावक नहि जँचैछ।

**छन्द-विचार**—सदुपाध्याय स्व. भवप्रीतानन्द ओझा प्रायः अधिकतर रचना त्रिपदी एवं पयार छन्द मे लिखलनि।

**त्रिपदी**—ऐ छन्द'क प्रत्येक चरणमे तीन पद होइछ तही दुआरेँ, ऐ छन्दकेँ 'त्रिपदी' कहल गेल अछि। प्रत्येक चरण'क प्रथम एवं द्वितीय पद'क तुक मिलल रहैछ तथा दुनू चरण'क तुको मे मेल रहैत छैक। जेना—

जाति देलौं, कुल देलौं, अपन-पर-सभसँ गेलौं
कांदी-कांदी ने सुझए अँखिया।
आँख गेल, समांग गेल, गतर बिलाये गेल
भावी-गुनी झांझर देहिया।

एवं क्रमें, हमरा सभ देखैत छी कि प्रथम चरण के प्रथम पद तथा द्वितीय पदमे 'देलौं' और 'गेलौ' मे तुक'क मेल अछि। तहिना प्रथम चरण'क अन्तिम पद'क अन्तमे 'अँखिया'क तुक, द्वितीय चरण'क अन्तिम पद के अन्तिम शब्द 'देंहिया'सँ मिलल छैक।

6-6 प्रथम एवं द्वितीय में 8 वर्ण हो तँ 'लघुत्रिपदी'। नहि जँ, प्रथम आओर, द्वितीय चरण मे 8-8 हो तथा द्वितीय चरणमे 10 हो तँ 'दीर्घ त्रिपदी'। भवप्रीता'क त्रिपदीमे, कतौ-कतौ शास्त्रोक्त त्रिपदीसँ अतिरंजित त्रिपदीओ पाओल जाइछ। कतौ-कतौ त्रिपदी छन्द'क पश्चात् एक-एक चरण 'पयार'क सेहो मिश्रित छनि। जेना—

भादव मास आवल, हरियर धरातल
उमड़ए नदी दूती, उमड़ए नदी
मुसा-रथेँ उतरला गणेश धरती
14 पयार
गजेन्द्र मुख सुन्दर, एक दंत लम्बोदर
भाले निशापति दूती, भाले निशापति।
शिरें सिन्दूर शोभै, लाल चादर धोती।

**'पयार'**—ई बँगला'क वार्णिक छन्द थिक। ऐ छन्दमे 14, गोट वर्ण रहैछ। सदुपाध्याय जी अहू छन्द मे बहुत किछु रचना केलनि अछि।

जेना— पातालमे छले जते माताल असुर
द्वापरे धरती पर जनमल कूर।

'पयार'मे 14, आखर होइछ। आठम पर 'यति' रहैछ। आओर, दू चरणमे कविता बनैछ।

---

# ⑥

# कृष्ण-लीला (पद्यावली)
# झूमर (भादुरिया)—1

सखीगे, बड़ा हठी कालिया-किशोर!
साँझे गेलहुँ भरए पानी, जूमी तहाँ नीलामणी
घाटे उपर करए झिकझोर,...संगीगे! 1
बुझेनहुँ ने बूझए वात, दियऽ चाहए गातें हाथ
गगरी सिरा'क फोड़ए मोर...सखीगे! 2
दौड़ी गेलहुँ जएँ पड़ाए, गेल पीछू लटपटाए
मोर देल बँहिया मड़ोर,...सखीगे! 3
हेरी गोप-गोपी-जोड़, 'भवप्रीता' प्रेमें विभोर
जैसन हेरी चन्दाचकोर,...सखीगे! 4

## झूमर (दाँड़)—2

बछरू खोजै-लै गेलौं साँझे वथान, रे कदम तर.
पीठ'क ओरें 'नन्द'क लाला करए लपटान, रे कदम तर.
चोलिया कन्हैया धरी देल जोरें टान... ...
हार'क मोती टूटी गिरले छिति छितरान... ...
छीनवो मुरलिया कान्हा चुरवो गुमान... ...
यशोदासँ कही तोरा सिखावो विहान... ...
तैओ नाहीं छोड़ए कान्हा, मुँहेँ मुसकान... ...
'भवप्रीता' करए सदा युगल पदें ध्यान... ...

## झूमर (दाँड़)—3

की रँग, जैवे सजनिया, नीर-भरै-लै?
साँझ'क बेरी वीच घाटें ठाढ़े नीलमणिया ॥ध्रु.॥
गेलें तहाँ सोझे श्याम करए छेड़खनिया...की रँग
राखए नाहीं लाज-वीज छाड़ए न सेंतनिया...की रँग

तोड़ी दियए चोलि'क वन्धा छीनए पुनि ओढ़ेनियाँ
देखि-देखि सेहो हँसते सँग'क सभी जनिया...की रँग
'भवप्रीता' कहए राधे! सूनह हमरो वणियाँ
सुखें लिहऽ तहाँ भरी श्याम'क प्रेम-पनियां-की रँग

## झूमर (दाँड़)—4

कन्हैया अइसन पिया लाल, रे दिहऽ देवा!
तिरिया जनम जँ देबऽ, दिहऽ गोसैयाँ लाल, दिहऽ देवा!
तिरछी नजरिया दिहऽ, मोहिनी जे हँसिया, लाल
प्रीती भरल दिहऽ करेजवो लाल, दिहऽ देवा!
पतरी कमरिया दिहऽ, नामी जे केसिया, लाल
दिहऽ यौवना जैसन रहए कहूँ केर' कीया लाल, दिहऽ देवा!
'भवप्रीता' कहए हरी! लिहऽ संगे राधा, लाल
वसी जैहऽ हिया केर हमरो भितरिया लाल, वसी जैहऽ

## झूमर (झुमटा)—5

गोपिन-गरेँ फँसिया कि, दुहूँ डारेँ।
मोहन जी के हँसिया कि मोहन जी के बँसिया, दुहूँ डारेँ ॥ध्रु.॥
नारी हियरा बरछिया कि दुहूँ मारेँ।
नैना तिरछिया कि कदम के विरछिया, दुहूँ मारेँ ॥1॥
कामिनी-कुल जँतिया, दुहूँ नाशए।
श्यामली सुरतिया कि कपट पिरितया, दुहूँ नाशए ॥2॥
युगल चरणे वसतिया, दुहूँ करेँ।
भवप्रीता'क मतिया कि भवप्रीता'क गतिया, दुहूँ करेँ ॥3॥

## झूमर (झुमटा)—6

छैला वँसिया बजावए, कदम-तरेँ।
गेलौं गगरिया-लै, यमुना-किनरिया कि कदम-तरेँ ॥धुन॥
मोर हिया जे डोलाबए, नैन-वाणें।
वँसिया बजावए कि हँसिया दिखावए, नैन-वाणें ॥1॥
साँझे मिलै-लै बोलावए, निकुँज-वनें।
विनती बुझाबए कि पिरित-रिझाबए, निकुंज-बनें ॥2॥
जे रँग आखिरमे पावए, चरण-धनें।
भवप्रीता गाबए कि हरिसँ मनाबए, चरण धनें ॥3॥

## झूमर (झुमटा)–7

राती जीहा तरसावए, वन्धुआ लागी।
मेघा घहरावए कि पानी वरसावए, वन्धुआ लागी ॥धुन.॥
पिया-पिया सुनावए, पपीहा पापी।
झलके बिजुलिया कि कुहुके कोयलिया, पपीहा पापी ॥1॥
मोर यौवन पिड़ावए, उमरि रसें।
पिया मन भावए कि मदन सतावए, उमरि रसें ॥2॥
हरि-चरणे लोटावए, भवप्रीता।
फूलें गुञ्जए भौंरा, कि डारीं नाचए मौरा, 'भवप्रीता' ॥3॥

## झूमर (भादुरिया)–8

दैया, वंशी के बजैया, निठुर निपट कान्हू रैया।
नन्द'क गैया चरैया, गोपिन के पकड़वैया।
लोटि-लोटि ठाढ़े कदम छैया, दैया वंशी के वजैया ॥धुन.॥
संग मे वलराम भैया, दुइयो वड़ा निरदैया।
नारी-दुख नाही वुझवैया, दैया वंशी के वजैया ॥1॥
धरए लपकि कलैया, छोड़ा लेनहुँ ने छोड़ैया
विना व्याहो'क वनऽ चाहए सैयाँ, दैया, वंशी के वजैया ॥2॥
'भवप्रीता' के रखवैया, तोहीं कुमरजी कन्हैया
अन्तें रखिहऽ अपन पैंया, दैया, वंशी के वजैया ॥3॥

## झूमर (झुमटा)–9

नागर बजवए वँसुरिया कि ताहि तरें
कदमा के डार चढ़ी बोलए कोयलिया कि ताहि तरें ॥धुन.॥
गरजि वरषए मेघा कि चमकए बिजुलिया, नाचए मोरा'
खोलि पिछूके टिकुलिया, नाचए मोरा ॥1॥
गूँजए चूमी-चूमी भौंरा, नव फूल-कलिया, कि मह-मह
करए चम्पा-चमेलिया, कि महमह ॥2॥
'भवप्रीता' हृदि राजए राधा-अलवेलिया, कि सँग लये
नाचए मोहनें साँमलिया, कि सँग लये ॥3॥

## झूमर (भादुरिया)–10

देलथि गगरी फोरी।
ठीक रे, सँझौती वेरी, वाटें भेटी गेला हरी ॥

धरी लेल बँहिया मड़ोरी, द्रिगें कैल चिताचोरी।
टानी देल चोली-बंधा तोड़ी... ...गगरी फोरी ॥1॥
लाजें आँखि गेल भरी, बुझाबलौं कतो करी
एकहूँ न सुनथि मोरी, गियारी लगाए झिकाझोरी ॥2॥
तनी भेलहुँ अगुसारी, लगले लपकि लेल साड़ी
लच्छ घटें करी भारी, मारथि पथरा बलोरी ॥3॥
'भवप्रीता' प्रेमें भरी, हरी-पदें ध्यान धरी
गावथि इहो करा-जोड़ी, जैहऽ चितें बसी जोड़ी ॥4॥

## झूमर (भादुरिया)—11

चढ़ला कदम डारी।
चुपके वस्तरा बटोरी, चढ़ला कदम डारी ॥धुन॥
सहेली संघाती सारी, पैसि शीतल जामुन वारी
नहाबैत छलौं उघारी, चढ़ला कदम डारी ॥1॥
लौकि जलें छाया भारी, तकलौं जएँ ऊपर डारी
साड़ी सभि'क वनवारी, धरि विहुँसथि भारी ॥2॥
सभि'क चितचोरी करी, मुसुकि कहथि हरी
लैह चीर हाथा जोरी, अइसन कपट-हठ-कारी ॥3॥
'भवप्रीता' कहथि-गोरी! माँगह वस्त्र कर-जोड़ी
हुनके रचल देहा नारी, हरी सँ कि लाज भारी? ॥4॥

## झूमर (वसन्त-वर्णन)—11

शशी उगए हँसी।
चान्दनी सोहान मधु-निशी, शशी उगए हँसी ॥1॥
हेरि इहो शोभा-राशी, हँसी उठए दशो दिशी
यमुना बहति हँसि-हँसी, शशी उगए हँसी ॥2॥
नाची-नाची मोर हँसए गोपिनी-गोपाल हँसए
कुमुदिन हँसए जल-पैसी, शशी उगए हँसी ॥3॥
आम'क मञ्जरा हँसए भौंरा, गुञ्जारेँ हँसए
चकोर-चकोरि'क मुँहेँ हँसी, शशी उगए हँसी ॥4॥
हँसए श्यामराय रूपसी, 'भवप्रीता'क चित्तेँ हँसी
हँसी मिलावए जे अविनाशी, शशी उगए हँसी ॥5॥

## झूमर (गोपिनी-प्रेम-वर्णन)—13

मोहन! तोरे लागी।
चन्दा-निकुँजें गेला भागी, मोहन! तोरे लागी ॥ध्रु.॥
तोहरो अबइ के आशेँ, रही गेलौं कुंज'क वासेँ
खेपि गेलौं निशा जागि-जागी, मोहन! तोरे लागी ॥1॥
मीनकेतु'क पुष्प शरेँ, मोर मरमथला-विदरेँ,
जारए देहा विरहा के आगी, मोहन! तोरे लागी ॥2॥
जेकर तोहें, स्वानुरागी, सेहो 'चन्दा' बड़ी भागी
हमरा कें बनौलहेँ अभागी, मोहन! तोरे लागी ॥3॥
'भवप्रीता' कहए हरी! अन्ते दिहऽ पद'-तरी
दिहऽ न अधम गमी त्यागी, मोहन! तोरे लागी ॥4॥

## झूमर (राधा'क मान)—14

रे बन्धु! यहाँ काहे आय?
'चन्दा'-सँगें रस'क रँगें रतिया विताय, यहाँ काहे आय?
निशि-जागरण-आलसें चरण-ठेलाय नीन्देँ अँखिया
झिपी-झिपी जाय, रे बंधु!
पान-पीकेँ गला तोर के देलको रँगाय?
नवीन मेघा रे बंधु! अरुण शोहाय।
कजरा-सिन्दूरा घामें, मुँहा झलकाय
तीरबेनियाँ रे बंधु! भले बही जाय ॥
'भवप्रीता' कहए राधा वोलए रिषियाय
जाइहओ फिरिया रे बन्धु! 'चन्दा' रूसी जाय।

## झूमर—15

रे, वाँसी! वाजए विपीनमे।
कल न पड़त निशि-दीनमे॥धुन॥
सुनी कए मुरली धूनी चिहूकी ऊठलि धनी
सुतली जे छली घोर नीनमे, वाँसी बाजए विपीनमे ॥1॥
राधा कहए सुनह सखी! मिलावीह कमल-आँखी
अव न जीयव श्याम'क भीनमे, वाँसी बाजए विपीनमे ॥2॥
बिना से चीकन काला, अन्तरें ऊपज जाला
जइसे जाला पानी-विना मीनमे, वाँसी वाजए विपीनमे ॥3॥

'भवप्रीता' कहए हरी! अन्ते दिहऽ पद-तरी
भेजिहऽ ने शमन-अधीनमे, वाँसी बाजए विपीनमे ॥4॥

## झूमर—16

गे दूती! मोहन बड़ा उतपतिया।
एक जे सँझोती वेरी, सिर ओं काँखे गगरी
रहए न गोटेको सँग-सथिया, गे दूती—1
यमुना मे जल भरी, जाइ छलौं घर-फिरी
वाट-रोकि छुअऽचाहए छतिया, गे दूती!—2
लपकि लेलक पकड़ी, भँगलक दूयो गगरी
चलए न देलक एको जुतिया, गे दूती!—3
युगल मिलान हेरीः 'भवप्रीता' प्रेम-भरी
पैरीं-तरें खसल धरतिया, गे दूती!—4

## झूमर (वंशी-महिमा)—17

बाँस के वँसुरिया रे, बड़ा गुण तोर रे!
हाँ रे! बाँसी! नासी देलें जाति कुल मोर।
तोहर सबदें बाँसी! भेले मती भोर रे॥
हाँ रे! बाँसी! चितेँ जागए कालिया किशोर।
मना उचटाबए यौवना करए जोर रे!
हाँ रे! बाँसी! छटदए टपकए नैना-लोर।
'भवप्रीता' कहए बाँसी! होय गेले शोर रे!
हाँ रे! बाँसी! तोंहीं बाँसी! राधा-चितचोर।

## झूमर—18

बँसुरिया! तान मे जोड़लें कइसे वाण?
बाँस के बाँसुरी तोंहें नाहीं आँखी-कान
बँसुरिया! तैओ कइसे अचूक निशान?
छिन लें मदन सेँ कि भेटि गेलौ दान
बँसुरिया, जाहि फूल-बानें इ गुमान?
सबदें मिलाय तीरा! करेँ बरिसान
वाँसुरिया, ले लें कते अवला-परान।
शब्दें ब्रह्म मिलाबये कृष्ण भगवान
बँसुरिया, 'भवप्रीता'क हरी-पदें ध्यान।

## झूमर—19

रसिका-नागर कि बाझी गेलो। गे धनी!
कामिनी-कुन्तल जाल, सेहो जाल महाजाल
बाझी गेलो, वाझी गेलो गे धनी! बाझी गेलो।
कटाक्ष भ्रूमंग-संगें, अनंग'क वाण-रंगें
हरिणा-समान वाण मारि देली, मारि देली गे धनी!
देखाए मधुर हाँस, लगेली पिरीत-फाँस
चोर'क समान पाश, बान्ही देली, बान्हि देली, गे धनी!
अलि के कमलमधू, चकोंरा के जइसन बिधू
तहूँ तँ तइसन सुधू, मोरा लेखें, मोरा लेखें, गे धनी!

## झूमर (वर्षा-वर्णन)—20

दूती! पनिया बरिषए।
झिङ्गर-झंकारेँ प्राण, नइ रहए बशेँ, दूती! पनिया बरिषए॥
रातीं अन्हारी घोर, बिजुरी चमकैछ जोर
बदरा गरजए, मोरा कुहकए-हरिषए, दूती, पनिया बरिषए।
एकसरी लागैछ डर, कँपइछ हियो थरथर
निन्द न अवैछ विनू श्याम'क परशेँ, दूती! पनिया बरिषए।
केतकी, चंपा, वकूल, फूटए कतभाँति फूल
पपिहरा के पिया-डाकेँ जिहा तरषए, दूती! पनिया बरिषए।
विरहेँ व्याकुल पराण, पंचवाण हनत वाण
'भवप्रीता' युगल-रूप उर सौ दरशए, दूती! पनिया वरिषए।

## झूमर—21

रिमि-झिमि बरिषए झरिया हो राम! राति अन्हरिया।
गरजए बदरिया कि विजुरी लहरिया
जायब कइसेँ एक् सरिया, हो राम! राति अन्हरिया ॥
यमुना-किनरिया कि कुँज-भितरिया,
मोहन बजावए बँसुरिया, हो राम! राति अन्हरिया।
सुनिकए बँसुरिया कि चित्त बउरिया
दँशए विरह-विषधरिया, हो राम! राति अन्हरिया ॥
ई भौ-सागरिया कि भीम भयंकरिया,
'भवप्रीता' माँगए पद-तरिया हो राम! राति अन्हरिया।
कइसे तरवे बिनु तरिया, हो राम! राति अन्हरिया ॥

## झूमर (राधा-प्रेम-वर्णन)—22

दूतीसँ कहथि बतिया, आजु, अओते कालिया।
सपना सगुण देखी, हरषि उठली सखी।
फरकि उठले वाम अँखिया, आजु, अओते कालिया॥
उरेखी बान्हली जूड़ा, लगओली पान'क बीड़ा
झाड़ि विछौली सेजिया, रहली जगैते रतिया, आजु...
श्याम'क आहट सुनी, चमकि उठली धनी
मिलली आगु लागिया, प्रेमें छल-छल चारू अँखिया, आजु...
अङ्ग'क, परस-सुखें, मुरुछिता पति-बुकेँ
मुखसँ ने फुटए बतिया, 'भवप्रीता' भावए वनमलिया, आजु...

## झूमर—23

मिलइ-लागी मोहन सामलिया, हो राम! गेलौं कुँज-गलिया।
सुनिते वंशी-शबद, हिया उठले दरद
बेधए तीर मदन-खेअलिया, हो राम! गेलौं कुँज-गलिया।
गरजए-वरषए घना, एकला डरैछ मना
रहि-रहि छिटकए विजुरिया, हो राम! गेलौं कुँज-गलिया।
फुलले कदम फूल, सौरभेँ जे मारए शूल
नाचए मोरा, कुहुकए कोयलिया, हो राम! गेलौं कुँज-गलिया।
जोहलौं सगर राती, नागर न अवले माती
'भवप्रीता' चिते बनमलिया, हो राम! गेलौं कुँज-गलिया!

## झूमर—24

ई केकरी बहुआरी, नयनासँ तीरा दियए मारी? ध्रु.
चन्द्र-मुखें धीरे हाँसी, गेलौ रे! लगाए फाँसी
गौर-देह, सोह नील साड़ी, ई केकरी बहुआरी?
एक राखए माथा-परे, दूजा कँखियाए धरे
बुकें राख दूइ पयोधारी, ई केकरी बहुआरी?
कमरी केशा लोटाय, नाकेँ बेसरी सोहाय
झलकए जेबरवा बलिहारी, ई केकरी बहुआरी?
मूरति मनोरम हेरी, 'भवप्रीता' पड़ि फेरी
बहबए चोखें प्रेम-वारी, ई केकरी बहुआरी?

## झूमर (नायक-नायिका-मिलन)—25

सखी! रसिक रंगिया, वंशी जेकर अधर-संगिया।
आकाशें वारि पतन, कुंजें प्रेमाम्वु वरिषन;
राधा-संगें डोलए त्रिभंगिया, सखी! रसिक रंगिया।
आकाशें मेघ-गर्जन, कुजें मुरलिका गुंजन
अपरूप शोभा-भंगिया, सखी! रसिक रंगिया॥
अहा! की शोभा निरखी, गिरिशृंगे नाचए शिखी
कँजें नाचए गोपिका-विहंगिया, सखी! रसिक रंगिया॥
मेघा-कोले सौदामिनी, श्याम'क वक्षें विनोदिनी
परसपर रहए आलिंगिया, सखी! रसिक रंगिया॥
चारुतम चरण-कमले, मधु लूटए कुतूहले
'भवप्रीता' मन'क मिलिंदिया, सखी! रसिक रंगिया॥

## झूमर (झूलन)—26

राधा-संगे झूलए श्याम रूपें हारए रती-काम
लागए झूला निकुंज'क भीतरमे, मूरली अधरमे।
झुलावए व्रज'क सुन्दरी, डुलाबए चँवरा धरी
कँगना झंकारए हाथा-परमे, विजुरी नजरमे।
डालें नाचए मोरी-मोरा, पहुपें गुंजरए भौंरा
मधू झरए पपिहा'क स्वरमे, कोकिला-कुहरमे ॥
युगल रूप'क माधुरी, हेरि-हेरि नैना-भरी
'भवप्रीता' आनन्द अन्तरमे, खसए पैरहुँ ऊपरमे ॥

## झूमर (अभिसार-वर्णन, छन्द मिश्रित)—27

छन्द— विरहिनि नारी, उमर किशोरी
भादव राति अन्हारी (हो) भादव राति अन्हारी।
निन्दो न आबए, मदन सताबए
तापर आफद भारी (हो) तापर आफद भारी ॥

भादुरिया— बाजए मोहन बँसुरिया, भिजए चुनरी।
गोरी! बरषए वदरिया, भिजए चुनरी ॥धुन॥

छन्द— सुनिकए बाँसुरी, मति भेल बौरी
चित वसि गेला मुरारी (हो) चित वसि गेला मुरारी।
चली तही वन, जत मन-मोहन

श्यामल वंशीधारी (हो) श्यामल वंशीधारी॥

भादुरिया— मोरा सूझ न डगरिया, भिजए चुनरी।
नैन झरए जइसे झरिया, भिजए चुनरी॥

छन्द— मलका मलकए, वटिया झलकए
फेर तँ सैह अन्हारी (हो) फेर तँ सैह अन्हारी।
चरण चलए नै, रहति बनए नै
तिशंकु-दशा हमारी (हो) तिशंकु-दशा हमारी ॥

भादुरिया— डर लाग असगरिया, सुधि विसरी
सँकरी कुँज गलिया भिजए चुनरी॥

छन्द— राति-बिचे मग, ठाढ़ि अचल पग
श्री वृषभानु-दुलारी (हो) श्री वृषभानु-दुलारी।
भवप्रीता-चित, राधा-सँग नित
खेलए रासविहारी (हो) खेलए रास विहारी ॥

भादुरिया— जेना बदरा-विजुरिया युगल जोड़ी
नैना झरए जइसे झरिया, भिजए चुनरी ॥

## झूमर-28 (राधा रूप-वर्णन)

तोहर मुखा हेरी टुटए शशी के गुमान;
विहूँसी सजनी दीयेँ पीरीतीकेँ शान।
तोहरो भौंवा धनी धनुषा-समान;
दियए बेधि सजनीगे! अँखिया-कमान ॥
यौवना कमल-कली चितेँ अनुमान।
ललचए जे सेहो लखी रसिक पराण ॥
दियए तोर छबी हेरा मोर सभी ज्ञान;
'भवप्रीता'क हरि-पदें राती-दिना ध्यान ॥

## झूमर—29

नामी तोर केशिया, तरुण वयसिया,
दाँते शोभए रे उरेखल मिशिया, (रे दाँते शोभए
दुइओ रे यौवना जइसें मदनकलशिया,
सेहो देखी मोरी मन गेले रसिया (सेहो देखी
झलका दियए तोर रूपा चारूदिशिया
बोलेँ धनी मुखेँ हँसी रे विहुँसिया (बोलेँ धनी

'भवप्रीता' कहए प्रेमें सुनेँ रूपसिया
तोर विनू हमरो चिता रहए उदसिया (तोर विनू

## झूमर (कृष्ण'क मथुरागमन)—30

अक्रूर'के रथे हरी जबे बैठल जाय।
गोपी-संगे दौड़ी राधा कहए अगुआय॥
राधा कहए वाट रोकी, यहीं रहऽ कमल-आँखी
श्याम, ने जाह मथुरा, गोपी हेतऽ विरह'क विधुरा
श्याम, ने जाह मथुरा ॥टेक॥
अँखिया अछैतहुँ अन्ध, होयते यशोदानन्द,
सुनौते के बँसिया के सुरा, श्याम ने जाह मथुरा ॥1॥
गोपी सभि'क आँखि-नोरें, बहते कालिंदी जोरें
कादो हेतइ गोकुला के धुरा, श्याम! ने जाह मथुरा ॥2॥
भवप्रीता'क हृदि वासें, दुइयो रहि खेलऽ रासें
वासना से करी दिहऽ पूरा, श्याम, ने जाह मथुरा ॥3॥

## झूमर—31

हाय रे, करम भेलइ वाम।
माधव लये अक्रूर, चली गेला मधुपूर
सुन करी इहो नन्द ग्राम, सखी गे! करम भेलइ वाम ॥धुन॥
गोकुला भेलइ अन्हार, प्राणो करए हाहाकार!
आब न राखब जीहा हाम सखी गे! करम भेलइ वाम॥1॥
पाखी जँ रहीतलौं, उड़ी पिया मिलीतलौं
नारीसँ ने बनए एको काम, सखी गे! करम भेलइ वाम ॥2॥
भवप्रीता'क चित्त-माझे, रास'कटा प्रेम राजे
खेलए तहाँ नित राधाश्याम, सखी गे, करम भेलइ वाम ॥3॥

## झूमर—32

गे सखि, नन्द के नन्दन ॥
वान्हि गेला पीरितिबन्धन, गे सखि! नन्द के नन्दन ॥
अक्रूर जे क्रूर भेल, हरी हरि लये गेल
गोकुलामे उठौलके क्रन्दन, गे सखि! नन्द के नन्दन ॥
शून्य हृदय-मण्डल, लहरए विरहानल
जोरें जरए जीवन-इन्धन गे सखि! नन्द के नन्दन ॥

हमरा योगिनी करी, देलथि भसम-झोरी
कुबुजी केँ आदर-चन्दन, गे सखि! नन्द के नन्दन ॥
भवप्रीता प्रेम-भरी, राधाकृष्ण ध्यान करी
करए नित्ते चरण-वन्दन, गे सखि! नन्द के नन्दन ॥

## झूमर—33

अँखिया निन्दो नाहीं, नागर न अएले कुँज-माही ॥धु.॥
लौते के श्याम'क धरी वाँही, अँखिया निन्दो नाहीं।
भादव-राती भयंकर, एक सरी लागए डर
लौते के श्याम'क धरी बाँही, अँखिया निन्दो नाहीं ॥1॥
जाहि कुँजें चन्दा-रानी विभूषिता बैसलि ध्यानी
रहले वनवारी राति वाहीं, अँखिया निन्दो नाही ॥2॥
वियोगे बीयाकुल प्राण, वाणा हनए पँचवान
लागए सेजा बरकले लाही, अँखिया निन्दो नाहीं ॥3॥
भवप्रीता'क श्री निवास, अन्तें दिहऽ चिरावास
राधा-सँगे जतए तहूँ ताहीं, अँखिया निन्दो नाहीं ॥4॥

## झूमर—34

कोकिल! काहे कुहुकए, तोर बोल चुभए शैल बुकेँ।
एतए बिना मधुरिपु, मधुऋतु जारए वपु
के वैरिन मोहलके बंधुकेँ, कोकिल! काहे कुहुकेँ?
हमे विधुरा रमणी, जारए विरह अगनी
मलय-वतासें आगी-हुके, कोकिल! काहे कुहुकए?
अमुआ-मँजरी'क वाण, मदना साधए निशान
टानी निज फुला के धनुकेँ, कोकिला! काहे कुहुकेँ?
भमरा के गुञ्जार-गान, पपिहरा'क पिया-तान
सरसिज-सुरभियेँ नाग-फूकए, कोकिल! काहे कुहुकए?
'भवप्रीता' अन्तेँ हरी, यम-भीति दूर करी
राखी लीहऽ अपना मुलुकेँ, कोकिल! काहे कुहुकेँ?

## झूमर—35

वन के सहेलिया रे, कारी कोयलिया!
कोयलिया, आधा राती काहे करेँ शोर ॥धुन॥
पिया परदेशिया कि तोहरो रूपसिया
रुपसिया, जारए कि विरह-दुख घोर?

साथे तोर पखीया रे, तैओ काहे दुखीया
दुखीया, पीयें जाइ निज पिया-ठोर।
भवप्रीता'क गतिया कि तोहीं श्रीपतिया
श्रीपतिया, तोर श्रीचरणे गति मोर॥

## झूमर (बहार)—36

अँखियामे पैसी मेघा वरषए, कही दिहा नागरसें॥धुन॥
राधा कातर भये कहथि भ्रमरसें, कही दिहा नागरसें;
आबए लागी मथुरा नगरसें, कही दिहा नागरसें॥1॥
वरषा के डरसें जिहा मोरा तरसे, कही दिहा नागरसें;
दगधए विरहें, बिना परशें, कही दिहा नागरसें॥2॥
मदन'क शरसँ कि उपजए पीड़ डरसँ, कही दिहा नागरसें;
देहा चाहए मिलइ-लै श्रीधरसें, कही दिहा नागरसें॥3॥
'भवप्रीता' हरषें श्रीपद धरए करसें कही दिहा नागरसें;
हमरो तारता भव-सागरसें, कही दिहा नागरसें॥4॥

## झूमर—37

उधो, की कहब तोरा, भागले चोराए चित चोरा।
दए गेला दारुण दुख मोरा, की कहब दुख तोरा ॥
हमरा विसारि हरी, आवें जाए मधुपुरी
कुबुजीसें करत किलोरा, उधो! की कहब तोरा?
कएल सुन्न वृन्दावन, आरो सुन्न राधा-जीवन
कएल सुन्न यशोदा के कोरा, उधो की कहब तोरा?
एतए सभी सुखा गेल, यमुना मे बाढ़ भेल
नित पाबि गोपी-आँखिक लोरा, उधो! कीं कहब तोरा?
डारें न नाचत मोरा, फूले न बैठत भोंरा
ने सुनाबए मुरली के शोरा, उधो! की करब तोरा?
'भवप्रीता' हृदय-माझे, करथु ओ सदा विराजे
राधा-संगे श्रीनन्द'क किशोरा, उधो! की कहब तोरा?

## झूमर—38

उधो! हमरे अभाग, उधो! हमरे अभाग;
हुनक न दोष किछू ने हुनक-हित राग।
जाधरि लिलारें छलए माधव-सोहाग;

ताधरि सेबल हरी करी सभी त्याग ॥
मोहि तेजि कुबुजी सँगे नव-अनुराग;
देलथिन दरपणमा मे हीरवा के दाग ॥
जाधरि जीयबे सुख-भोगसँ विराग;
राखबे चरणमा मे मतिया सजाग ॥
भवप्रीता'क दैह प्रभो! विषवा के आग
देबइ जेना नाथी विषय-वासना'क नाग ॥

## कलङ्क-भञ्जन-पाला (घैरा-संगीत)

### घैरा—1

एक दिन नन्द जी के आँगनमे खेलए, ग्वाल-बाल संग गोपाल, हो!
रामा, खेलैंते-खेलैंते कृष्ण मुरुछि जे खसला, देखि सेहो कानए ब्रजवाल,
हो, देखि सेहो कानए...
शोर सुनिये राणी यशोमती दौड़ली, पिटए छाती लखि हरि'क हाल, हो!
रामा, बँहियाँ पकड़ि कृष्णकेँ गोद उठाबए, काँदे राणी शोकें बेहाल
हो, काँदे राणी शोकें...
अपन गृहें राजा नन्दजी जे अएला, कृष्ण देखि मूर्च्छित भूपाल हो!
रामा, छनहिमे नन्द जी'क अँगना जे भरले, गोकुला'क गोप-गोपीपाल
हो, गोकुला'क गोप-गोपी...
केओ हूँकए अँचरा दये, किओ कान फूकए, किओ शिर पानीसँ भीजाल हो!
रामा, भवप्रीता कहए धरी, हरि के चरणमा, पलक उघारिया नन्दलाल,
हो, पलक उघारिया...

### (खेमटा)

एतबामे तहाँ आबए वैद एक जइसन, कृष्ण-आकार नन्दजी के अँगनमा
देखि सभ'क चितें भेले, आशा अपार नन्द जी के अँगनमा, देखि...
वैद बैठाये, कर-जोड़ि कहए 'नन्द', जियाइ देहू कुमार, नन्दजी के अँगनमा
देबए दशभार सोनो आ' धेनुआ गुनिजन-हेतु हजार, नन्दजी के अँगनमा
वैदें कहए, जल सती जँ आनए, कलशी सहस्राधार, नन्दजी के...
वही जलें नाहीं जागता, कृष्ण तोहार, नन्दजी के अँगनमा...
सहस्र छिद्र कलशी राखी, सती के भेले पुकार, नन्दजी के अँगनमा
कहे 'भवप्रीता' हरि-पद-युग सार, नन्दजी के अँगनमा

## घैरा–2

सती बनी जे कुटिला गगरी धरी, गोरी शिरें गगरी धरी
ऐंठी-जोंठी यमुना-किनारे कि चलि गेली गरव भरी, ऐंठी...
जल जे धरत कलशी वनी झाँझरी, कलशी बनी झाँझरी
हेंठ-मुहें कुटिला जे लौटली, नन्दजी गृह-लाजें भरी-हेंठ-मुहें...
कुटिला हेरली आरो सब व्रज-नागरी, आरो सब व्रज-नागरी
पानी-भरए-चाहली नन्दरानी, रोकला वैद विनती करी, पानी भरए...
माइ के भरल पनिया ने जियए हरी, पनिया ने जियए हरी
'भवप्रीता' दिन-रात भावत, हरि-पद भवसागर-तरी, भवप्रीता...

## (खेमटा)

कृष्ण-मुख हेरि, मन-मोरि काँदए, राधा किशोरिया ना, हाय राम राधा-किशो...
ए सखि! हेरि भोरे जैसे मलिन चंदा, काँदए चकोरिया ना, ए सखि...
राधा कें देखाए कहए वैदे सती येहै बहुरिया ना, यहै बहुरिया ना...
पानी आनए लागी, हिनके हाथा दहो गागरिया ना, हाय राम...
राधा के कलशी दये यशोदा करए नेहुरिया ना, करे नेहुरिया ना
'भवप्रीता' कहए राधा के सूझए दिने अन्हरिया ना हाय राम सूझए...

## घैरा–3

काँखे कलशी लये धनी चलली यमुनमा, ना, हाय राम चलली यमुनमा...
तीर-बैठी, कर-जोड़ी प्रभु'क पुकारए ढर-ढर लोरा नयनमा ना, हाय राम...
हम जग-जानलि श्याम कलंकिनिया, ऐ मोरी गे, रामा मोरी गे!
झाँझरि गगरी हमें कैसे भरबे, लौटे व घरा-लै कोन मुँहमा ना, हाय राम!
गज के राखलहे प्रभु, अहल्या उवारलहे, ऐ मोरी गे, रामा मोरी गे!
भेले शून्यवाणी, पानी भरि जाह गोरी! नगरिया ना प्यारी! नगरिया ना
राखु लाज हिया काँपए डरें, ऐ मोरी गे, रामा मोरी गे!
'भवप्रीता' कहए प्रभु जी समयला, वही गगरि'क भितरिया, ना, हाय राम...

## (खेमटा)

दैववाणी सुनी भरए पानी, राधा हुलसि अपार, हाय राम राधा हुलसि...
शिरे कलसिया लये रुपसिया चले जैसे जग पनिहार, शिर-लये कलशिया
चन्द्र-मुखें हँसी सोहए नीलाम्बर गोर अंग सुकुमार, हाय राम गोर अंग
तीरछी नयनमा, ऊँची यौवनमा, पैयां बाजए झंझकार, हाय राम तीरछी...
चले सजनिया जोखे पैजनिया, तही परें चन्द्र'क हार, हाय राम तही परें चन्द्र...
भवप्रीता कहे वही जल माही, जगला नन्द कुमार, हाय राम, जगला...
एते छल करी, करेला जे हरी, राधा कलंक उबार, एते छल करी...

7

# काव्य-समीक्षा

कविवर सदुपाध्याय स्व. भवप्रीतानन्द जी'क रचनावली नै केवल, प्रसिद्धि'क दुआरेँ विवेच्य थीक अपितु साहित्यिक छन्द, अलंकार तथा रस-मीमांसा'क दृष्टियेँ सेहो प्रभूत महत्त्वावह अछि। स्व. सदुपाध्याय जी'क रचनावली जहिना परिमाण'क परिप्रेक्ष्य मे वज़नदार अछि तहिना, सांगीतिक दृष्टियेँ सेहो वेश लोकप्रिय बनि गेल अछि। ई, अधिकाधिक संख्यामे लोक-गीत'क रचना केने छथि। हिनक रचनासभकेँ विषय-वस्तु'क आधार पर निम्नांकित वर्गमे विभाजित कएल जा सकैछ। (1) धार्मिक एवं पौराणिक, (2) शृंगारिक, (3) नीतिपरक, (4) छिटपुट प्रसंग परक छन्द-विधान'क अनुसार हिनक रचनावली'क अधस्तन भेद भऽ सकैछ। जेना—

झूमर, घैरा एवं पाला गीत। झूमर—झूमर-संगीत-भवप्रीतानन्द पद्यावली। घैरा—घैरा-मंजूषा (अप्रकाशित)। *बृहत् झूमर रसमंजरी* (बँगला)।

कोनो लोककवि'क अलंकार-योजना'क निम्नांकित विशेषता भेल करैछ। (1) अलंकार'क सन्निवेश अनायास भेल रहैछ। (2) अलंकार-विधान मे नितान्त मौलिकता रहैछ। (3) एकर उपमान'क चयन पूर्ण ग्रामीण परिवेश मे भेल करैछ। तथा (4) आकृति-समता'क महत्त्व रहैछ। पं. रामनरेश त्रिपाठिओ कहैत छथि—'लोक-गीत हृदय का धन है, प्रकृति का उद्गार है, अतः इसमें अलंकार नहीं केवल 'रस' है। (*कविता-कौमुदी* भा. 5, पृ. 9)

सदुपाध्याय कविवर भवप्रीता'क लोक-गीत सभमे प्रायः साहित्यिक नवो रस'क उदाहरण उपलब्ध भऽ जाइछ। तएँ, अभिनव प्रख्याततर लोककवि 'भवप्रीता', अपन रचनागत वैशिष्ट्य'क चलतें सर्वथा अविस्मरणीय बनि गेल छथि।

काव्य-कला'क परमोपलब्धि, तकर रसोत्पादन-क्षमतामे मानल जाइछ। किएक तँ, कोनोटा काव्यमे, सिर्फ रसेकेँ दुर्ज्ञेय ओ सर्वश्रेष्ठ चमत्कारक आस्वाद्य पदार्थ बूझल गेल अछि। रस-स्वरूप'क नाम तथा तकर आस्वादनकेँ केवल काव्य-अध्ययन'क सर्वोपरि फल कहल गेल अछि। ऐ रस'क निष्पत्ति विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारिभाव'क संयोगसँ होइछ। "विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः" (भरतमुनि—*नाट्यशास्त्र*)। ऐ काव्य-रस'क महत्त्व-प्रतिपादन करैत कहल गेल अछि—

चतुर्वर्गफलास्वादमप्यतिक्रम्य तद्विदाम्॥
काव्यामृतरसेनान्तश्चमत्कारो वितन्यते (*वक्रोक्तिजीवितम्*)

तात्पर्य, काव्याध्ययन सँ उत्पन्न रसास्वाद, प्रसिद्ध धर्मादिचतुर्वर्ग'क फलानन्दोकेँ न्यूनकोटि'क बना दैछ। तही दुआरेँ, ध्वनिकार आचार्य आनन्दबर्द्धन एकठाम लिखने रहथि—'दृष्टपूर्व पदार्थो, रस'क योग-पओनें, वसंतकालिक द्रुमलतादि-जेकाँ नितान्त नवीन प्रतिभासित हुअऽ लगैछ। जेना—

दृष्टपूर्वा अपि ह्यर्था काव्ये रसपरिग्रहात्।
सर्वे नवा इवा भान्ति मधुमास इव द्रुमाः॥ (*ध्वन्यालोकः*)

ओना, ई एकगोट पृथक् विषय भऽ जाएत जे कविता'क भाव, सर्वबोधगम्य रहक चाही अथवा दुरूह। किएकतँ, यदि महाकवि तुलसीदास जी कहता—

कीरति, भणिति, भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई।

तँ 'नारिकेलि फलसम्मितभारवेर्वचः'—कहनिहार समीक्षको कम नहि उपलब्ध हेता। मैथिलीभाषा'क एक कवि तँ एतबा स्पष्ट रूपें कहि देलनि अछि जे

उत्तम कविता ओ 'मधुप' जकर गुप्त हो भाव।
तै उरोज पर टकटकी चोलि'क जतए दबाव॥ (*मधुप सतसई*)

मुदा, लोक-गीत'क रसाभिव्यक्ति-परम्परा एकगोट अपूर्वे कोटि'क स्वरूप-लेने दृष्टिगोचर होइछ। कोनोटा जन-गीत वस्तुतः, अत्यधिक रससिक्त भेल करैछ। रस, लोकगीत'क आत्मा होइछ। तएँ, कतेक गोटा'क कहब छनि जे लोकगीत की थिक, ई रससँ लबालव भरल प्याला थिक जकरा पिउला उत्तर पिपासा-शान्ति'क स्थानमे अओर वर्धिष्णुवे भऽ जाइछ। की मैथिली, की हिन्दी, की गुजराती, की बँगला वा की मराठी—प्रत्येक भाषा'क लोकगीतमे, ई रस-निर्झरिणी अविरल गतिसँ प्रवहमाना परिलक्षित होइछ जे जनजीवनकेँ हर-हमेशा आप्लावित करैत ओकरा परम सरल बनौने रहैछ। लोक-गीतमे आडम्बरविहीन जीवन'क स्वच्छन्द तथा कलुषहीन अभिव्यक्ति भेल रहैछ। लोकगीतमे शास्त्रीय समस्त रस-समुदाय'क अभिव्यक्ति उपलब्ध भऽ जाइछ। हँ, लोक-गीतमे शृंगार ओ करुण-रस'क वैशिष्ट्य किछु अधिकतासँ पओल जाइछ। ओना, कविवर सदुपाध्याय 'भवप्रीता'क काव्य-निकुञ्जमे, प्रायः सभटा रस'क अभिव्यक्ति भेल उपलब्ध भऽ जाइछ। पाठक'क सुविधा-लेल हम थोड़-बहुत मुख्य-मुख्य रस'क दिङ्निर्देश करक प्रयत्नवान् बनैत छी। जेना—

## वात्सल्य-रस

अँगनामे नन्द रैया, देखी-देखी नितरैया,
दैया नाचत कन्हैया।
ताली देथि यशोमति मैया, झमकि ठमकि तात'क थैया,

उक्त झूमरमे, श्रीकृष्ण'क बाल-लीला'क वर्णन कएल गेल अछि। आनन्द-विभोर भऽकए नन्द जी नितरा रहला अछि। माता यशोदा ताली (थोपड़ी) दऽ रहलथिन अछि। श्रीकृष्ण-कन्हैया नाचि रहलाहें। 'झमकि-ठमकि तात'क थैया, रे दैया, नाचत कन्हैया' कहिकए कविवर पूर्ण स्थिति'क अत्यधिक सजीव चित्रण कऽ देलनि अछि। धूल-धूसरित बालक कृष्ण हाथमे, वाँसुरी लऽ कए नाचि रहला अछि। बालककृष्ण'क ई शब्द-चित्रण, वस्तुतः, गीत-संगीत तथा नृत्य'क समन्वित मनोरम प्रतिरूप प्रस्तुत कऽकए, कोनो पाठककेँ, प्रचुर रसाक्त बना दैछ। ऐठाम शिशु कृष्ण आलम्बन छथि, हुनक झूमि-झूमि कए नाचब उद्दीपन तथा नन्द-यशोदा लोकनि'क नितरैब कि थोपडी बजएब संचारी बनि गेल अछि। अस्तु, वात्सल्य-रस'क पूर्ण परिपाक ऐठाम भऽ गेल अछि। जकरा स्पष्ट रूपें सकारल जा सकैछ।

## शृंगार-रस

(संयोग + विप्रलम्भ)—उक्त दूनू रूप'क चित्रण, भवप्रीतानन्दजी'क काव्यमे पर्याप्त रूपें प्राप्त होइछ।

जेना— नन्द के छैला कृष्ण वयसें नवीन गो,
बजाबये वंशी पैसी विपीन गो।
प्रेम चारा गाँथी वंशी फेकले गोबीन गो।
चारा-लोभें बाझि गेलो राधा-मानस-मीन गो॥

ऐठाँ नायिका-राधा-द्वारा, कृष्ण'क तरुण उमेर'क चित्ताकर्षक चित्रण कएल गेल अछि। अतः, श्रीकृष्ण आलम्बन छथि। निर्जन विपिनान्तरमे वंशी-वादन उद्दीपन तथा कृष्ण-साक्षात्कार ओ हुनक प्रति तीव्राकर्षण अनुभाव भेल। नायिका, अपन परिवार तथा कुटुम्वी जन सभसँ, कृष्ण-दर्शन हैतहिं अलग-थलग अनुभव करैछ। तएँ, आब नायकेटा ओकर एकमात्र आश्रय छैक। प्रेम'क उपक्रम ऐठाम नायिका-दिससँ आरब्ध भेल प्रदर्शित अछि। एतदर्थ नायिकारब्ध संयोग शृंगार थीक। ऐठाम, शृंगार रस'क पूर्ण अभिव्यक्ति भेल अछि।

तहिना, जखन श्रीकृष्ण, अपन नायिका राधा'क दर्शन करैत छथि तखन, हुनको अपन हृदय पर नियन्त्रण नहि रहि जाइछ। प्रेम-शरसँ आविद्ध, सम्मोहित ओ नितान्त आकृष्ट भेल निज नायिका राधा'क स्थितियेमे आबि जाइत छथि। जेना—

नैनासँ तीरा दियए मारी, ई केकरी बहुआरी।
गोर देहें सोहए नील साड़ी, ई केकरी बहुआरी॥

ऐठाम'क उपस्थापित शृंगार-रसमे, नील साड़ीमे, सुशोभित गौरवर्णी नायिका आलम्बन अछि। रति स्थायी भाव'क आश्रय श्रीकृष्ण थिका। नायिका'क सौन्दर्य

दिदृक्षा व्यभिचरित भाव कहल जा सकैछ। नायक-दिससँ चेष्टा प्रारम्भ हेवा'क कारणें नायकारब्ध शृंगार रस स्पष्टतः वर्णित भेल अछि।

**(क) संयोग (मिलन) शृंगार'क**—दर्जनों पद', *भवप्रीतानन्द पद्यावली* में संगृहीत भेल अछि। संयोगे-शृंगार'क अन्तर्गत 'मिलन'केँ विशिष्ट महत्त्व देल गेल अछि। उदाहरण—

"सांझे गेलौं भरए पानी, तहाँ अएला नीलमणी, बीचघाटे करए झिकझोर। सखीगे, बड़ा हठी कालिया-किशोर। बुझा ले ने बुझए बात, दियए चाहए देहे हाथ। दौड़ि कए गेलौं पराय, पीछु दौड़ी लटपटाय, देल मोर बँहियाँ मड़ोर।"—दौड़िकए पकड़ब, बांहि मड़ोरि देव, देह'क स्पर्श चाहव, इत्यादि भंगिमा सभ, उत्कट शृंगार रस'क उद्भावक ओ द्योतक थीक। ऐठाम, राधा-तथा-कृष्ण'क मिलन-प्रसंगमे, उन्मुक्त शृंगार रस'क धारा बहा देल गेल अछि। ऐ प्रकार'क कुड़िओ उदाहरण, भवप्रीता'क काव्य-संग्रहमे उपलब्ध भऽ जाइछ।

कविवर 'भवप्रीता' तँ सम्पूर्ण प्रकृतिये मे प्रेम-लीला देखैत छथि। जेना—'वर्षाऋतु मन्त्री आज, राजा भये मदनराज' वला पद्यमे। ऐठाम, वर्षाऋतु मन्त्री छथि। राजा 'कामदेव' मेघ'क नगाड़ा बजाकए युद्धार्थ उपस्थित भेला अछि। झिंगुर'क ध्वनि शंख'क ध्वनि थिक। विविधवर्णी 'फूलसभ अस्त्र-शस्त्र थीक। विजुली तलवार थीक। अबला रमणी, एहन संग्राममे, कामदेवसँ कोना मुकाबिला करए? ऐ पद्यमे, एके सँगे, लोकगीतकार'क मार्मिक अन्तर्दृष्टि, विशाल प्रकृतिसँ व्यंजनात्मक उपादान-संग्रहण'क सामर्थ्य तथा भारतीय काव्य-परम्परा'क महिमामय पक्ष'क उद्घाटन भऽ रहल अछि।

कवि, कृष्ण तथा राधा'क मिलनमे, सम्पूर्ण सृष्टिकेँ विविध रूपमे संवलित कऽ लेलनि अछि। राधा-कृष्ण'क ई मिलन केवल, वृन्दावनमे नहि घटित भऽ रहल अछि अपितु प्रत्येक स्थान ओ प्रत्येक स्तर पर, मानव तथा मानवेतर, समस्त प्राणि-जगतमे, उक्त विराट् प्रेम'क लीला भऽ रहल छैक; सैह देखेबा'क गीतकार कवि, पुरजोर प्रयत्न केलनि अछि। तएँ, ऐठाम क़वि'क उपमा, तकर उपमेय अओर उपमान, प्रस्तुत किंवा अप्रस्तुत-तकरा सभ'क व्यापक विधान, एकगोट अपूर्व मनोरम दृष्टि'क चिन्हारए करबैछ। एवं रूपें ई कवि, प्रेम'क विभिन्न भाँति'क भंगिमा सभ'क, नै केवल स्थूल वर्णन करैत गेल छथि, प्रत्युत सम्पूर्ण सृष्टिकेँ, ऐमे समाहित कऽ लेबा'क दृढतर आयास कएल गेल छैक।

सरिपौं, उपर्युक्त क्रमें, जखन नायिकाकेँ काम-कला-प्रवीणा बना लेल गेल अछि तखन, तँ, ओ नायिका, शताधिक वेर रस-विदग्ध नायक'क संग, मिलैत रहलो अछि जकर चित्रण कवि भवप्रीता'क रचनामे, विशुद्ध लोकभूमि पर उपस्थापित कएल गेल अछि।

तहिना, कविवर्य 'भवप्रीता', अभिसारो'क वर्णन बेजोड़ ढँग'क केलनि अछि। संभोग शृंगारमे, यदि चेत् अभिसार'क वर्णन नहि होइछ तँ अभिव्यक्तिमे पूर्ण सटीकता नहि मानल जाइछ। उक्त शृंगार-रस'क अभिसार-वर्णन, एकगोट अत्यन्त अनिवार्य

अंग बूझल जाइछ। अभिसारकेँ, प्रेम-परीक्षा'क कषौटी (निकष) मानल गेल अछि। अभिसार-शुक्ल एवं कृष्ण दूनू निशा'क पखवाड़ामे देखाओल गेल अछि। जैठाँ-तैठाँ दिवसाभिसारो'क चित्रण देखाओल गेल अछि। भवप्रीतानन्द राधिका नायिका'क तिमिराच्छन्न रात्रिमे घटित अभिसारो'क जीवन्त प्रतिबिम्बन केलनि अछि। जेना—

रिमि-झिमि बरिसए झरिया हो राम, राति अन्हरिया।
कइसे जएबे एकसरिया, हो राम, राति अन्हरिया॥

तथापि, काम-पीड़िता नायिका, श्याम'क सरस सुख'क स्पर्श हेतु निपट अन्हरिया रातिमे घर सँ निकलि दैछ।

बरसे साओन राति, निपट अन्हार अति, दूती! कइसे देखब नागर के। राति दुपहर के वरषे भादव राति, निशि ने सुझाय, विजुली छिटकै, छने मेघ गरजए। मौरा कुहु'क सुनि अवला डेराय, कारी कोईलिया रे सखी! जीहा जराय। मोहि ने सूझए डगरिया, भिजी चुनरी। नैना झरए जैसे झरिया, भिजी चुनरी। इत्यादि।

**(ख) वियोग (विप्रलम्भ) शृंगार**—जखन, नायक तथा नायिकामे, आपसी अनुराग अत्यधिक रहैछ मुदा, प्रिय समागम'क कोनो हेतुसँ अभाव भऽ जाइछ तँ वियोग (विरह) शृंगार'क प्रादुर्भाव भऽ जाइछ।

पूर्वराग एकर प्रथम भेद थिकै। जे दर्शन किंवा श्रवणसँ समुद्भूत होइछ। तैमे प्रियमूर्त्ति'क विविध रूपेँ दर्शन हेबा'क विधान निरूपित कएल गेल छैक। पूर्वराग'क विप्रलम्भ शृंगारमे, बहुत अधिक महत्त्व अछि। पूर्वराग पूर्णरति नहि कहबैछ। अतः, ऐठाम 'अभिलाषा' स्वाभाविक ऐछ।

सदुपाध्याय जी'क कवितामे पूर्वराग'क बहुत कलात्मक ढँगसँ अभिव्यक्ति भेल अछि। नायक एवं नायिकामे—ऐठाम समान-भावें पूर्वराग'क प्रस्फुटन होइत देखल जाइछ। जेना—

चांद-मुहें धीर हँसी, गीयारी लगाए फांसी, ई केकरी बहुआरी?
गोर देहें शोभए नीलसाड़ी, ई केकरी बहुआरी।
नैनासँ तीरा दियए मारी।

तहिना, कृष्ण'क प्रथम-दर्शनसँ दूती किंवा नायिका'क मनोदशा'क चित्रण देखू—

नन्द'क छैला, कृष्ण वयसें नवीन गे!
बजाबए वंशी पैसी गहन विपीन गे!!
त्रिभंग मूरति सोहान गे दूती! श्यामली मूरति सोहान।
नीलकमल वदन, भौंआ धनुष जैसन, नील अंगे पीताम्बर,
मेघे विजुरी सुन्दर...आदि।

**(ग) मान**—प्रियापराध-जनित कोपकेँ 'मान' कहल गेल अछि। विप्रलम्भ शृंगार'क अन्तर्गत 'मान'क एकगोट प्रमुख स्थान अछि। ई दुधरिया तलवार थिक। एकर चोट-आघात केनिहार तथा जकरा पर एकर प्रहार पड़ैछ-दुनू गोटा पर तुल्य भावें पड़ैछ। एकरो दू भेद—प्रणयमूलक एवं ईर्ष्यामूलक। चन्दा-सँगे, रस-रँगे, रतिया बिताय, भोर'क बेरिया, रे बंधु! यहाँ काहे आय।

**(घ) प्रवास**—नायक-नायिका'क ककरो एकटा'क विदेशमे हएब 'प्रवास' कहबैछ। से प्रवास, कार्यवश, भाववश अथवा शापवश भऽ सकैछ। जेना—

'आँग गेल, समाँग गेल, गतर विलाये गेल, भावी-गुनी झाँझर देहिया।'
राति-हेरि, मोन पड़ए, सुख-राति गेल गे!

**हास्य-रस**—विकृत आकृति, वचन वा चेष्टा आदिकेँ देखिकए 'हास्यरस'क प्रादुर्भाव होइछ। एकर स्थायीभाव 'हास' थिकै। आलम्बन दोसरा'क वेश-भूषा, आकार-निर्लज्जता अथवा अन्य रहस्यगर्भित वाक्य इत्यादि उद्दीपन, हास-जनक चेष्टादि अनुभाव, ओष्ठाधरनासादिक'क स्फुरण प्रभृति संचारी आलस्य, निद्रा आदि। हास्य'क न्यूनाधिकत्व लए एकरो भेदानुभेद कएल जा सकैछ।

कविवर भवप्रीतानन्द, एक भावप्रवण गम्भीर रचनाकार छला। अतः, हिनक काव्य-सर्जनामे, हास्यकेँ कोनो ततबा महत्त्व नहि देल गेल छैक। मुदा, जखन हिनक परिपूर्ण काव्य-संसार'क आलोड़न-विलोड़न कएल जाइछ तँ थोड़-बहुत रचना हास्यो रस'क अवश्ये उपलब्ध भऽ जाइछ। जेना—दारुण बुढ़ापा देलऽ देखा, मुँह भेल वानर के जोषा। सुन्दर तरुण-होड़, वाबा कही लागए गोड़, एकहुँ न कहए प्राण-सखा।—ऐठाम उज्जरकेश, चोकटल मूँह, बनरी-सन भऽ गेल आकृति-यदि आलम्वन थीक—तँ सुन्नरिसभसँ प्राण-सखा-सम्बोधन'क लालसा किंवा निर्लज्जता उद्दीपन—जेसभ हास्य'क सृष्टिमे सहायक छैक।

तहिना 'नारी! तोर बलिहारी'-झूमर किंवा 'लफन्दर-माहात्म्य', कलियुग-महिमा, आलू चप-परिचय प्रभृति हास्य-विनोदसँ सम्वद्ध रचना सभ थिक। शिवविवाह-सम्बन्धी झूमरमे गौरी'क सखी लोकनि'क उक्ति, स्थूल हास्यरस'क सर्जना करैछ। वर के ने हीरा-मोती, हाड़'क माला, चाम'क धोती।

गौरी-वर वम भिखारी, जटा'क नाग उठए फुफकारी॥
वर के भसमसंग, मलिन होत सोना'क अंग, भूता'क रँग देखी जेबहें डरी। आदि

**करुण-रस**—बन्धु-विनाश, धर्म'क अपघात, द्रव्यनाश अथवा अनिष्ट घटनावलीसँ 'करुणरस'क सृष्टि होइछ। एकर स्थायिभाव थीक 'शोक'। विनष्ट बन्धु'क पराभव आलम्बन, प्रिय व्यक्ति'क स्मृति, वस्त्राभूषण'क साक्षात्कार-क्रियाकलाप''क श्रवण-स्मरण उद्दीपन, दैव-निन्दा, भूमि-पतन, प्रलाप इत्यादि अनुभाव तथा दैन्य, विषाद, निर्वेद, चिन्ता आदि संचारी-भाव कहबैछ।

श्री सदुपाध्याय जी'क *घैरा-मंजूषा*'क 'रामवनगमन'-प्रसंगमे कौशल्या, दशरथ इत्यादि'क विलाप करुण-रस'क प्रभूत मार्मिक अभिव्यक्ति दैछ। जेना—

सुनैते मुरुछि खसले राजा, उठी करे हाहाकार। हाय राम, उठीकरे हाहाकार गे।
अंचोकाही तीर मारले रानी, देलें करेजवा फार गे...हाय राम...
तेल-घृत विनु बरे ने दियरा विनु पानी कमल संहार...हाय राम
राम'क बिना हमें कबहुँ न जियबे, अबध होयते अन्हार गे...हाय राम आदि।

उपर्युक्त रचनामे राम आलम्बन छथि। राम-वियोग'क शोक स्थायीभाव। निर्मल चरित्रवला राम'क भावी राज्याभिषेक'क स्मृति उद्दीपन, राजा'क मूर्च्छित भऽ कए भूमि-पतन अनुभाव थिक आओर हुनक दीनता संचारी थिक। ऐठाम करुण रस'क परिपूर्ण परिपाक़ भेल अछि। पुनः, अहिना एन-मेन घैरा-संख्या-12 मे, जननी कौशल्या'क स्थिति'क चित्रण कएल गेल अदि। *झूमर-रस-मंजरी*मे, दशरथ'क मृत्यु समाचार भरत-मुखें सुननें धीरोदात्त नायक राम'क हृदयद्रावक शोको करुण रस'क अपूर्व सृष्टि कऽ देबा'क उदाहरण थीक।

एवंक्रमें, हमरा लोकनि देखैत छी जे सदुपाध्याय जी करुण-रस'क रचना-प्रसंग मे समय'क फेर, करुण-कथा, कारुणिकता, मर्मव्यथा, विनय-विपत्ति, मनोव्यथा, अन्तर्वेदना—सभ कथू'क सम्यक् वर्णन कऽ देलनि अछि। अतः, करुण रस'क सृष्टिओ करबा मे कवि पुंगव श्री सदुपाध्याय जी सिद्धहस्त जँचैत छथि।

**शान्त-रस**—तत्त्वज्ञान आओर वैराग्य सँ शान्तरस'क उत्पत्ति होइछ। *भवप्रीतानन्द-पद्यावली*मे, पृ. 7 सँ 10 धरि, चारिगोट झूमर निर्गुणपरक अछि जे शान्त रस'क प्रादुर्भाव करैछ। ई निर्गुण सभ संसार'क निःसारता'क बोध करबैछ। अथच, ईश्वर-चिन्तन'क दिशा मे उन्मुख करैछ।

जेना— धनजन परिवार, छन मे सभे उजार दारुण संसार
छी रे दारुण संसार, तोरासँ उचटै जी हमार।
'भवप्रीता' कहए सार, एकहि चैतन्याधार, आरो सभी सपन अकार।

एतए धन-जन-परिवार'क क्षणभंगुरता-आलम्बन, तकरासँ जी'क उचटब अनुभाव। सद्बुद्धि'क उदय संचारी भाव। तएँसँ, ऐठाम 'शान्तरस' ध्वनित होइछ।

**भक्ति-रस**—ऐ रस'क स्थायीभाव 'देवानुराग' थिक। अनेको आचार्य एकरा स्वतन्त्र रस नहि मानलनि अछि। ओ लोकनि एकरा शान्त-रसेमे समाहित कऽ दैत छथि। मुदा, संसार'क निःसारता-जन्य प्रतिक्रिया जेना ककरो वैराग्य-दिस ढकेल दैछ तहिना वैराग्य'क अतिशयता कोनो व्यक्तिकेँ देवी-देवता लोकनि'क आराधना-उपासना-दिस सेहो झुका दैछ। वैराग्यमे जतए निवृत्ति रहैछ भक्तिमे ततए प्रवृत्ति-प्रधान रहैछ।

किछु गोटे भक्तिकेँ देवादि विषयक 'रति' कहि कए एकरा शृंगारमे रखैत छथि; मुदा, शृंगार लौकिक नायक-नायिके धरि सीमित रहैछ। ओइठाम कामुकता

अनिवार्य रहैछ किन्तु भक्तिमे तेहन कोनो तथ्य नहि दृष्टिगोचर होइछ। तएँ, भक्तिकेँ एकगोट पृथक् 'रस' मानबामे कोनोटा हर्ज नहि अछि। एकर आलम्बन ईश्वर, देवता, गुरुजन, प्रभृति थिका, उद्दीपन हुनका लोकनि'क कल्याणकारी कार्य, अनुभाव नेत्रादिक'क निमीलित रहब, गदगद हएब, झूमब, रोमांचित बनब, नाचब आदि थिक; आवेग, चपलता, दैन्य, स्मृति इत्यादि संचारिभाव थिक तथा आश्रय भक्त थिक। जेना—

हे शंकर दानी, दया कए राखु अधम प्राणी॥धु.॥
त्रिभुवन-महादानी, सबह'क गुरुज्ञानी
महामानी प्रलयकरण, हर शूल पाणी। हे शंकर दानी...
व्याध भीलहि जाती, तेकरो देलहे सुगतीः
कृपामणि, पारसमणि वाणासुर राखलें कैलासें आनी। हे शंकर दानी...
जेकरो ने पूछए कोइ, तोहरा सेहो प्रिय होइ
चिता-भसम, हाड़ चाम पिन्हऽ कछनी आनी। हे शंकर दानी...
'भवप्रीता' कहओ रोइ, हमरा ने चाहए कोइ
राखि लैह दया करी, परमदीन जानी। हे शंकर दानी...

ऐठाम शंकर दानी आलम्वन, हुनक विचित्र दान-प्रक्रिया उद्दीपन तथा मनमे तेहन अनुमान कए प्रार्थी'क भाव आनव अनुभाव तथा हुनके गुणावली'क स्मृति, संचारी भाव थिक। तएँ, ऐठाम स्पष्ट 'भक्तिरस' अछि।

साधारणतः भक्ति, अपने आपमे साध्य एवं साधन दूनू मानल गेल अछि। भारतीय वाङ्मयमे, रसिक भक्ति केनिहार सन्त कविगण'क एकगोट विशाल परम्परा ओ संख्या उपलब्ध होइछ। ऐ दिशामे, राम तथा कृष्ण भक्ति-शाखामे, कतवा वैष्णव रसिक साधक लोकनि, अद्यावधि भऽ गेला अछि-तैपर बहुत किछु शोध-कार्य भऽ चुकल अछि। केवल, शिव भक्ति परम्परा मे, हिनक रसिक भक्ति साधना'क कोन-कोन मुख्य-मुख्य गढ़ वा रसिक भक्त लोकनि भेल छथि—तै दिसामे, हमरा बुझनें कोनो ठोस एवं उल्लेख्य शोध-प्रबन्ध नहि तैयार भऽ सकल अछि। भवप्रीतानन्द'क समग्र काव्य-संसार'क अवलोकन, पृथक्-पृथक् देवी-देवतासँ समन्वित भक्ति-रस-सम्बद्ध सरस एवं उत्कृष्ट रचनावली-द्वारा, भक्ति रस'क सुरसरितमे आपाद-मस्तक अवगाहन-हेतु यथेष्ट अवसर प्रदान करैछ। हिनक काव्यावलीमे भक्ति रससँ सम्बद्ध रचना संख्या तथा उत्कृष्टता'क दृष्टिसँ सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग मे परिगणित श्री वैद्यनाथेश्वर'क शिवधाममे जन्म-हेवा'क चलतें उत्पन्न संस्कार, शाक्त परिवार'क कौलिल परम्परा, मैथिल विचारधारा'क प्रभाव, वैष्णव कविलोकनिक' कृष्णलीलापरक रचनावली'क स्वाध्याय, सुदपाध्याय श्री भवप्रीतानन्दकेँ एक उच्च कोटि'क भक्त कवि के रूपमे प्रतिष्ठित कऽ दैत छनि। मैथिल संस्कार वशात् ई, प्रभूत रचना,

त्रिदेवोपासना-परक लिखि गेल छथि। हिनक शृंगार-प्रधान रचनाओमे, भक्ति-विवश प्रार्थना तथा उत्कट ईश्वर-दर्शन-लालसा अभिव्यक्त भेल अछि। *भवप्रीतानन्द-पदावली*मे, यद्यपि 12 गोट विशुद्ध भक्तिपरक रचना प्रकाशित भेल अछि तथापि हिनक कोनोटा शृंगार किंवा निर्गुणपरक झूमरोमे ईश्वरे'क परिदर्शनमूलक अभिलाषा वेर-वेर प्रकटित भेल अछि। महाकवि विद्यापतिये-जेकाँ, इहो अभिनव विद्यापति श्री भवप्रीता जी कृष्ण भक्ति एवं शिव-शक्ति-उपासनामे अत्यधिक रमल दृष्टिगोचर होइत छथि।

**अलङ्कार-निरूपण**—कविवर भवप्रीतानन्द जी'क कविता-कामिनी'लेल नानागोट अलंकार प्रसाधन (पसाहनि) अपने आप एकत्रित भऽ गेल अछि। जएँ, प्रत्येक मानव निसर्गतः अलंकार प्रिय होइत अछि तएँ, ओ अपन सम्पर्कमे एनिहार प्रायः प्रत्येक वस्तुकेँ रुचिरतर स्वरूप मे देखऽ चाहैछ। एकर यैह—प्रवृत्ति जतए नर-नारी लोकनि'क जिनगीमे नाना भाँति'क सौन्दर्य-प्रसाधन सभ'क ओ तकर उपादान सभ'क आविष्कार कऽ देलक अछि ओहीठाम, काव्य क्षेत्रोमे अलंकार सभ'क सर्जना कऽ लेलक अछि।

अलङ्कार शब्द 'अलं उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातुसँ निष्पन्न भेल अछि जकर दू विधियेँ व्युत्पत्ति कएल जाइछ। जेना—

(1) अलं करोति इति अलंकारः अर्थात् जे सजबैत वा सुशोभित करैत अछि से 'अलंकार' थीक। (2) अलं क्रियते अनेन इति अलंकारः जकरा द्वारा सजाओल वा सुशोभित कएल जाए। ऐ दूनूमे, प्रथम व्युत्पत्ति'क अनुसार अलंकार कर्त्ता वा विधायक सिद्ध होइछ। जखन कि दोसर व्युत्पत्ति'क अनुसार, ई साधनमात्र प्रमाणित भए रहि जाइछ। मुदा, काव्यशास्त्रमे गृहीत अर्थ'क दृष्टियें अलंकार'क उक्त दोसर परिभाषा अधिक समीचीन ओ ग्राह्य जँचैछ। जेनाकि कहलो गेल छैक—'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।' जतएधरि अलंकारवादी आचार्य लोकनि तथा हुनका लोकनि'क द्वारा अलंकार सभकेँ काव्यमे प्रमुख स्थान देल जेबा'क प्रश्न अछि तँ ऐ दिशामे, सर्वप्रथम उल्लेखनीय आचार्य 'भामह' थिका। तदुत्तर, दण्डी, वामन तथा जयदेव लोकनि'क अथवा मैथिली भाषा'क आचार्य लोकनि'क स्थान अवैछ। अलंकार सभ'क विस्तारसँ विवेचना करैत आचार्य भामह 'वक्राभिधेय शब्दोक्ति'केँ अलंकार स्वीकार करैत ई विचार व्यक्त केलनि अछि जे वाणीमे सौन्दर्य अनै'क हेतु, उक्त 'वक्राभिधेय शब्दोक्ति'क प्रयोग आवश्यक थीक। जेना—

न नितान्तादिमात्रेण जायते चारुता गिराम्।
वक्राभिधेयशब्दोक्तिरिष्टा वाचामलङ्कृतिः॥

तात्पर्य नितान्त स्वाभाविक रूपसँ वाणीमे चारुत्व नहि अबैछ। तदर्थ अर्थात् वाणी'क चारुता-लेल 'वक्राभिधेय शब्दोक्ति'क प्रयोग आवश्यक भऽ जाइछ। अभिप्राय ई भेल जे भामह'क दृष्टिमे, वाणीकेँ अलंकृत करऽवला तत्त्व अलंकारे थीक। दण्डी तँ लिखनै रहथि—'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारन् प्रचक्षते।' पुनः, आचार्य वामन

मानै छथि जे 'काव्यं ग्राह्यं अलंकारात्' अर्थात् विना अलंकार'क काव्य ग्राह्य नहि बनैछ। चन्द्रालोककर्त्ता आचार्य जयदेव तँ आश्चर्य प्रगट करैत लिखै छथि जे बिना उष्णता'क जेना आगि'क कल्पना करब असम्भव थिक तहिना, विना अलंकारो'क काव्य बनि सकैछ—से पूर्ण अकल्पनीय जँचैछ। देखू ओ कथन—

अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलं कृती॥

अस्तु, किछु तेहने पृष्ठाधारमे, कविलोकनि निज-निज कवितामे अलंकार'क साकांक्ष ओ सायास सन्निवेश करैत रहला अछि। भाव ओ भाषाकेँ प्रभावशाली ढंगसँ सम्प्रेषित करैक लेल, कविलोकनिकेँ निज रचना-कौशलमे अलंकार'क प्रयोग अनिवार्य रहैत रहलनि अछि। कवीन्द्र रवीन्द्रो एकठाम लिखने छला—'हमर सुख-दुख हमरे लग अव्यवहित अछि तोहर समीप तँ से, तेना नै छौक। हमरासँ तों, दूर छेँ अही दूरी'क विचार कऽकए, अपन कथन तोहर नजदीक किछु बढ़ा-चढ़ाकए कहए पड़ैछ।' सत्य-रक्षण करैत ऐ बढ़बै'क क्षमता-द्वारा साहित्यकार'क यथार्थ परिचय उपलब्ध होइछ ('उपमा कालिदासस्य', शशिभूषण दास गुप्ता, पृ. 6)।

कविवर 'भवप्रीता'मे, परन्तु, तै अलंकार सभ'क सन्निवेश नितान्त नैसर्गिक रूप मे अभिव्यक्त भेल दृष्टिगोचर होइछ। सरिपौं, ओ, कहियो काव्यशास्त्र'क प्रशिक्षण नहि लेलनि। ओ, जे किछु लीखल करथि ताहिमे कहियो पाण्डित्य-प्रदर्शन'क भाव नहि आवए देलनि। हम, ऐठाम, हुनक निसर्गागत किछु तै अलंकार सभ'क दिस प्रवुद्ध पाठक लोकनि'क ध्यान आकृष्ट कऽ दैत छी।

कविवर भवप्रीतामे, ओना तँ शब्दालंकार तथा अर्थालंकार-दूनू कोटि'क अलंकार सभ'क स्वाभाविक अभिव्यक्ति उपलब्ध भऽ जाइछ तथापि अर्थालंकार'क प्राचुर्य देखिते बनैछ। ताहूमे 'उपमा', रूपक, उल्लेख, तुल्ययोगिता, उदाहरण, विभावना, संसृष्टि, अर्थान्तरन्यास, समुच्चय, काव्यलिंग, निदर्शना प्रभृति अर्थालंकार कविकेँ अधिक प्रिय-सन लगैत जँचैत अछि।

**शब्दालंकार**—'जय जयति हर-हर, करुणा सागर, चन्द्रधर परमेश्वर'वला पद्यमे 'र' वर्ण'क वेर-वेर आवृत्तिसँ 'अन्त्यानुप्रास' स्पष्टतः उपलब्ध भऽ जाइछ।

'सभे देखाइ जइसन लाल, लाले लाल बनी अएला गौरी के लाल' वला पद्यमे भिन्नार्थक 'लाल' पद'क विन्याससँ 'यमक' अलंकार साफ-साफ झलकि उठल अछि। किएक तँ कहल गेल अछि—

स्वरयुत व्यञ्जन-संघपुनि क्रमसँ आवृत देखु।
अर्थ पृथक् सभठाम तँ यमकालंकृति लेखु॥

'वीप्सा'-अलंकार'क उदाहरण-लेल 'कलपि-कलपि फाटे हिया (तजि गेला, हे

माधव पिया) अथवा 'दारुण पपीहा रटए पिया-पिया'क पद्य सभ देखल जा सकैछ। तहिना, 'डिमि-डिमि, डिमि डमरू बाजे' अथवा 'श्याम चले राधा के पास'वला पद्यमे 'वम्-वम्, वम्-वम् बाजे गाल'मे 'डिमि-डिमि-डिमि' तथा 'वम्-वम्-वम्-वम्' इत्यादि शब्द-विन्यासमे, 'पुनरुक्ति प्रकाश' किंवा ध्वनिसादृश्यमूलक (Onomatopoeia) अलंकार'क नमूना देखल जा सकैछ।

**अर्थालंकार**—ऐ अलंकारकेँ विवेचक लोकनि पाँच वर्गमे रखलनि अछि। (i) साम्यमूलक—उपमा, रूपक, दृष्टान्त आदि। (ii) विरोधमूलक—विरोधाभास विभावना, असंगति अथवा विशेषोक्ति इत्यादि। (iii) शृंखलामूलक—एकावली, सार, दीपक आदि। (iv) न्यायमूलक—काव्यलिंग, मीलित, तद्गुण, परिसंख्या प्रभृति। तथा (v) वस्तु वा गूढ़ार्थ-प्रतीतिमूलक—व्याजोक्ति, सूक्ष्म, मुद्रा आदि। यतः, कविवर 'भवप्रीता' कोनो अलंकार-मीमांसा ग्रन्थ नहि लिखैत रहथि तएँ, हुनक रचनावलीमे, प्रत्येक अलंकार'क दृष्टान्त ताकव व्यर्थ प्रयास कहाओत। तखन, एतबा तँ देखार सत्य अछि जे हुनक काव्यात्मक वाङ्मयमे, मुख्य-मुख्य प्रायः प्रत्येक प्रचलित अलंकार'क उदाहरण उपलब्ध भऽ गेल करैछ। "उपमा कवि-वंशस्य मातैवेति मतिर्मम"—राजशेखर कहैत छथि—कवि'क समाजमे 'उपमा' नामक अलंकार समस्त अर्थालंकार'क जननी-तुल्य थीक। सदुपाध्याय कविवर भवप्रीतानन्द'क वाङ्मयमे, तकर भेदोपभेद-पर्यन्त उपलब्ध भऽ जाइछ। कविवर 'भवप्रीता', ऐ अलंकार'क जेना खुलि कए प्रयोग करैत रहथि।

'रोग-सोग अपमानि, नारी-सुत-धन-हानि'
दारुण संसार रे, वरसए बरछी जे हजार।

(पद्यावली-8) दारुण संसारमे, रोग-शोक-अपमानादि के सहस्रो बर्छी बरषैत अछि। उक्त भदवारी निर्गुणक सैह वर्ण्य विषय छैक। रोग-शोकादिक'क समता बर्छीसँ कएल गेल अछि। तएँ, उपमा अछि। तहिना, नीलकमल वदन-जइसन, भौंहा। धनुषा जइसन अथवा 'यौवन-जइसन कीया लाल दिहऽ देवा, कन्हैया-अइसन पिया लाल दिहऽ देवा। अथ च, दुइयो रे यौवन-जइसें मदन-कलशीया-उक्त प्रत्येक पद्य ओ स्थलमे, उपमा अलंकार'क रङ्गीन छटा वस्तुतः परम मनोहर प्रीतीत हुअऽ लगैछ।

'शीष पर मुकुट जे विकट भुजंग' पद्यमे, जेकि विद्यापति'क सुर ओ प्रभावमे विरचित भेल 'नचारी' प्रतीत हैछ—भगवान शिव'क मस्तक पर विकट सर्प'क शोभा पएब—चित्रित कएल गेल अछि। ऐ पूर्ण रचनामे 'विरोधाभास' ओ 'व्याजस्तुति'-द्वारा शिवजी'क चित्रांकन कएल गेल अछि। मुकुट ओ सर्पमे, पर्याप्त विषमता छैक तथापि, आचार्य भामह के कथनानुसार—

विरुद्धेनोपमानेन देशकालक्रियादिभिः।
उपमेयस्य यत्साम्यं गुणलेशेन सोपमा॥

(*काव्यालंकार*-भाष्यकार—देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृ. 40)

तहिना,

उपमान'क उपमेय मे तद्रूपत्व अभेद।
हो आरोपन तँ दुनू जानु रूपक'क भेद॥

अर्थात् उपमेय पर उपमान'क जँ निषेध-रहित आरोपण हुअए तँ तैठाम रूपक अलंकार'क सृष्टि होइछ। 'रूपक'क परिभाषा करैत आचार्य दण्डी लिखने छथि—'उपमैव तिरोभूत भेदा रूपकमुच्यते।' (*काव्यादर्श* 214, पृ. 66)

'गौर अंग, जटा-गंग, सुमुकुट मणिमय भुजंग'

सुदपाध्याय जी'क उक्त पद्य मे, शिवजी'क माथ पर माणिक्य युक्त सर्प मुकुट-जेकाँ शोभित अछि। एहन उक्तिमे, स्पष्टतः 'रूपक' अलंकार उद्दीपित भऽ उठैछ। उपमेय सर्पमे उपमान मुकुट'क निषेधरहित आरोप कएल गेल अछि।

तहिना, 'लोहा के रामधनुक शोभा उजियार' वला पद्यमे उपमेय लोक ओ रामधनुक्-दुनूकेँ एक कऽ देल गेल अछि। उपमान 'रामधनुक'क धर्म 'शोभा उजियार' द्वारा ज्ञापित कएल गेल अछि, तएँ, 'रूपक' अलंकार पूर्ण सुस्पष्ट अछि।

रॉबर्ट ग्रेब्स *दि इंगलिश बैलेऽ* पुस्तक'क भूमिकामे लिखने रहथि—'लोकगीत सभमे, अलंकारादिक'क सन्निवेश अनायास भऽ गेल करैछ तथा रचना-विधान'क दृष्टियें, ओ सभ रचना, बहुत समृद्ध नहि भेल करैछ।' मुदा, कविवर भवप्रीतानन्द'क वाङ्मय तकर अपवाद परिलक्षित होइछ। हिनक साहित्य-समुद्रसँ शताधिक आभूषण ओ रत्न बहार कएल जा सकैछ। आवश्यकता अछि प्रौढ़ समीक्षक ओ पर्याप्त विवेचनामूलक बृहत्काय ग्रन्थ-रचना'क। ऐठाम, हम सिर्फ सामान्य पाठक सभ-लेल दिङ्निर्देश मात्र कऽ देल अछि।

---

# आवश्यक ज्ञातव्य तथ्य पुंज

(1) **भवप्रीतानन्द ओझा के काव्य का अनुशीलन**—डॉ. शंकर मोहन झा (व्याख्याता, गोवर्धन महाविद्यालय, हिन्दी-विद्यापीठ, देवघर)'क शोध-प्रबन्ध'क विषय छल; जाहि पर 1997 ई.'क अक्टूबर माहमे, हिनका पी-एच.डी. उपाधिसँ, तिलका माझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर सम्मानित केलकनि। डॉ. शंकर मोहन झा'क जन्म 14 अप्रिल, 1954 ई.मे, श्रीमान् शशांक मोहन झा अँड़ैवार'क पूजनीय पण्डा-परिवारमे भेल छलनि। ई, 1972 ई.मे, प्रथमतः बी.एस.सी. केलनि। तदुत्तर 1975 ई. मे बी.ए. एवं 1986 ई.मे एम.ए. (हिन्दी)'क परीक्षा तिलका माझी विश्वविद्यालय, भागलपुरसँ केलनि।

डॉ. शंकर मोहन 1967 ई.सँ गीत, नवगीत गज़ल, निबन्ध इत्यादि हिन्दी रचना करैत रहला अछि। हिनक रचना सभ ज्योत्स्ना, कला, विद्यापीठ-पत्रिका वगैरहमे बहुत पूर्वेसँ प्रकाशित होइत रहलनि अछि। ई. 1975 ई. मे, हिन्दी-विद्यापीठ, देवघर'क परीक्षा विभागमे, प्रथमतः नियुक्त भेल रहथि। तदनन्तर, निज योग्यता-क्षमता'क समुचित विकास केला उत्तर, ई 1984 ई.मे, गोवर्धन महाविद्यालय, हिन्दी विद्यापीठ'क शिक्षण-विभागमे संयोजित कऽ लेल गेला। सम्प्रति, हिन्दी विद्यापीठ'क पत्रिका'क सम्पादन-कार्य सेहो यैह 1977 ई.'क अप्रिल मासँ कऽ रहल छथि। पुस्तक-समीक्षा सभ'क अतिरिक्त ई लगभग एक दर्जन हिन्दी निबन्ध गद्य रचना सेहो कऽ चुकल छथि। साहित्यकार'क सम्मान एवं साहित्यानुशीलन करब, हिनक नैसर्गिक गुण भऽ गेल छनि।

(2) **श्रीयुत उदयकान्त झा**—(पुस्तक पाल सन्थाल-परगना-महाविद्यालय, दुमका) सेहो सम्भवतः, मैथिली भाषामे, अभिनव विद्यापति (श्रीमान्) सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द ओझा पर निज शोध-कार्य, प्रो. एवं प्राचार्य डॉ. श्री विद्यानाथ झा 'विदित'क निर्देशनमे, कऽ चुकल छथि। ऐ पुस्तक-प्रणयन के क्रममे, उक्त 'झा' जीसँ हमरा साक्षात्कार करबा'क अवसर नहि उपलब्ध भऽ सकल।

(3) **दादूमणि**—उक्त कलाकार, दिवंगत भवप्रीतानन्द जी'क तान्त्रिकी पूजासँ सम्बद्ध, लगभग 300 सौसँ उपर 'चित्रावली ओ रचना, अपन संग्रहमे रखने छथि; परन्तु, तै रचना सभसँ कोनो आन शोधकर्त्ताकेँ लाभान्वित हुअऽ देबा'क हुनक मंशा नहि रहैत छनि-से, अनुश्रुत भेल अछि।

(4) **दुर्गाचरण झा 'दुर्गेश'**—जखन, *धैरा-संगीत*, स्थानीय 'दि कुईक प्रेस'मे मुद्रित होइत छल तँ 80 पृष्ठ तक मुद्रित भऽ गेला उपरान्त जे किछु प्रेस-कॉपी अवशिष्ट (मुद्रणाधीन) रहि गेल—से 'दुर्गेश' जी राखि लेलनि, जे अद्यावधि, हुनके 'संग्रहालय'मे निगूहित अछि।

(5) **सर्वश्री शंकरदत्त झा द्वारी** (देवघर), **शिवपूजन झा** एवं **उपेन्द्रनाथ पाण्डेय** (रोहिणी 'झूमर संगीत'-गायक) लोकनि'क पास, ओझा जी'क प्रकाशित-अप्रकाशित कतिपय रचनावली'क संकलन छनि जे उक्त सज्जन लोकनि'क परोक्ष भेला उत्तर, विनष्ट भऽ जेबा'क अधिक सम्भावना बुझाइछ।

(6) **डॉ. मोहनानन्द मिश्र** (प्राचार्य, बालानन्द संस्कृत महाविद्यालय, करणीवाद, देवघर) कहलनि जे हम मैथिलीी भाषामे *कविवर भवप्रीतानन्द ओझा; व्यक्तित्व एवं कृतित्व* नामक पुस्तक लिखि चुकल छी जकर प्रकाशन-लेल मैथिली ग्रन्थ अकादमी, पटना (बिहार) हमरा अपन स्वीकृति दऽ चुकल अछि। बिहार'क राजनैतिक उथल-पुथल'क चलतें, सम्प्रति, तै पुस्तक'क मुद्रण कि प्रकाशन-कार्य अवरुद्ध भऽ गेल अछि। विश्वास अछि अनुकूल समय-पबितहिं ओकर प्रकाशन हेबे करत। प्राचार्य श्री 'मिश्र' जी, अधिक काल शोध-प्रबन्ध लिखि-लिखि प्रकाशित करबैत रहैत छथि। भवप्रीतानन्दसँ सम्बद्ध हिनक कतिपय निबन्ध दैनिक समाचारपत्रो सभमे प्रकाशित भऽ चुकल छनि।

कविवर भवप्रीतानन्द जीसँ सम्बद्ध, लेखक-द्वारा अवलोकित किछु रचनावली'क तालिका—

(i) *मैथिली'क महान् लोकगीतकार भवप्रीता* (ले. प्रो. सत्यधन मिश्र) मिथिला-दर्शन (मै. मासिक, सं. प्रो. प्रवोधनारायण सिंह) कलकत्ता, अप्रैल 1961 ई.

(ii) *भवप्रीता के लोकगीत* (नई धारा, पटना—रामवृक्ष बेनीपुरी, हिन्दी मासिक, अप्रिल 1961 ई.—ले. सत्यधन मिश्र)

(iii) *महाकवि भवप्रीता'क साहित्य सेवा* (ले. सत्यधन मिश्र, 'वैदेही' (मैथिली मासिक, दरभंगा, जुलाई-अगस्त (संयुक्तांक) 1961 ई.। सम्पादक—श्रीकृष्णकान्त मिश्र।)

(iv) *Bhavapritanandji—His poetry & Music*—'Indian Nation', Patna 24. Dec., 1966 Ramanath Jha.

(v) *भवप्रीता-संगीत एण्ड ए न्यू ट्रेण्ड इन मैथिली म्यूजिक* : डॉ. उमेश मिश्र स्मारक ग्रन्थ—ले. रमानाथ झा। 1968 ई.

(vi) *बिहार के प्राचीन और अर्वाचीन हिन्दी साहित्य सेवी* (ले. परमानन्द दत्त 'परमार्थी' जयन्ती स्मारक ग्रन्थ, रामलोचन शरणजी की स्वर्ण-जयन्ती एवं पुस्तक भण्डार की रजतजयन्ती; पृ. सं. 678।

(vii) *भवप्रीतानन्द ओझा*, सरदार पण्डा, देवघर। स्फुट रचनाएँ। 1942 ई.

(viii) *भवप्रीतानन्द ओझा सरदार पण्डा* (ले. सुधांशु दत्त द्वारी) साधना (देवघर

कॉलेज पत्रिका, संयुक्तांक, वर्ष 10, 1969 ई.)

(ix) *भवप्रीतानन्द'क संगीत-साधना*—डॉ. मोहनानन्द मिश्र, 'पुष्पाञ्जलि' (मै. मासिक—मार्च-अप्रिल अंक, 1989 ई.)

(x) *स्वदेशवाणी* (मै. साप्ताहिक, देवघर 3 अक्टूबर, 1969 ई.) 'भवप्रीता-विशेषांक' —सम्पादक ओ प्रकाशक—चन्द्रधर पाठक 'आर्य'।

(xi) डॉ. रामदेव झा निज पुस्तकमे, भवप्रीतानन्द ओझा'क उल्लेख भक्त कविवृन्द'क मध्य कएने छथि।

---

# सहायक परिचय

(1) जन्म, आश्विन कृष्ण नवमी 1886 ई.।

(2) वर्द्धमान-कोर्टसँ 1906 ई.मे, 'डिग्री', सरदार पण्डा'क हेतु, हिनका, देल गेल छलनि। मुदा, ई ज्येष्ठमास 1929 ई.मे, सरदार पण्डा'क गद्दी पर समासीन भऽ सकल छला। हिनक 'नाबालिक' रहनें, मध्यावधि मे, कार्यकारी 'पण्डा-प्रधान' नियुक्त होइत रहला। 1917 ई.मे स्व. उमेशानन्द सरदार पण्डा बनि गेल रहथि।

(3) महात्मा गाँधी 1925 ई.सँ 30 ई.'क कालखण्डमे प्रथम वेर देवघर पहुँचल छला। हरिजन-प्रवेश'क तही समयमे प्रयत्न प्रारम्भ भेल रहए।

(4) सैंतीस विघा भूमि राजासँ उपलब्ध भेल छलनि।

(5) 'बृहत् झूमर रसमंजरी' 1933 ई. मे प्रकाशित भेलनि।

(6) 1930 ई.मे गाँधी'क 'नमक सत्याग्रह आन्दोलन' भेल छल; जै पर 'कविता' लिखने छला।

(7) 'आइजक रॉबर्ट उर्फ मुछेलसिंह, पुलिस ऑफिसर. देवघर द्वारा 13, बैशाख 1931 ई.कें 1.48 बजे दुपहरमे, हिनक 'स्वराज्यगान' शीर्षक (झूमर) प्रतिबन्धित भऽ गेल छल; जे 17, भादो, 1944 ई.'क मंगल दिनकें, 2.22 बजे मुक्त भेल।

(8) डॉ. सुधीर कुमार करण *सीमान्त बँगला लोकायन* पुस्तकमे हिनक चर्चा केलनि। *संगीत-संग्रह* (प्रकाशक, रामकृष्ण मिशन आश्रम, देवघर)मे, हिनक उत्कृष्ट झूमर सभ'क प्रकाशन कएल गेल।

(9) 1943 ई.मे, बिहार सरकार'क संस्कृत अध्ययन-अध्यापन के निरीक्षणाध्यक्ष हिनकर प्रशंसा लिखलनि।

(10) 15 अगस्त, 1947 ई.'क 'स्वतन्त्रता-दिवस' पर कविता लिखलनि।

(11) 1953 ई.मे आचार्य विनोवा भावेकें, मन्दिरमे, हरिजन-प्रवेश'क अनुमति देल गेलनि।

(12) पं. रमानाथ झा (मैथिली प्रतिनिधि, साहित्य अकादेमी, दिल्ली) हिनका ऊपर अंग्रेजीमे, दूगोट निबन्ध, 1966 ई. एवं 1968 ई.मे लिखिकए प्रकाशित करवौलनि।

(14) 3 अक्टूबर, 69 ई.मे, स्वदेशवाणी (मैथिली साप्ताहिक) हिनका पर विशेषांक प्रकाशित केलक ओ हिनका 'अभिनवविद्यापति'क उपाधि देलकनि।

(15) 41 वर्ष धरि 'सरदार पण्डा' रहि, 11 मार्च, 1970 ई.केँ शिवलोक' प्रस्थान कऽ देलनि।

(16) 1964 ई.मे, भारतीय नृत्य कला-मन्दिर, पटना'क दिशसँ तत्कालीन शिक्षा मन्त्री'क हाथेँ, लोक-गीत-क्षेत्रमे, दीर्घकालिक निष्ठापूर्ण सेवा-देबा'क चलतेँ, एकगोट 'ताम्रपात्र' पूर्ण सम्मानपूर्वक प्रदान कएल गेल छलनि।

## कवि-द्वारा रचित पुस्तक—

(i) *झूमर रस-मंजरी* ... बंगला भाषा में
(ii) *झूमर रसतरंगिनी* ... बंगला भाषा में
(iii) *झूमर पारिजात* ... बंगला भाषा में
(iv) *बृहत् झूमर रस-मंजरी* ... बंगला भाषा में
(v) *वैद्यनाथ क्षेत्र सर्वस्व* ... बंगला भाषा में

## देवनागरी लिपि में—

(vi) *भवप्रीतानन्द पद्यावली* (झूमर संगीत) देवनागरी लिपि में
(vii) *घैरा-मञ्जूषा* (घैरा-संगीत) देवनागरी लिपि में
(viii) *कमरथुआ* (काँवरिया-संगीत) देवनागरी लिपि में

---

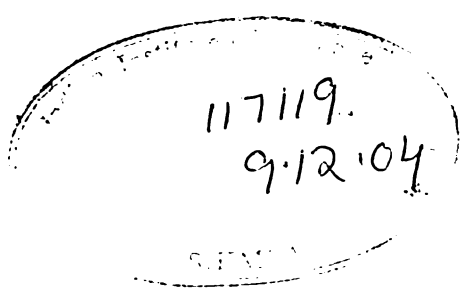

दक्षिण विहार'क मैथिली साहित्य निर्माण कर्त्तालोकनिमे अभिनव विद्यापति कविवर **भवप्रीतानन्द ओझा** (1886 ई. से 1970 ई.) जी'क स्थान वस्तुतः शीर्षस्थानीय छनि। कवि-कोकिल महाकवि विद्यापति'क महेशवाणी ओ नचारी-जेकाँ हिनको झूमर तथा घैरा-संगीत, विहार'क दक्षिणाञ्चल अओर बङ्गभूमि'क पश्चिमाञ्चलमे अत्यधिक लोकप्रिय भऽ गेल अछि। ई दर्जनो पालाबन्दी रचना कऽ गेल छथि। हिनका, 1964 ई.मे भारतीय नृत्य-कला-मन्दिर, पटना'क दिशसँ तत्कालीन शिक्षा मन्त्री हाथेँ, लोकगीत-क्षेत्रमे दीर्घकालिक, निष्ठापूर्ण सेवा-देबा'क कारणें, एकगोट 'ताम्रपत्र' पूर्ण सम्मानपूर्वक प्रदान कएल गेल छलनि। ई, वनवासी'क परम उपेक्षित क्षेत्रमे, आर्य साहित्य'क विशाल सर्जनाद्धारा, ओकरा लोकनि'क भारतीयता ओ देश प्रेमकेँ बरोबरि अक्षुण्ण बनबैत रहला।

ई कविवर, यद्यपि धार्मिक जगत के एकगोट निविष्ट एवं ख्यातिलब्ध साधक रहथि तथापि हिनक जन्म-भेला'क अनन्तरे, निज पितामह शैलजानन्द ओझा हिनक जिह्वा पर वाणी (सरस्वती)'क 'बीजमन्त्र' अंकित कऽ देने रहथिन। फलतः हिनकामे नितान्त बाल्यकालेसँ अप्रतिम कवित्व-प्रतिभा'क विकास होइत गेलनि जे पाछाँ विशाल वटवृक्ष तुल्य वेश पैघ ओ झमटगक भऽ गेल। विहार'क वाराणसी (काशी) वैद्यनाथधाम-सन द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग'क विख्यात वसुन्धरा पर समवतरित ई निर्दम्य दिव्यतेज, समग्र देशमे, निज काव्य-साधना-बलेँ एकगोट लोकोत्तर आभा पसारि देलनि। हिनक झूमर-घैरा-संगीत, नै केवल दर्जनो गायक लोकनि'क गला'क कण्ठहार बनल अपितु कुड़ियो कवि वा रचनाकारकेँ, ऐ दिशामे, आत्म रचनावली उपस्थापित कर क स्पृहणीय प्रेरणा प्रदान केलक। हिनक रचना रीति'क अनुकरण पर, एखनो बहुत कवि-कलाकार, ऐ वनाञ्चल क्षेत्रमे, निज-निज रचना-निर्माण-प्रक्रियामे, पूर्ण सक्रिय ओ तत्पर दृष्टिगोचर होइत छथि। हिनक रचना-निकुंजकेँ देवघरिया, अंगिका किंवा खोड़ठा कहि-कहि, नाना भाँति'क बोलि'क संज्ञा देल जाउक मुदा, जँ ई तीर्थगुरु मैथिल तथा वास्तविक अर्थमे 'अभिनव विद्यापति' रहथि तँ हिनक प्रतिष्ठा मैथिली साहित्य'क इतिहासोमे निश्चित उल्लिखित होइत रहत।

Library IIAS, Shimla
MT 817.231 092 Oj 2 J
00117119

पूज्य चरण सदुपाध्याय जी'क तही लोक-
उजागर केलनि अछि डॉ. रामकिशोर झा 'f
कवि ओ सिद्धहस्त लेखक छथि। ऐ रचना-द्वा
व्यक्तित्व ओ कृतित्व'क एकगोट सर्वाङ्गीण छबि'क विलक्षण झाँकी, शीघ्र परिलक्षित हुअ लगैछ।

ISBN : 81-260-1288-9
मूल्य : पचीस टाका